कुण्डलिया रामायण ॥

दहन अमङ्गल सकल दुख गजमुख सबसुखदानि । अतिगतिरति रघुपतिचरण विघ्नहरनकी बानि ॥ विघ्नहरनकी बानि जानि सज्जन सब गावत । भक्ति मुक्ति वर देव शेष शङ्करसुर ध्यावत ॥ शङ्कर ध्यावत शेष सुर रिपुगण खलजन गहन । कह तुलसिदास शङ्करसुवन भजत भक्त भवभयदहन ॥ १ ॥

दीनदयाल दया करौ दीन जानि शिव मोहिं । सीताराम सनेह उर सहज सन्त गुण होहिं ॥ सहज सन्त गुण होहिं यथाप्रद लाभ दुःखसुख । कर्मविवश जहँ जाउँ तहाँ सियराम कृपारुख । रामकृपारुख नित रहौं जगतजनित संशय हरौ । कह तुलसिदास शङ्कर उमा दीनदयाल दया करौ ॥२॥

रामचरित शतकोटि शेष शारद शिव भाखे । नारद शुक सनकादि वेद कहि बीचहि राखे ॥ बीचहि राखे चरित पार कहि पावत नाहिन । कहि कहि हारे सकल रामयश कहत सिराहिन ॥ नहिं सिराहिं रघुबीरगुण सो तुलसी मनमें डरत । भजन भाव वेदन कहा कहे चरित भवनिधि तरत ॥ ३ ॥

पुत्रयज्ञ नृप कीन जोरि मुनिगण द्विजकुलवर । कह वशिष्ठ भे सिद्ध दीन हवि लै प्रसाद कर ॥ लै प्रसाद कर दीन देहु भामिनि नृप जाई । सुनि दशरथमन हर्ष सकल प्रियनारि बुलाई ॥ नारि बुलाई कौशला केकैयी युग भाग कर । मन आनन्द रानी नृपति दीन्ह सुमित्रहि हाथ धर ॥ ४ ॥

मङ्गलमयो विचित्र द्युति प्रकट भई गृह आनि। ब्रह्म-सच्चिदानन्द उर प्रकट भये सुखखानि॥ प्रकट भये सुखखानि हानि दारिद दुख नाश्यो। देवन लह्यो अनन्द मह्यो मन मोद प्रकाश्यो॥ मह्यो मोद द्विज सकल सन्त सज्जन यश गावत। ब्रह्मादिक सब देव नवग्रह उपचर चलि आवत॥ गावत वर्षत सुमन धन तुलसी कहि जय जय जई। नाक नगर अहिपुर भुवन प्रकट भई मङ्गलगई॥ ५॥

मास भयो शुभवार योगवर नक्षत्र विराजत। तिथि नभ जल महि विमल दिशा विदिशा सब छाजत॥ छाजत सरयू अवध देवगण जय उच्चारत। वर्षत सुमन प्रशंस हंस निजवंस निहारत॥ हारत सतोगुण अगनित प्रकट भये सुख दुख गयो। तुलसी रघुवर प्रकट भे मास एकको दिन भयो॥ ६॥

सुनि भूपति परमानन्द मगन नहिं देह सँभारत। उठे भवन कहँ दौरि बोलि तब गुरुहि प्रचारत॥ गुरुहि प्रचारत चले विप्र सँग लै मुनिनायक। भूत भविष्य वर्त्तमान ज्ञान सब जानन लायक॥ लायक सुत सुनि सगुन के जातकर्म सब विधि कियो। हेम [illegible] हय गय भूपति दियो॥ ७॥

याचक जो जेहि काम ताहि नृप पूछि दिवावत। वृन्द वृन्द वर नारि विमल स्वर सोहिल गावत॥ गावत सोहिल सुनत भूप हँसि हेरि बुलावत। पट भूषण मणिमाल लाल मुख नेहि पहिरावत॥ पहिरावत गज तुरग रथ सर्वस दै दै छाँड़ि हत। पुनि तुलसी [illegible] जहँ भरो [illegible] यत॥ ८॥

पुरी मगन नर नारि चरौ चारिउ प्रसन्न लखि। प्रति गृह गावत गीत [illegible] भरो छवि॥ भरो चौक गजमुक्त [illegible] कन। कुंकुम सुगन्ध भवोर रहेउ भरि [illegible] विदिशि मन॥ दिशा विदिशि [illegible] लयो भासिनि

बहु प्रकटी दुती। रहिताक भूमितल पुष्प भरयो जिमि सुख सो रघुनंदिनी ॥ ९ ॥

रूप कामिनी होइ हुकद सुन्दर सुख जाये। कर्म क्रिया सो करी तोषि याचक पहिराये॥ पहिराये मन मोद चारिसुत दशरथ राजा। जनी पदमहुला दास दासी सब साजा॥ साजा नहर घरन्ह बहु बाजा बहु बाजन लगे। सब कोउ कहत सराहिं भागमाल पुरुषे लगे ॥ १० ॥

सुन्दर सुत पोषनि लगत जननीके काजे। प्रभु धारयो तन मदन दहन सुनि विकार सुहाजे॥ साजे जलगन मलिनन-लिनाइन बकुल पाहुकर। चमत्कृत छवि नवे तेज महिपुर सुरपुरहर॥ सुरपुरधुनि हुहुलावती नृपति राम रघुवंश जय। जय दशरथसुतनन्दन चवनिनरनारि कहत भय ॥ ११ ॥

गृह गृह बजत वधाव नारि नर अवध अनन्दित। चौक कलश प्रतिद्वार लसत सुरतियगण वन्दित॥ वन्दत सुर-गण सुगुरु वन्दिगण विप्रवेदधुनि। भरि भरि मुक्ताथार देखि सुत लाग चखिन गुनि॥ चखिक गान सोहत भवन रामजन्म मङ्गल सजत। नरनारि वारि तन धन सबै सुरपुर जयदुन्दुभि वजत ॥ १२ ॥

नाम धरयो मुनि हेरि राम पुनि भरत लषणवर। शत्रु-घ्रमन शुभनाम दीन मुनि लिखि भूपति कर॥ भूपति रानि-न दीन मगन तनु लहेउ सकल सुख। गान निशान समान धरणि आकाश एक रुख॥ चकटक निरखत सुमनगण मन मलीन खलगण भये। चारि चारु सुन्दर सुवन सुकृत भूप तरुफल भये ॥ १३ ॥

सुन्दर सुतवर गोद मोद भरि मातु दुलारत। निरखि नवल छविसिन्धु सकल तन मन धन वारत॥ वारै तनमन देत भूपको

… आनन्द । शिव सनकादिक ब्रह्म चराहिचरण मनसुख
… । … निज … प्रबन्ध मङ्गलमय मूरति लखत ।
… लभिक तनमिराम नयननि चखत ॥ १४ ॥

… दूध पियत नहिं आजु । रोवत
… नहिं … नजरिको साजु ॥ दृष्ट नजरिको
… ठाने । … सोच उर भयो नीर नयन-
… ॥ … ककसा कौशलहिं हाल दिवावन धायकै ।
… पथ राम सोवावत गायकै ॥ २५ ॥

… पग … अस लगाय । रामचन्द्र-
… चितचकोर ललचाय । चितचकोर ललचाय
… कीन्है । … आगम कहत बोलि कौशल्या
… ॥ कौशल्या गुरु बोलिकै शुभ आसन … करयो
… लाय माथ हाथ शम्भु धारो ॥ २६ ॥

… गुण कहौ जो कछु यामें होय । सब … जानत
… कहत सब कोय ॥ सब कोई परचो कहत बड़े
… । जो मँगिहौ देहौं … सुधाको
… मुधाको भोग जन्म भरि … पाछे ।
… । वचन हँसत मन शङ्कर मातु वचन मुनि … ॥२७॥

… बालक तोर यह बड़ा भागको मूल । याके दर्शन जात
… को शूल ॥ सब अन्तरको शूल हरौ याते सुख पैहौ ।
… बीते सुनौ एक मुनि संग करि देहौ ॥ देहो सुनि
… ब्याह पुनि पानी आई । दशरथ सुवन विवाहि सहित
… आई ॥ २८ ॥

… कर्मन करी सकल खलगण संहारन । महि द्विज
… मन सोच सुर करहिं निवारन ॥ करहिं निवारन दोउ
… । तोरहिं शिवको धनुप सुयश तिहुँपुर

विस्तारी ॥ विस्तारी सुख सम्पदा सुनु कौशल्या तोर सुत। वचन मृषा बोलत नहीं मातु प्रतीति सनेहयुत ॥ १६ ॥

कह्यो कैकयी सुवनको लक्षण सबकर देखि। कौशल्या-सुतभक्त यह मन क्रम वचन विशेखि ॥ मन क्रम वचन विशेषि रामपद प्रीति सुहावन। सोवत जागत ध्यान नाम रसना रसपावन ॥ पावन तिरहुति व्याहि हैं याते सुखसम्पति लहौ। सुयशसिन्धु साँचौ सुवन लक्षुणि रेख आगम कहौ ॥ २० ॥

सुनहु लक्षणकी मातु सुलक्षण सुवन तुम्हारे। निज भाइ नसों प्रीति प्रबल रणके जितवारे ॥ जितवारे बल बाहु गुणनि पूरे सब भाई। राम सङ्ग शुभपुरी तहाँ सब होहिं सगाई ॥ होहिं सगाई जनकपुर जनककन्यका आनिकै। सत्य जानु रानी वचन झूठ न कहौं बखानिकै ॥ २१ ॥

सुनती सब रानी मगन सुख्या यार भराय। लेन कह्यो हँसि कौशला रामहि दीन छुवाय ॥ रामहिं दीन छुवाय हाथ धरि देउ अशीशा। बालक रहु कल्याण डीठि मुठि डारहु खीशा ॥ खीस करहु प्रभु रोग सकल मन्त्रन पढ़ि बानी। बोली डारे सुवन हाथ जोरे सब रानी ॥ २२ ॥

बोल्यो योगी योगनिधि सुनहु कौशलामाय। डीठि मूठि जनखानि अब देहौं सकल बहाय ॥ देहौं सकल बहाय बाल कबहूं नहिं रोई। पलका गोद हिंडोर सुसुख सब थल शिशु सोई ॥ सब थल शिशु सुख रहौ होय नहिं कबहूं रोगी ॥ शृङ्गी शब्द सुनाय चल्यो मन हँसिकरि योगी ॥ २३ ॥

भूपति रानी मन मगन शिशु सब अतुल निहारि। गोद मोद मन गावती राम दुलारि दुलारि ॥ राम दुलारि दुलारि वारि तन मन सब डारें। चौरकर्मको सुदिन बैठि कुलगुरुहि हँकारें ॥

गुरुहि हँकारि विवेक सुफल करि मङ्गलवानी। गावहिं गीत विचित्र सोहिलन भूपति रानी ॥ २४ ॥

सखीके आँगन सकल सुत लिये द्विज पहिराय। बालक कोसलपालके चिरञ्जीव मन भाय ॥ चिरञ्जीव मन भाय देत आशिष बहुभूरी। नृप रानीके सकल सुमन रहे मनु फूले ॥ फूले पितु मातिन ते जगि आनँद पोषे। नारि नगर महि-नगर नारिन मनवाञ्छित धन तोषे ॥ २५ ॥

आँगन रानी चलत गिरावत चारो सुत कर लाय। गिरत परत उठि चलत हँसत पुनि रोवत रहत रिसाय ॥ रोवत रहत रिसाय आपनो टोपी डारें। कुन्तलजाल बिथारि नयन भरि नीर निहारें ॥ नीर निहारें हँसत सुनत मातु तोतरि बानी। भजन भवनको पठि धरत ले आँगन रानी ॥ २६ ॥

भूप हर्षि करवायो रुचिसों कर्णवेध उपवीत। छोटे धनुष बाण कर लीन्हे समुझन लागे नीत ॥ समुझन लागे नीति वेद विद्या गुरु दीन्हो। धर्म कर्म गति अगति स्मृति श्रुतिमग जेहि कीन्हो ॥ श्रुतिमग जेहि कीन्हो जगत जाहि सिखायें सब सिख्यो। धर्म प्रकट जग करनको परब्रह्म नृप घर बस्यो ॥ २७ ॥

जाके नामप्रभावते जन्ममरणदुख जाय। वेद शेष शारद शिवा शिवको अगम दिखाय ॥ शिवको अगम देखाय भेद ब्रह्महु नहिं पायो। भक्तनके हित सोय कौशला उरमहँ आयो ॥ कौशल्या के उर बसे दशरथसुत कहि गावते। काम क्रोध मद लोभ दुख नाशै नामप्रभावते ॥ २८ ॥

विश्वामित्र महाश्रमय विपिन बसैं मुनि सङ्ग। योगयज्ञ होमादि व्रत करत दनुज खल भङ्ग ॥ करत दनुज खल भङ्ग हृदय मुनि मन्त्र विचारयो। हरि अवतारे गुनवध हरन सुखि-

भारन भारयो ॥ भारयो सुख उपजायकै हरि होई नयननि विसय। सरयूतरि स्नान करि गे दरबार महाविस्मय ॥ २९ ॥

सुनि राजा सहसा उठे मिले धाय परि पाय। लै आये भीतर भवन शुभ आसन बैठाय॥ शुभ आसन बैठाय नारि युत मुनिवर पूजे। उदय भयो निज भाग मोहि सम सुकृत न दूजे। दूजे आपुन जानिये पदरजको सेवक सदा। कहिये कृपा करि काज निज करहुं तुरत मङ्गलप्रदा ॥ ३० ॥

सुनि भूपति द्विज मिष गाय महिशोच निवारण। मम आश्रय खल दनुज करत उतपात अपारन॥ पार न पावहि मुनि विकल रयन दिवस सङ्कट परे। धर्मजात श्रुतिसेतु सकल वह खल हरे॥ हरै विपति दारुण जवै राम लषण जो देहु मति। इनकहँ यश इनको सुफल गुनहु न मन सुनि भूमिपति ॥ ३१ ॥

सुनते राजा मूर्छि गो कमलवदन कुम्हिलान। नाहक मुनि दाहयो हृदय माँगहि जीवन प्रान॥ माँगहि जीवन प्राण राम लक्ष्मण मिति देऊ। जाहि निरखि रहै नयन पलक निरखन नहि तेऊ। लेउ याचक पालक सवै सुनि मुनि मनमें गुणि कहै। माँगहु तन धन धेनु महि राम दिये किमि तनु रहै ॥ ३२ ॥

कह वशिष्ठ राजा सुनहु सुत मुनिपतिकहँ देहु। इनको कृपा कृपालको कुशल आय हैं गेहु॥ कुशल आय हैं गेहु दनुज सब करहि संहारन। सिद्ध शुद्ध करि होम सुयश जगमें विस्तारन॥ विस्तारन मङ्गल सुवन आन भाँति नहिं मन गुनहु। सौंपहु विश्वामित्रको कह वशिष्ठ भूपति सुनहु ॥ ३३ ॥

गुरु वशिष्ठके वचनको कैसे तजैं भुपाल। राम लक्षणको बोलिकै सौंपे मुनिहि कृपाल॥ सौंपे मुनिहि कृपाल शीश सब

सभा नवायो। कौशिक दियो अशीश मनहुं जप तपफल पायो॥ पथ वहाय वारिजनयन उठे मौन धरि भवनको। उत्तर कछु न मुख कढ्यो गुरु वशिष्ठके वचनको॥ ३४॥

वेदमन्त्र दै सकल पढ़ शत्रुनके मारण। नींद भूख अरु प्यास त्रास सब अशुभनिवारण॥ अशुभनिवारण पन्थ सुपथ मङ्गलमय सुन्दर। बड़ो भाग निज समुझि करत आयसु प्रभु सादर॥ सादर पूछत वेदगति मृग तरु भूधर भूमितल। पाठ करावत गुण कहत वेदमन्त्र दै दै सकल॥ ३५॥

मार्यो वीचहि ताड़का एक बाण श्रीराम। मुनि चितवत चकृत खड़े गई हर्षि सुरधाम॥ गई हर्षि सुरधाम रामको लगि मन चीन्हे। आश्रम निज प्रभु पूछि यज्ञ आरम्भित कीन्हे॥ कीन्हे यज्ञ अरम्भ प्रभु धनु धरि बाण सुधारिकै। खल सुबाहु मारीच सँग धायो धूम निहारिकै॥ ३६॥

दल मारे सब लषण अनलशर जारि सुबाहै। प्रभु मारीच-हि उदधि पारकरि बाण चलाहै॥ बाण चलाहै अफल सुफल करि होमविधान। वर्षत सुर शुभ कुसुम प्रशंसत कृपानि-धान॥ कृपानिधानहि जानिकै यज्ञभाग दै अमियफल। धनुमखलख जनकके चले राम ऋषि त्यागि थल॥ ३७॥

गौतम ऋषिकी भामिनी तनपषाण जेहि ठौर। गये लषण रघुवंशमणि मुनि कौशिक शिरमौर॥ मुनि कौशिक शिर-मौर पूछि बूझो सब कारण। दारुण दाह विचारि पाँव धरि कीन्ह निवारण॥ कीन निवारण पाँयकी जय कहि उठि धुनि दामिनी। तुलसी विनती मृदु करत गौतम ऋषिकी भामिनी॥ ३८॥

जय जय जगदातार प्रभु हरण घोर महिभार। दीनवन्धु दानव दलन सब गुण रूप उदार॥ सब गुण रूप उदार भजत

शिव शुक सनकादी। पावत थाह न चरित सम्भु अन्तहु नहिं आदी॥ आदि अन्त जड़ गौतमनारि भई शाप पापमई। नाह परसि पदकमल राम सुकृत मन्दिर भई॥ ३९॥

शापपापको दुर्ग कठिन रचि कर्षन राख्यो। मन बुधि चित्त हम अहंकार नयपशुनि चाख्यो॥ वस्तु सकल मतराशि काम मद दम्भ सुभटवर। सुकृत सत्यरण जीति दर्शको अमल सवै तन॥ तन वर सुरगुण गाय प्रभु रजवतह सज्ज आनत गहि। रिपुहि सहित मन कर्म वच शाप पापको दुर्ग दहि॥ ४०॥

अखिलन फलदातार देवतरुवर तनकारन। कर्मज्ञानविसल लाग कृपाकरि कौन निवारन॥ कौन निवारन पाप भई मुनि घरकी भामिनि। सब वर दीन्हि सोहि चरणरति दिन अरु यामिनि॥ दिन अरु यामिनि रत रहौं चरण हरण महि-भार हो। तुलसिदास वर पाय कहि जय रघुपति दाता रहो॥ ४१॥

लखि गति सुर मुनि हर्षि वर्षि घनसुमन सराहत। नाथ-रणघरण समर्थ घोर भवसिन्धु निवाहत॥ सिन्धु निवाहत अग-जनुगण दरदायक लायक। कुमति कुकर्म कुरीति कपट कलि-कलुषनशायक॥ कलुषनशायक राम प्रभु तुलसिदास भजि तजि हरष। मन वच डर कर्षनि भजहु लखि गति सुर मुनिजन हरष॥ ४२

चले हर्षि मुनि सङ्ग रामलषण मगमाहीं। वन उपवन मृग विहँग विटप लखि पूंछत जाहीं॥ पूंछत मुनि सब कहत न्हाय सुरसरि रघुराई। कहत कथा इतिहास जनकपुर पहुंचे जाई॥ पहुंचे प्रभुपुर निकट तजि बाग तड़ागनि अलि भले। खग मृग मधुप समाजयुत जनकनगर देखन चले॥ ४३॥

वापी सुभग सरोजयुत सरवर विविध मराल। मानौ

[illegible] मानसर शोभा देत विशाल॥ शोभा देत विशाल दिगर, जलसुधा सपूरे। मणिगण पुरट बँधान नारिनर मज्जत भूरे॥ मज्जत सुर मुनि आय जनु पर्व्व मानसर पाय जग। लहत चारिफलराशि जलजापी बापी सर सुभग॥ ४४॥

सुन्दर चहुँ दिशि बाग बन कुसुमित फलित अपार। जनु सुरधरकी वाटिका लसी सहित परिवार। लसी सहित परिवार कोरकोकिलकुल गाजे। पथिकन लेत बुलाय विविध विधि पवन समाजे॥ पवन समाजे सुरभि सुख जनु बसन्त ऋतु गृह सघन। कह तुलसिदास प्रभुपुर निरखि सुन्दर चहुं दिशि बाग बन॥ ४५॥

परे नृपति सजि सेन मत्त गज रथ हय राजत। नृत्य गान सुख थान सुभग दुन्दुभि वर बाजत॥ बाजत बन्दी सूत यूथ यूथनि भट गाजें। वनितादिक शुभ गान करहिं सुरतिय लखि लाजें॥ लाजे लखि अमरावती सुरपुरको शोभा हरे। विविध वृन्द इन्द्रादि सुर सेन साजि जनपुर परे॥ ४६॥

धवल धाम चित्रनिखचित कलश मनहुँ रविज्योति॥ जगमगात खच्यानि पुरट प्रकट दामिनी होति प्रकट दामिनी होति गोनि मणि झलक झरोखनि। भामिनि भूपर मनत मनहुं सुरतियतन धोखनि॥ धोखनि तन सुरधाम सब थाप धाम सब थल नचति। जनकनगर छविमय चरण हाट बाट मणिमय खचति॥ ४७॥

सुनि मदन न नरपाल सुपथ आगमन अनन्दित। भूसुरवर [illegible] जानि साथ मुनिपद शिर वन्दित॥ वन्दित नृपहि [illegible] मिले कौशिक मुनिनायक। भये विदेह विदेह निरखि दोउ सुत सब लायक॥ सब लायक रघुनाथ कहि नरपति

निरखि विशालको। देखि भानुकुलभूषणहि तनमनवश नर-पालको ॥ ४८ ॥

विवशराव भये प्रेमरङ्ग निरखत तनशोभा। लोचन भये चकोर रामसुखशशिरस लोभा॥ लोभा सकल समाज परस्पर चाहत रामै। धीरज धरि नृप कहत वूभि मुनि सब गुणधामै। सब गुण तेज प्रतापमय काके सुरतरुफल भये। कहिय कृपाकरि कृपानिधि ये वालक काके भये ॥ ४९ ॥

कै मुनिमणि नृपमणि किधौं योग यज्ञफल आहि। गण-पति पशुपति लोकपति सब संशय मनमाहि॥ मन संशय मनमाँहि ज्ञानगति गिराविनाशी। बरवस दूनवश होत तजत सुखरस अविनाशी॥ अविनाशी अवलोकिये युगलरूप निज सँगरधौ। कहिय प्रकट सन्देह मन कै मुनिमणि नृपमणि किधौ ॥ ५०

जपतप व्रतरतधर्म्म जगत जहँलगि शुभकर्मनि। दयाक्ष-मा।इकनेमक्रिया आचार चार गनि॥ चार वेद सव भेदयोग विधि साधत योगी। आतम अनुभवरूप ब्रह्मसुख पावत भोगी॥ पावत भोगी योगवश सो प्रकटत कवहुँक हिये। सो फल मुनिनायक किधौं जप तपवलने प्रकट किये। ५१ ॥

अलख अगोचर रूप हरि जो वरणत श्रुति शेष। जाके हित विधि देव मुनि ध्यावत गणप महेश॥ ध्यावत गणप महेश योग यतन नहिं पावत। जपतपव्रत करत्यै अर्घ्य धन हृदय वसावत॥ हृदय वसत वहुरूप जव सकल सिद्धि सव सुख भरि। प्रकटो कौन सोइ रूप मुनि अलख अगोचर भूपहरि॥ ५२ ॥

कीधौं मदन विशेष सँग मुनिनायक वश कौन। ऋषि तपतेजप्रतापते सेवत पदलवलीन॥ सेवत पदलवलीन अशुको वैर सँभारयो। चाहत आपु सहाय मन्त्र मनमाँक

[illegible]। [illegible] नैनानसों युगुलरूपछवि देखिके
बार बार पुलकित कहैं जनि तुम मदन विशेखिये। ५३

सहज ज्ञान वैराग्यसों रह्योरहत मन मोर। ब्रह्म सच्चिद-
नन्द्रानन्द निरमल चन्द्र चकोर॥ चितवत चन्द्र चकोररूप हरि
[illegible] राखो। निरखत बालक नयन तौन सुख जात न
भाखो॥ जात न जानो ब्रह्मसुख ऊझो प्रेम अनुरागसों। सो मन
[illegible] न ज्ञान विरागसों॥ ५४

सुनि नृपके प्रिय वचन पुलकि कहै मुनिराज। जो कछु
[illegible] शा तुमहि विदित सब काज॥ तुमहि
[illegible] राज दशरथके जाये। मखहित आने
[illegible] नगर दिखावे॥ नगर दिखाये आपुने राम
[illegible] अनुसार भये। मन्दिरयुक्त [illegible] सुन्दर सुनत भूप आनँद
[illegible]। ५५॥

भाग जानि अनुराग नृप चले लिवाय निकेत। आदर
[illegible]श्रम जानिके पूजे प्रेम समेत॥ पूजे प्रेम समेत निरखि
[illegible] नारि कुमारी। रघुकुलभूषण देखि सराहत सुकृत
[illegible]॥ सुकृतपुञ्ज राजा जनक कहि पुर नर पद लागहीं।
[illegible] जाने काके सुकृत भाग भाग अनुरागहीं॥ ५६॥

[illegible] श्रीरामछवि [illegible] घनश्याम।
[illegible] गोर [illegible] दामिनि दरश ललाम॥ दामिनि
[illegible] छवि सोहैं। जनकनगर नरनारि
[illegible] छवि मोहैं॥ मोहैं मन मोहैं सकल को है पाव
[illegible]। तुलसिदास वैननि कहै कमलनयन श्रीराम-
[illegible]॥ ५७

[illegible] युगल अनूप। श्यामगौर-
[illegible] मदन युगरूप॥ मनहु मदन युगरूप विरचि

विधि रचना बनाते। निज सूरतके एक जनकपुर देखन आये॥ देखन आये कुवँर दोउ विधि रचि राखोकाज सो। सियवरयोग्य संयोग यह सतुलित देखु सहि आज सो॥ ५८॥

अपर कवन गति सत्त्व है एक कठिन हठिकर्म। प्रण विदेहको धनुष यह उठै न गिरिसमधर्म॥ उठै न गिरिते गरु वाल सुदु अतिसुकुमारे। सो असमञ्जस कठिन मेटि को योग सँवारे। साँवर कुवँर प्रतापवल सुनिगण कहत सुसत्य हैं। अब प्रताप विदेहको पुण्य भञ्जि धनु सत्य हैं॥ ५९

आयसु पाय मुनीशको भोर लषण रघुराय। सुमनहेत उपवन गये श्यामगौर दोउ भाय॥ श्यामगौर दोउभाय जानकी जाय निहारे। गिरिजापूजन हेत मध्य उपवन पग धारे॥ पग धारे नयननि लखे राजकुमार निहारिकै। सो सुख तुलसी कहै किमि कहि न जाय सुख चारिकै॥ ६०॥

रामसियाको मिलनसुख वेद न पावहि पार। प्रीति प्रेमपर-मिति सुमिति प्रीतमगति रतिसार॥ गतिरतिसार विचार कहत यदि रहत विचारी। सो मैं कहौं विवेक कवन मति गति संसारी॥ मतिगति शङ्कर शारदा कहि न सकत सुखसरसको। तुलसिदास केहि विधि कहै रामसिया सुखदरशको॥ ६१॥

पूजि विविध विधि पाँय परि विनती सोय सुनाय। आदि अन्त लयलोक ह्, स्ववशविहारिणि माय॥ स्ववशविहारिणि माय मनोरथ जानति हौंके। प्रकट प्रभाव प्रताप अगम वरदान शचीके॥ शची शारदा हरितिया सेय सेय सब सुखभरि। जय जय जय गिरिपतिसुता विविध विनय सियपायँ परि॥ ६२

वचन प्रसाद लुपाय सिय हर्षि चली निजधाम। सो छवि हृदय निरूपकरि गुरुपहँ गवने राम॥ गुरुपहँ गवने राम जानकी भवन सिधाईं। सुमन दिये सुनि हाथ रोम कहि कथा

सुनाई॥ कथा सुहाई सुनत मुनि सतानन्द आवत भये। जनकविनय कहि मोद लहि रामलषण आशिष दये॥ ६३॥

आजु भूप बनि बनि चले रङ्गभूमि शिरमौर। पावक पानी पवन महि सुर नर मुनि इकठौर॥ सुरनर मुनि इकठौर आपुको जनक बुलायो। कौतुक देखन चलिय सतानँद वचन सुनायो॥ वचन कहे मुनि रामसो चलहु तात अवसर खरो। काको यश दशदिशि विदित आजु भूप बनि बनि चले॥ ६४॥

राम लषण कौशिक सहित सतानन्द भगवान। चले रङ्गभूमिहि सकल मङ्गलमोदनिधान॥ मङ्गलमोदनिधान नारिनर गृह तजि धाये। नगर बगरमें बात भूपसुत देखन आये॥ देखि जनक परि पगनि पूरि प्रेम आनँद रहित। आसन आदर देयकरि रामलषण कौशिक सहित॥ ६५॥

रामरूप रूप देखिके द्युति सुखकी भइ चौन। रवि-प्रताप निरखत मनो उडुगनज्योति मलीन॥ उडुगनज्योति मलीन दीन बलहीन विराजत। जड़खलदल दलमोड साधु सुर सज्जन गाजत॥ गाजत दुन्दुभि सुमन सुर मगन नारिनर पेखिके। थकित चकित पल नहिं लगत रामरूप रूप देखिके॥ ६६॥

जो जाके उर भावना देख्यो रामशरीर। कोउ शिशु कोउ प्रभु मित्र धरि स्वामि सखा बलवीर॥ स्वामि सखा बलवीर धीर धरि प्रभुहि निहारैं। वर्षत सुर शुभकुसुम देव मुनि जयति उचारैं॥ जयति उचारि समाज लखि जनक बुलाई जानकी। सतानन्द आनी तुरत खानि सकल कल्यानकी॥ ६७

मिथिलापुरके नारिनर सिय रघुवीर निहारि। विनती करहिं विरञ्चिसन अञ्चल अञ्जलि धारि॥ अञ्चल अञ्जलि धारि देहु वरदान विधाता। राम जानकी योग्य जोरि मिल-

कइ यह नाता। नात जुरै नृपप्रण टरै भूपति जाय लजाय घर। यह संयोग विचारि कहि मिथिलापुरके नारिनर ॥ ६८ ॥

माल जलज युग हाथ अतुल छवि सिय पग धारी। जगत-जननि सुखखानि निरखि मोहे नरनारी॥ नारि सख्य वर जानकी रघुवर पद अनुराग हिय। देखत सुर नर मुनि मगन कीन्हे नयननिमेख सिय॥ त्यागि सकुच रामहि लखे नयन मूँदि छवि हृदय भरि। रङ्गभूमि सिय पग धरे जलज माल युग हाथ धरि॥ ६९ ॥

जनक बोलि बन्दी सकल कह्यो कहौ प्रण जाय। देव दनुज महिपति मनुज सबको देहु सुनाय॥ सबको देहु सुनाय भाट दश सहस सिधाये। चहुँ दिशि हाथ पसारि सुनहु भूपति चित लाये॥ चित लाये प्रण जनकको धनुष धर्‍यो यह रङ्गथल। कर उठाय भञ्जे नृपति वरे जानकी ताहि पल॥ ७० ॥

हरिगिरिते गरु जानिये कमठपृष्ठते खोर। महिसँग रच्यो विरञ्चि जनु सकल वज्र तनतोर॥ सकल वज्रतन तोरि मोरि मुरि गये दशानन। बाणासुरसे सुभट भये भञ्जित कहु जानन॥ जान न कोउ याको मरम शिवहि छाँड़ि को तानिये। निजबल हृदय विचारिके हरगिरिते गरु जानिये॥ ७१ ॥

नृपसमाज प्रण कहत हौं रेखा वचन खँचाय। रङ्क राज शिरताज सोइ लै है धनुष उठाय॥ लैहै धनुष उठाय जगत-महँ कीरति होई। जयमाला उर डारि जानकी व्याहै सोई॥ सोइ धनु धरि बल समुझि निज सुखमें कारिख नहिं लहौं। वीर धीर धनु सो गहै नृपसमाजमैं प्रण कहौं॥ ७२ ॥

नहिं छीवै कर धनुष ये सबको कहौं बुझाय। जिन भूपन रण मण्डिके रिपुबल देखि भगाय॥ रिपुबल देखि भगाय

[illegible] न जाहिं। परति [illegible] परधन हेत देत शठ हठ-
[illegible] के मनताम पातक वये।
[illegible] कर प्रभुन [illegible] ॥ ७३ ॥

[illegible] महिनाए। प्रजादुख
[illegible] नेहु [illegible] देव
[illegible] जानहिं। श्रोभक्रो वेद शास्त्र वेदको पद्य न जानहिं॥
[illegible] मात न पितु धरम करैं [illegible] पातक करैं। कारिख
[illegible] लगावहीं ऐसे नृप धनु ना धरैं ॥ ७४ ॥

[illegible] नृप धनु ना गहो मानहु वचन प्रतीति। पुर वेरहि
[illegible] राजहि नहीं सभीति॥ राजहि नहीं सभीत
[illegible] चित तोरै। पातक बाँधे सेतु पुख्यपरि सर वृति
[illegible]॥ मान मर्दि द्विग धन हरै तिय बालक बन कुल दहौ।
[illegible] पकारि पसारि कर ऐसे नृप धनु ना गहो॥ ७५ ॥

समुझि भूप धनुषहि धरो निजकुलबलदल देखि।
मातु ओर पितु ओर है धर्महि तजे विशेषि॥ धर्महि तजे
विशेषि [illegible] लोक न जाको। शत्रु समर बलवन्त तेग
[illegible] नहि जाको॥ जाको कीरति चन्द्रसी जगत उजेरो नहि
[illegible]। भाट कहत प्रण खाँचिके समुझि भूप धनुषहि
धरो॥ ७६ ॥

धनुष आँगुरी जनि छुयो बल कुल आपु निहारि। सत्य
मुक्त त्यागि हृदय कहत असत्य विचारि॥ कहत असत्य
विचारि नारिवध ब्राह्मण कीन्हो। आगतको सङ्कल्पि ऐंचि
द्विज नृपते लीन्हो॥ द्विजसुख दरशन करि भरयो दानि-
शिरोमणि यश लियो। वदन रदन मसि लागि है धनुष आँगुरी
जनि छुयो। ७७ ॥

[illegible] समान नरेश सो धरै भूमिको भार। जाको भानु

[illegible]नको तेज [illegible] [illegible] तेज प्रताप [illegible] कुल कीरति भारी। [illegible] दुतिवन्त [illegible] [illegible] अधिकारी॥ [illegible] अधिकारी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। सो धनु छुवै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सो॥ ७८॥

यहि प्रकारके रूप धर त्रिपुरनाशक परचण्ड॥ जाके सत्य प्रतापकी ध्वजा दीपनवखण्ड॥ ध्वजा दीप नव खण्ड भूप हरि चन्दसो होई। पृथु रघुवान दिलीप सगर अंशुमान सो कोई॥ क्षत्रिय यानि सुगाधिसे विश्वेशरीच रूप उच्चरै। वार वार प्रण उच्चरौं यहि प्रकारके धनु धरै॥ ७९॥

कीनारायण धनु धरैं जाको प्रवल प्रताप। धरयो मेरु मन्दर मही मथेउ सिन्धु करि दाप॥ मथे सिन्धु करि दाप प्रवलहिरण्याक्षहि मारयो। सुरमधुकैटभ वधन सुयश जगमें विस्तारयो॥ विविध भांतिवसुधा सकल तुलसी प्रतिपालन करैं। दूसो होय रूपरूप धरि सो नारायण धनु धरैं॥ ८०॥

विधि समान पर चण्ड सो आयोहोय समाज। ज्यहि जगकी रचना करि सरिसर गिरि गजराज॥ सरि सर गिरिगजराज समुद्र सातहु जिन बांधे। ऊंच नीच जग सृष्टि प्रवल वलते ज्यहि साधे॥ साधि वेद चारौ मुखनि रचो सकल ब्रह्माण्डसो। यह कोदण्ड सोई धरै विधि समान परचण्डसो॥ ८१॥

कीधौं शङ्कर धनु धरै ज्यहि विष कीनो पान। त्रिपुर दनुज दाहन जगत हतो एकही बान॥ हतो एकही बान मदन तन रिसमें जारयो। चन्द गगन शिर धरैं छत्र सूरज [illegible] नारयो॥ मारयो दुख सब जगतको जगत सबै पतनैं हरैं। आयोजो रूप रूप धरि कीधुनि शङ्कर धनु धरैं॥ ८२॥

गणनायक सो होय जो सो धनु धरै प्रमान। जाको पूजै प्रथम सुर विघ्न हरणकीवान॥ विघ्न हरणकीवान ध्यान हरि

व्रत धर्म सुकर्मनि। अस्त्र शस्त्रकी हारि रूप द्युति लाज काज गनि॥ लाज काज परगाज धरि राजनि धनु कर सो छियो। बीते बीते सब भये धनु धन सबको हरि लियो॥ ८८॥

गाजि गाजि धनुकर धरयो लाजि लाजिगेभाजि। साजिसाजि बल दल सबै राजा राज समाजि॥ राजा राज समाज भये सुख शोषन लायक। सम्पति सबै गँवाय करयो शङ्कर धनुधायक॥ धायक आसन परगये जनुतनबल धनु छलि हरयो। लाजि लाजि बैठे सकल गाजि गाजि कर धनु धरयो॥ ८९॥

धनु सुमेरते गरु भयो उठै न कोटि उपाय। तिल न टरै भूपति टरैं धरैं अरैं लपटाय॥ धरैं अरैं लपटाय जायँगड़ि अधिक धरामें। जन्यो शेषके शीश ईश जनु चढ़यो कलामें॥ कलारूप कैलासको धरयो रूप धनुको लयो। उदय अस्त-गिरि सार धर धनु सुमेरते गरु भयो॥ ९०॥

क्रोध वचन बोले जनक नृप बल पौरुष देखि। प्रण प्रमाण देखन सबै आये भूप विशेखि॥ आये भूप विशेखि मनुज सुर असुर सभामें। तिल भरि सकैं न टारि शंभु धनु धरयो धरामें॥ धरा नछूटी धनुषते बल न कछो भूपति तनक। वीर धीर धरणी नहीं क्रोध वचन बोले जनक॥ ९१॥

प्रण हमार मिथ्याभयो जाहु सकल नृप धाम। विधि नर च्यो वै देहि वर पुरुष न कोऊ वाम॥ पुरुष न कोऊजान तो तौ प्रण यह धरतो कहा। कन्या रही कुमारी यह अर्द्ध हास्य जगमेंमहा॥ हास्य भई वसुधा सकल भूपहीन सब जगभयो। जनक सभामें कह वचन प्रण हमार मिथ्या भयो॥ ९२॥

लषण लालको लालमुख तुले वदनके नैन। फरके अधर प्रलापको नहया भये इतनैन॥ आप तो कटु वचन बोरि

...मे ...ठि ठाढे। करुणा निधिको घोर वचन बोले रिस बाढे॥ ...के रिस ... सुनु जनक वचन कह्यो रघुवंश रुख। राम ... महँ लक्ष्मण ताल कह् लाल मुख। ९३॥

कमलाकुल ...रौं धरौं यह ...सारथ कौन। प्रभु ...पाऊं तनक धरौं चौदहौभौन॥ धरौं चौदहौभौन ...नौ नट नट पट फोरौं। ...ठ उथारिसमुद वसुधा ...वोरौं॥ बलधा बोरौं सकुद्में समुद्रारसातलमें भरौं। ...श ...रि महि...जि कहा धनुष जीरण धरौं॥ ९४॥

...हि उठाउँ धनुष यह जो प्रभु आयसु होय। दिग्गज चारि सकम करिमहीधरन ...। महीधरनपुनि ...चोदहधरि ...। ...गिरि ... कैलास धनुष ...र ...॥ तानौ सकल समाज नृप चढि ...हिमार कह। धाय सहरा योजनमही सहित उठा वों धनुष यह॥ ९५॥

...नक ...ये सकुचे सहमिडरे सकल महिपाल। दिग्गज ...न कुटिगो भयते दिशि यमकाल॥ भयते दिशि यम ...नकी हिय हर्षानो। गुरु रघुपति मन तोष कह्यो ...र मुदु वानो॥ महि...पतिप्रण जनकके सूरजके मन सुख भयो। सभा सशंक प्रमाण सुनि जनक शोच सकुच्यो ...॥ ९६॥

कौशिक मुनि आयसुदयो सुनहु राम रघुवीर। धनुष ...हु वाम कर हरहु जनककी पोर॥ हरहु जकनको ...र सभाको शोच निवारो। सुर सज्जन सुख लहहि ...सु...निय ...॥ ...रो ...ख महिपाल सब ज्यहि ...न ...नो ...यो। सोधनु ...रो मृणाल इव कौशिक ...नि आयसुदि...॥ ९७॥

करि प्रणाम रघुवंश मणि उठे यथा मृगराज। आय-सु शीश जोरि कर सुषमा छवि शिरताज॥ सुषमा छवि शिरताज संचते चले गोसांई। पुर जन पुण्यसँभारि सँभारि देव दुन्दुभि बजाई॥ दुन्दुभि बाजीं अति घनी बन्दीजन धन्य धन्य भनि। मध्य वेदिका पर गये करि प्रणाम रघुवंशमनि॥ ९८॥

पटकत धनु लक्ष्मण लख्यो जान्यो प्रभु मन बात। कह्यो धरणि धारौ सबै सजगहूजिये गात॥ सजगहूजिये गात धनुष कौधकादरेरो। जो महि चलौतौ सृष्टि बिकलता सबको हेरो॥ हेरानैं रघुवंशमणि लेत धनुष मनमैं लखो। लटकत महौ संभारियो पटकत धनु लक्ष्मण लख्यो॥ ९९॥

वाम अंगूठा पांयदवि वाम हाथ गहलीन। दमक दामिनी ज्यों करै सबके नयन मलीन॥ सबके नयन मलीन खैंचि कीनो नभनाई। शब्द रह्यो ब्रह्मांड खण्ड ह्वै धर्यो गोसांई॥ धर्यो गोसांई शंभु धनु शब्द सुने योगी जगे। खण्ड खण्ड धनु तन भयो वाम अंगूठारे लगे॥ १००॥

शिव शिव वृषभ पुकारई धनुष शब्द सुनि घोर। दिग्गज दिग्पालन भयो हृदय कम्प अति जोर॥ हृदय कम्प अति जोर कम्प कैलास ईशथल। शिव शिर सुर सरि धार उछलि आकाश गयो जल॥ गयो सुजल आकाश-थल उमा गणेश विचारई। कहा भयो कैसो भयो शिव शिव वृषभ पुकारई॥ १०१॥

जय जय जय रघुवंश मणि सुर फूलन वर्षाय। वेद विप्र वन्दी विरद नारी मङ्गल गाय॥ नारी मङ्गल गाय सिया जयमाल उठाई। शोभित प्रभु उर मध्य विश्व कीरति

जनुड़ाई ॥ कीरति गावहि सिद्ध मुनि बल प्रताप छवि रूप भनि । सतानन्द आनन्द कइ जय जय जय रघुवंश मनि ॥ १०२ ॥

नृपगण भये मलीन सब सन्त भये आनन्द । जनक शोच संकट गयो सिया मातु सुख वृन्द ॥ सिया मातु सुख वृन्द निछावरि मणिगणदेहीं । रामसियाछवि देखि प्रेम गण कौन न केहीं ॥ कौन न केहीं दान सब समय शंभु धनु टूट जग । तुलसिदास संकट गये नृप मन भये मलीन सब ॥ १०३ ॥

सदा मोद मिथिला पुरी राम कियो धनुभङ्ग । खल मलीन सज्जन सुखद सुरसु सुमन शुभरङ्ग ॥ सुरसु सुमन शुभरङ्ग कण्ट भूपनि मन भावे । लक्ष्मण उठे सक्रोध राम मारन बचि रावे ॥ बचि राखे रघुबीर नृपनिय प्रकटीं जहुलीदूरी । राम सिया जोरी निरखि सदा मोद मिथिला-पुरी ॥ १०४ ॥

कर कुठार परशु रामके आवे सुनि धनु भङ्ग । गौर रूप अनुरूप शिवजटा भस्म सर्वङ्ग ॥ जटा भस्म सर्वङ्ग देखि सकुचे सब राजा । लागे करन प्रणाम काल निज समुझि समाजा ॥ समुझि समाज पिनाक लखि कहे वचन धरि कामके । कहि तोरयो तोल्यो तुरत कर कुठार परशु रामके ॥ १०५ ॥

तोरयो धनु रघु वंश मणि जाको प्रबल प्रताप । हानि कहा सब रावरी कहिय प्रकट करि आप ॥ कहिय प्रकट करि आप देव द्विजवरकी नाई । पूजिय मानीय तुम्हें आपनी बड़ बड़ाई ॥ बड़बड़ाई तबहिं जगनाथ विप्र पद पूजि भनि । देह आशिषाप्रेमसों धनु तोरयो रघुवंश मणि ॥ १०६ ॥

काल वश्य बोलत कहा गुरुको धनुष विहंड। विप्रन ऐसोवात सुनु नृप कुल शिरको खंड॥ नृप कुल शिरको खंड परशु करतो तीक्षण धारा। धनु ज्यहितोरयो आजुतासु सुनकाटन दारा॥ काटनवारा परशु यह ज्यहि काटे भूपति महा। त्यहि समेत रामहि हतौं काल वश्य बोलत कहा॥ १०७॥

भूपति मिले नखेतमें तुम्हैं विप्र कुल देव। हते तुम्हारे छनि गयेते द्विज पद दिन सेव॥ ते द्विज पद दिन सेव जहं धर्म नते होने। ते तुम काटे परशु क्रूर कपटी जड़ दोने॥ जड़ दोने नृप तुम हते पाप राशि नहिं चेतमें। ताते बाढ़े भवनमें भूपति मिले नखेतमें॥ १०८॥

क्षत्र विहीनी महिकरी परशु बार इकवीस। सो न विलोकि त्यहि बाल जड़ तुरत जाइहै खीस॥ तुरत जाइहै खीस वचन मुख बोलु सँभारे। गुरु गुनही यो मौन ताहि तू पीछे डारे॥ पाछे वचहुन कालके बालक लखि कहि बर टरी। परशु धार ज्यहि काटिहौं क्षत्र विहीनी महिकरी॥ १०९॥

द्विज कुल के नाते डरौं सुनहु विप्र सत भाव। नत चलो तुलको सकल लेहुँ तुरत अवदाव॥ लेहुँ तुरत अवदाव परशु धनु भूमि गिराऊँ। धर्मबड़ो रखवार आरि द्विजपाल क पाऊँ। पालक पाऊँ भीशपर दूजे रघुपति कर डरौं। दापहर तुमहि दसावतो द्विजकुल केनाते डरौं॥ ११०॥

ले कुठार सन्मुख धरयो राम तपनकी ओर। कौशिक दर जो बालकहि मोहि नहीं अवखोर॥ मोहि नहीं अब खोरि करौं यह काल हवाले। परशु वल्यो स्वइ हाथ

त्रिपुल भूपति वर घाले॥ वर घाले गिर मालिका शंकरको दूषन लग्यो। जब चाहत तव गिर ह्यो लैकुठार सन्मुख भर्यो॥ १११॥

राम कहो कर जोरिके भृगु कुल कमल दिनेश। बालक दीन बिचारि उर क्रोध न कीजिय लेश॥ क्रोध नकीजिय लेश बाल अपराध विहीनो। धनुकर ममरो टूट चूकसों मही अधीनो॥ महीं अधीनो कर्म बस बांधिय दीजिय छोरिके। दास बिचारि प्रभाव मोहिं राम कहो कर जोरिके॥ ११२॥

शंभु दण्ड खण्डित कर्यो सो भुज खण्ड हुँ आज। जो कर परश प्रचण्ड लखि कटे अवनिके राज। कटे अवनिके राज बचहु नहिं दीन उपायन। चत्रवंशतनपाय वचन सुख मृदुल सुभायन॥ मृदुल सुभायन क्यांवचौधनु तोरत नहिं तव डर्यो। अनुज सहित भुजकाटिहों शंभु दण्ड खण्डित कर्यो॥ ११३॥

चत्र वंश द्विज मानिये लषण कहो हँसि बात। हमपै पापन होय द्विज जननी कीन्हो घात॥ जननी कीन्हो घात ताहिते मन अति बाढ़ो। बड़ बैरी रण हत्योविरद पायो शिर गाढो॥ गाढ़ो पाय पाप शिर तासों रिसनहिं ठानिये। तुम्हें मारिको अवल है चत्र बंश द्विज मानिये॥ ११४॥

रे कुठार कुण्ठित भयो गयो स्वभाव सक्रोध। अरि प्रचण्ड दहि अवनि नृप कीन्हो हृदय प्रवोध॥ कीन्हो हृदय प्रवोध अछत अरि देखत ठाढे। उत्तर सुनत सरोष मोर हृदि ज्वालन बाढ़े॥ ज्वाल न बाढे जरत उर घोर धारको लै गयो। काटि काटि कण्ठचिक्क तव रे कुठार कुण्ठित भयो॥ ११५॥

जो रघुपति आयसु करैं तौ द्विज देहुँ देखाय। रघुकुलको कठिनता तुमको देउँ बताय॥ तुमको देउँ बताय परन्तु मन तज्यों तुम्हारों। भूमिशेष से पार धारि बारन डर भागें॥ बारन डर भागें सतुजि बिग्रवात पातक परैं। सभा सबेन बिचारिये जो रघुपति आयसु करैं॥ ११६॥

लषण बचन कहि धनु लियो नयन सयन करि राम। बरजे तुम बालक निपट भृगुपति सब गुणधाम॥ भृगुपति सब गुण धाम ताहिसों समसरि कीजे। जाको पदरज सेव्य आपने शिर धरि लीजे॥ शिर धरि लीजे रिस कृपा अनुज शिखावन प्रभु दयो। सुखसख राम निहारि नत लषण बचन कहि धनु लियो॥ ११७॥

अस समर्थ भृगुवंशमणि सुररक्षक द्विजपाल। महिमण्डल दुर्जन गनि करौ निक्षत्र विशाल॥ करौ निक्षत्र मही सकल दई विप्रके हाथ। रुधिरकुण्ड तर्पन कियो तेई भृगुकुलनाथ॥ तेई भृगुकुलनायके चरण शरण सेवहु सुमति। अभय होय तिहुँ लोकमहँ अस समर्थ भृगुवंशपति॥ ११८॥

जाके पदरजके धरे सुद मङ्गल कल्याण। अभयकरन सङ्कटहरन गावत वेद पुराण। गावत वेद पुराण कलतरु सम सुखदाता। हरिहर पूजत जाहि परम सुखदानि विधाता॥ दानि विधाता जानिकै निशि दिन सेवा जे करैं। अर्थ धर्म कामादिको पद रज सुख जाके धरैं॥ ११६॥

कारा व्यालता सो हरत जाके दून पद [illegible]। यहै शिवा यह योग है यहै योग जप नेम। यहै योग [illegible] कपट तजि मन वच कायक। सोइ सुकृती सोइ [illegible] द्विज भक्ति प्रदायक॥ आयक छल तजि पूजि पद [illegible]

धन सेवा करत। जीव जाल दुखमाल सब काल व्याल कासों डरत ॥ १२० ॥

सो त्रिलोक पावन परम जिनके द्विज पद प्रीति। विभ्रम भ्रमताको नहीं दिशा विदिशि सब जीति॥ दिशा विदिशि सब जीति मोह रिपु कटक भगावे। यशदायक गुण ग्राम राम अनुजहि समुझावे॥ राम बुझावे अनुजको चन्नवंश याही धरम। पदरज नित हित शिर धरैं सो त्रिलोक पावन परम ॥ १२१ ॥

राम सिखावन दुहुँ सुन्यो लषण और भृगुवंश। मति गति सुरति सँभारि उर ब्रह्म सच्चिदानन्द॥ ब्रह्म सच्चिदानन्द भयो नृप सुत अवतारो। शारँग करमें दियो विविध विनती अनुसारो॥ त्रिविध भांति पातक लगे कटुक वचन मनमें गुन्यो। परशुधरन पुनि लषण हू राम सिखावन दुहुँ सुन्यो ॥ १२२ ॥

नृप सभीत उठि उठि चले परशुराम गति देखि। आशिष भृगुपति देय करि आनँद लह्यो विशेखि॥ आनँद लह्यो विशेषि जनकपुरजन सब रानी। वंदी मागध सूत उचरहि मङ्गल बानी॥ मङ्गल बानी पुर भई बाजि उठे दुन्दुभि भले। सन्त सुधा सुरगण मुदित नृप सभीत उठि उठि चले ॥ १२३ ॥

समय पाय कौशिक कहेउ जनक महीप बुलाय। सजहु सकल मङ्गल सुभग दशरथ नृपति बुलाय॥ दशरथ नृपति बुलाय व्याह कुलरीति सँभारो। माड़हु रचहु विचित्र नगर गृह गली सँवारो॥ गली सँवारहु अगर मय लव कुतर्क सगय दहेउ चार पठाइउ अवधपुर समय पाय कौशिक कहेउ ॥ १२४ ॥

सतानन्द अवधहि चले लग्नपत्रिका हाथ। हीर नीरयुत मणि पदिक सकल सुमङ्गल साथ॥ सकल सुमङ्गल साथ देखि रघुपति पुर पावन। भूपति लियो हँकारि दीन्ह पत्रिका सुहावन॥ दीन्ह पत्रिका नृप लखी राम ब्याह-मङ्गल भले। गृह गृह बजे बधाव पुर सतानन्द अवधहि चले॥ १२५॥

रामजानकी ब्याह सुनि साजी भूप बरात। रथ तुरङ्ग मातङ्ग दलगजघण्टा घहरात॥ गजघण्टा घहरात दुन्दुभी धुनि चहुँओरन। मङ्गल भरि भरि थार भामिनी गान झकोरन॥ गान झकोर प्रमोद पुर सुरनिध जय जय सुमन धुनि। दशरथ भौ सुरपति सज्यो रामजानकीब्याह सुनि॥ १२६॥

कुल विचार व्यवहार करि गुरुआयसु नृप पाय। मिथिला पुरको सग लियो भूप निशान बजाय॥ भूप निशान बजाय सगुण सुन्दर शुभ पाये। बीच बास करि विविध जनकपुर भूपति आये॥ भूपति आये जनकपुर अति उछाह आनन्द भरि। दुहुँ समाज संगम सुभग कुल विचार ब्योहार करि॥ १२७॥

उमा रमा ब्रह्मायणी पतिन सहित पुर आय। राम जानकी रूपछवि देखनको ललचाय॥ देखनको ललचाय निरखि दशरथके बारे। मनवचक्रमनवप्रेम भये सब देखन-हारे॥ देखनहारे भे मगन ऋधिसिधि मङ्गलदायनी। सिय विवाहकुलकर्म सर्ब्ब उमा रमा ब्रह्मायनी॥ १२८॥

सुथल भूप डेरा दियो कौशिक लक्ष्मण राम। पाय खबरि पितु आगमन चले हर्षि गुणधाम॥ चले हर्षि गुण-धाम मुदित भेटे रघुराई। मुनिपदरज धरि भूप भरत भेटे दोउभाई॥ भेटे पुरजन गुरुद्विजन राम देखि पूरण हियो।

तिरिहुति मा मङ्गल लिये सुयलभूप डेरा दियो ॥ १२६ ॥

सहित नृप सँग द्वै ओर सुत ओर न ... गुठि ... । ... एक हैं एक सत्य पनु रास ॥ ... सत्य जनु राम ... जे नागन निहारे । बसहि वदन मयंक नयन ... रतनारे ॥ बेनहि ... राम छवि तैसे बन छवि देह दुन । ... राखि नृपसँग द्वै ओर सुत ॥ १३० ॥

रा... समुझें हिये तीनि रूप ... कोन । चारहु कुवँर ... पुर नृप परवीन ॥ यहि पुर नृप परवीन कीन ... जस कन्या तस कुवँर याग ... कीन ... । ... महेश ... कह्यो जोग ... लिये । ... सगुन राखि निज समुझें हिये ॥ १३१ ॥

... कुवर तिरहुति चले पाय शुभग ... । कहुँ दिन दुग कहुँ मास भरि देखि रूप नरनारि ॥ देखि रूप नरनारि ... पुनि दुलहिनि चारो । कछु दिन वे उत रहैं ... हैं कुमारी ॥ जनक कुमारी आय हैं अवध छांडि ... । वनि वनि दिन दश बीसपें चारि कुवँर तिरहुति ... ॥ १३२ ॥

... बड़ि पुख्यते राखि पुरमें त्रिपुरारि । तो विरञ्चि ... रच्यो सुकृत ठूट दिन चारि ॥ सकल ठूट दिन चारि ... रूप कुवर बिवाहो । माड़व तरे निहारि लेहु जग जीवन ... ॥ ... अवधि यह सुख देखहिं धन्य ते । ... रूप उर जो बसै ये बातें बड़ि पुख्यते ॥ १३३ ॥

... ताही गनै राम लषण छवि देखि । ताते ... बड़ो भाये कुवँर विशेखि ॥ भाये कुवँर विशेखि ... भारे । दर्शनको तत्काल भूप दशरथहि ... ॥ दशरथ राम निहारि के ... दूलहिनी पुनि बने ।

यह बिबाह देखहिं सुनहिं सखि इन्द्रानी ताही गनै ॥ १३४ ॥

लग्न पत्री लिखि दई आयौ लगन सुर गाय। राम बिवाह उछाह सब देखन चले बजाय॥ देखन चले बजाय आनँद जात बुलाये। दशरथ सहित बरात जनकमन्दिर प्रति आये॥ मन्दिर प्रति आये सबै पाँवड़ परि जय जय भई। करि उछाह समाज शुभ ब्याहयो विधि लिखि दई॥ १३५ ॥

को बितान तुलना कहै जिहि इत सुखमा आहि। नटत निकौ लखनो लख जुगवत पल जाहि॥ लख जुगवत पल जाहि जहाँ दुलहिनि बैठे हो। विधि हरिहर यम इन्द्र होत चितवैं हित तेही॥ चितवैं हित तेही कृपा दूलह ओर रघुपति रहैं। समधी दशरथ जनक सम को बितान सुखमा कहै॥ १३६ ॥

इन्द्र ब्रह्म दूनो मिले बन्दी बर्णत आय। सब समाज सब लोग सो हसैं प्रत्यच्छ दिखाय॥ हसैं प्रत्यच्छ दिखाय रहै इपना जिय आवै। नारि सहित सुकुमारि राम ब्याहन दुख गावै॥ रामब्याहसुख देखही अमरावति संयुत चले। निज निज पुर सुरगण सहित इन्द्र ब्रह्म दूनो मिले॥ १३७ ॥

राम सुभूषित जगमगे माड़व मध्य समाज। मानो सुक्ता सौं छवि नखत सहित निशिराज॥ नखत सहित निशिराज नारिनर देखत शोभा। रघुपतिमुख शशिशरद निरखि छवि हन न को भा॥ रघुपति मुखछवि चन्द्रशशि नयनचकोरनि लखि लगे। मदन कोटि मन वारिये राम सुभूषित जगमगे॥ १३८ ॥

मुनि वशिष्ठ अरु सतानँद भरद्वाज जाबालि। ऋषि अगस्ति सुगनं ऋषि कश्यप मुनि तपशालि। कश्यपमुनि तपशालि देव

ऋषि सनक समेते। लोमश अरु चिरजीव व्यास पाराशर जेते॥ पाराशर कौशिक सहित गोतम शुक उच्चरत पद। वेदमन्त्र करणी करैं मुनि वशिष्ठ ऋषि सतानँद॥ १३९॥

सूरजकुलगति सब कहैं पावक आहुति लेय। गणपति कर पूजा करैं विधि बिवाह कहि देय॥ विधि विवाह कहि देय पवन पुनि शेष महेशा। सुरपति सुरगण सहित मगन ढिग लखत रमेशा॥ लखत रमेश सुदेश छबि राम सबहि जानत रहें। विप्रवेष बेदन पढ़ैं सूरज कुलगति सब कहे॥ १४०

जनक मगन रानी सबै मुनि बशिष्ठ कहि दीन। सतानंद आनी सिया भूषण सजत नवीन॥ भूषण सजत नवीन राम ढिग अस्थित कीन्ही। मुनिवर अवरार समुझि शान्ति श्रुति मग कहि दीन्ही॥ दीन्ही दुन्दुभि अतिघनी सिय मण्डप आई जबै। दशरथ सभा समेत सुख जनक मगन रानी सबै॥ १४१॥

जनक पायँ पूजन लगे शाखोच्चार उचारि। रानी नृप मन मोद भरि लैको परश चिवारि॥ लैको परशु चिवारि नारि वरमङ्गल गाई। कन्यादान विचारि देव फूलन झरि लाई॥ फूले तरु नृप सुकृतकै चरण प्रचालत सुख जगे। निरखि वदन दम्पति मगन जनक पायँ पूजन लगे॥ १४२॥

जे पदपङ्कज नृप धरे जे शिवमान सहंस। जे पदपङ्कज मृदुल रम मुनि संकुल अलिवंस॥ मुनि संकुल अति वश प्रकट कीन्हो जिन गङ्गा। वरणत वेद पुराण प्रणतहित विरद अभङ्गा॥ विरद अभङ्ग प्रसङ्ग श्रुति मुनि तियके पातक हरे। अज सनकादिक ते भजैं जे पद पङ्कज नृप धरे॥ १४३॥

जनकराव समको सुकृत कहत देव मनमाहिं। निरखि मगन कौतुक परम जय जय कहहिं सिहाहिं॥ जय जय कहहिं सिहाहिं वचन कहि चार सँवारे। नरनारिन लखि रूप नेहवश देह बिसारे॥ देह बिसारे रूपको ब्याहलाह लोयन सुकृत। कोशलेश मिथिलानगर जनकराय समको सुकृत॥ १४४॥

होन लगीं वर भाँवरी दुलहिनि ललित ललाम। दूलह सुन्दर साँवरो शशि मुखपङ्कज राम॥ शशिमुख पङ्कज रामवाम लखि मङ्गल गावहिं। मुनिगण भाँवरिकृत्त करहिं गनि जियनि दशावहिं॥ मगन मोद भाँवरि परै रानी तन मन बावरी। सब कुलचार विचार करि होन लगीं वर भाँवरी॥ १४५॥

राम निछावरि को गनै मुक्ता मणि गण खान। मण्डप धन पूरो भयो जनु जुवारि यव धान॥ जनु जुवारि जव धान जनकमन्दिरते आवैं। मुनि वशिष्ठके वचन नेग गहि ताहि दिवावैं॥ नेग साधि आहुति दई ब्याह भयो सब कोउ भनै। देव भूप रानी जनक राम निछावरि को गनै॥ १४६॥

जेहि विधि रामविवाह भो सो कहि सकहिं न शेष। सम्पति शोभा सुख सुभग मङ्गल मोद सुवेष॥ मङ्गल मोद सुवेष साजु शुभ सकल समाजैं। कहि कहि थके गणेश व्यास जिन श्रुति पथ साजैं॥ श्रुतिपथ साजैं ते चकित मोद विनोद उछाह भो॥ तुलसिदास सो किमि कहै जेहि विधि रामविवाह भो १४७॥

जनक कौन जो सुनि कहेउ सब कन्यका विवाह। भरत शत्रुसूदन लषण दूलह करे उछाह॥ दूलह करे उछाह नृपति दशरथ सुख पायो। रामब्याह विधि शोधि मुनिन देवनि करवायो॥ देवनि करवायो सुकृति दूलह दुलही

... नह्यो। जोरि चारि निहारि सुख जनक कौन गो ... ॥१४८।

... भये याचक दाहुन जोर। सर सरिता दिग्गज भये वारि चले चहुँ ओर॥ वारि चले चहुँ ओर भाति जनकादिक रानी। पुर परिजन भे अमो ... सुख सुन्दर पानी। सुन्दर पानी अंक मणि भूषण पट बर्षत नये। राम सिया पावरा मुखद भेवा ... दशरथ भये १४९॥

वर कन्या राउत चले मुनि आयसु अस दीन। भूप समाज समेत सब जनवासे पग दीन॥ जनवासे पग दीन बजे दुन्दुभि अति भारी। दुलहिन दुलह ल्याय भवन आसन बैठारी॥ दुलह दुलहिनि सन निरखि रानी सुख सानी ...। दृगविषय ... वरकन्या राउत चले॥ १५०॥

रमा उमा गावन लगीं ले मातुनको नाम। धरि कपोल ... कौतुक कौनि खवावत राम॥ कौनि खवावत राम कुतूहल मङ्गल होई। नेक अनेक प्रकार सकुच कहं प्रकटत दोई॥ प्रकटत तिय वचननि कहैं रामसीय प्रेमनि पगी। कहा कौसल्या सौमित्रा रमा उमा गावन लगी। १५१॥

सिय सूधो तुम चतुर हौ रमा कह्यो मुसुकाय। मुनि-तियनी नांह कहुँ कौजिय नहि रघुराय॥ कौजिय नहि रघुराय मांय निज सुनहु हमारी। पट कबहुं जनि छुयो ... भारी॥ ... चारि विवाहिये एक ... रमा कहत रघुनायसों सिय सूधो तुम ... ॥१५२॥

हासविलासविनोदमय नेग योग करवाय। राज उठाये भवनते शिविका रुचिर चढ़ाय॥ शिविका रुचिर चढ़ाय

दुलहिनिन सहित सुहाये। दुन्दुभि देवन एहुप राम जनवासे आये॥ जनवासे देखत मगन भूप दीन लखि द्विरद हय। पोषे याचक विविध सुख हासविलासविनोदमय॥ १५३॥

षटरस चारि प्रकारके भोजन विविध बनाय। सतानन्द आपुहि जनक दशरथ चले लिवाय॥ दशरथ चले लिवाय पाँवड़े अर्घ सुहाये। मणिसिंहासन रुचिर छरस भोजन परसाये॥ भोजन परसाये मुदित तियगण गानविहारके। सुनि दशरथ भोजन कियो षटरस चारिप्रकारके॥ १५४॥

पान मान प्रमुदित दये भये विदा जनवास। गहगह बाजी दुन्दुभी मङ्गल मोद विलास॥ मङ्गल मोद विलास बरातिन मन्दिर भूले। जनक प्रीति रज सुदृढ़ रामछवि पावस फूले॥ फूले गज याचकन गृह पहिरि पाय मन्दिर गये। जान रायरघुपति सबहि पान मान प्रमुदित दये॥ १५५॥

तीनि मास दशरथ रहे नित नव आदर होय। विदा-साज साजी जनक सबको सुखरुख जोय॥ सबको सुख-रुख जोय सहस दश स्यंदन साजे। मुक्तामणि गणसुपट भाँह कञ्चनके राजे॥ मणिगण लागे अत जे ते ते रथपूरे लहे। जनकराज दायज सजे तीनि मास दशरथ रहे॥ १५६॥

दिग्गज सहसपचासलौ सजे जरकसी साज। मणि-मुक्ताकी झालरी छपे सोह गजराज॥ छपे सोह गजराज जरीजरकसी अमारी। तिमिर अरुण इकठौर मनो पावस अँधियारी॥ पावस अँधियारी सघन घण्ट शब्द सुरवासलौ। जनक राय दायज सज्यो दिग्गज सहसपचासलौ॥ १५७॥

तुरी लाखदश वर सजे वरन वरनके जीन। रथतुरङ्गते अति भले चञ्चल सुभग नवीन॥ चञ्चल सुभग नवीन अलंकृत

भूषण राजे। वरन निदरि मनवेग रङ्ग रङ्गनि बनि साजे॥ बनिबनि साजे बाजिवर जिनहि देखि सुरहय लजे। जनकराय दायज सज्यो तुरी लाखदश वर सजे॥ १५८॥

वृषभवृन्द दशलाखलो सुन्दर सब गुणधाम। शृङ्ग जङ्ग मण्डित पुरट सोहत ललित ललाम॥ सोहत ललित ललाम भये भोजन पकवाने। सौरभ मृगमद मलय अगर कुमकुमके थाने॥ अगर कुमकुमा रस भरे झपे जरकसी पाँखलो। जनकराय दायज सज्यो वृषभवृन्द दशलाखलो॥ १५९॥

महिषो लाखसतानवे देश देशको खानि। मनो श्यामघनके सुवन मही चरैं सब आनि॥ मही चरैं सब आनि दूध धरनी धसि धारे। शृङ्ग कण्ठ मणिहार शिशुन प्यावत सुकुमारै॥ प्यावत सुकुमारै थननि दूध सुधार विधानवे। जनकराय दायज सज्यो महिषी लाखसतानवे॥ १६०॥

धेनु लाखयुगवानवे कामधेनुसी रूप। अलङ्कार मणिगण वसन सोहत परम अनूप॥ सोहत परम अनूप दूध सुधी सुठि रूरी। संगशिशुनके वृन्द सकल शुभ लक्षणपूरी॥ पूरो छविको को कहै जेहि देख्यो सोइ जानवै। जनकराय दायज सज्यो धेनु लाखयुगवानवै॥ १६१॥

शिविका लाख बहत्तरी सियदासी असवार। मनहुँ कामतिय रति चढ़ी करि षोड़श शृङ्गार॥ करि षोड़श शृङ्गार जानकीप्रिय अधिकारी। मन गति रति परवीन चतुरविद्या छवि भारी॥ विद्या छवि सतभाव उर सिय सेवा उनमत्त री। जनकराय दायज सज्यो शिविका लाख बहत्तरी॥ १६२॥

[illegible] पिञ्जर सज्यो कञ्चनखँचित विचित्र। शुक [illegible] कुहीबाज शुचिमित्र॥ कुहीबाज शुचि-

मित्र मित्र सचिकै प्रतिपाले। ते सेवक सब लिये जानकी सेवनवाले॥ सेवनवाले भाग बड़ जगतजननि जेहि लग रह्यो। तासुसङ्ग यह कौन बड़ सवालाख पिञ्जर सज्यो॥ १६३॥

ऊट अजा अरु ध्यानको लेखा गनो सिराय। जे प्रिय सियके न्रप लख्यो नगर बाहरे जाय॥ नगर बाहरे जाय मनहुँ अमरावति घेरी। दुन्दुभि दये सहस्र छत्र अरु चमर घनेरी॥ चमर घनेरी भवन पट आसन विविध विधानको। दायज दियो नये गने ऊट अजा अरु ध्यानको॥ १६४।

रानिन सुता सँवारिकै करुणा सीख सुनाय। पति-व्रतधर्महि दृढ़ धरेहु सेयहु सहज सुभाय॥ सेयहु सहज सुभाय होहु निज स्वामिहि प्यारी। सदा सुहागिनि होहु यहै आशीष हमारी॥ यहै आशीषा देहि हम सुता अङ्क उर धारिकै। भेंटि भेंटि पांयन परैं रानी सुता सँवारिकै॥ १६५॥

जनकनयन धारा वहै सुता लिये उर लाय। सिय करुणा छोड़त नहीं जनक न त्यागी जाय॥ जनक न त्यागी जाय सचिव सतुआवत राजे। धीरज धर्मपरान ज्ञान गुण ध्यान समाजे॥ ध्यानसमाज न लाज रह छुटत लगत रोवत गहै। मातु गरे पुनि पितु गरे जनक नयन धारा वहै॥ १६६॥

विदा हेत रघुवर गये जनकरायके धाम। रानिन लखि आसन दियो कीन्हे राम प्रणाम॥ कीन्हे राम प्रणाम कहत मृदु वचन सुहाये। विदा दिजीये मातु न्रपति चह अवध सिधाये॥ अवध सिधाये सुनत न्रप रानी सुख सूखत भये। वदन न सुखपङ्कज कह्यो विदा हेतु रघुवर गये॥ १६७

रानी रघुवर पाँय धरि कहत वचन भरि नयन। तुम्हैं कहत मुनि योगि जन घटघट तुम्हरो अयन॥ घटघट तुम्हरो अयन सकल गति जाननवारे। दीजिय प्रभु वर युगल प्यास यह हृदय हमारे॥ हृदय हमारे तुम बसौ कहौं दूसरो विनय करि। सुता किङ्करी राखिये रानी रघुवर पाँय धरि॥ १६८॥

करि प्रणाम रघुपति चले रामसहित सब भाय। सुता चढाई पालकी सुन्दर सीख सिखाय॥ सुन्दर सीख सिखाय नृप पहुँचावन आये दुन्दुभि दीन बजाय मुनिन देवन गुण गाये॥ गुण गाये पाये सबनि सगुन सुहावन अति भले। सबको भेंटि प्रणामकरि करि प्रणाम रघुपति चले॥ १६९॥

अवध पांचये दिन गये बनि बसि सकल सुवास। पुरप्रमोद आवन सुने रहसविवश रनिवास॥ रहस विवशर निवास पहिरि शृङ्गारन रानी। आरति मङ्गल साजि गीत गावहि मृदुवानी॥ वानी मङ्गल सजि सबै कलश चौक चामर नये। अवधनाथ सुखकी अवधि अवध पाचये दिन गये॥ १७०॥

परिछन करि भीतर गई पुत्रवधू सुत साथ। मङ्गल मोद समाजयुत आये कोशलनाथ॥ आये कोशलनाथ पुरी हर्षित नरनारी। पुत्रवधू सुत देखि मगन तनमन महतारी॥ महतारी वारहिं सुभग भूषण पट मणिगणमई। सुभग सिंहासन चारि धरि परिछन करि भीतर गई॥ १७१॥

मुनिनायक जो जो कहेउ सो सो करि व्यवहार। दान दीन विप्रन मुदित भरि भरि कञ्चनथार॥ भरि भरि कञ्चनथार भामिनी मङ्गल गावैं। रानी भूषण देहिं सकल आशिषा सुनावैं॥ आशिष देहिं सनेह भरि शम्भु उमा परसन रहेउ। राम भाय दशरथ सुखद रहैं सदा मुनि जो कहेउ॥ १७२॥

रामविवाह बखानई मोदसमुद्र उछाह। नारद शारद

शेष शुक गणपतिको अवगाह॥ गणपतिको अवगाह व्यास विधि कहि कहि हारे। मनिअनुरूप वखानि भजनको भाव विचारे॥ मनिअनुरूप वखानिकै गिरा सफल निजु मानई। तुलसिदासकै कौन मति रामविवाह वखानई॥ १७३॥

इति बालकाण्डः समाप्तः॥

अयोध्याकाण्ड॥

कुण्डलिया॥

अवध अनन्द प्रवन्ध सुख दिन दिन अति अधिकाय। जवते राम विवाह करि आये कोशलराय॥ आये कोशलराय भुवन सव आनँद पूरे। ऋधिसिधिसम्पतिनदी अवधसागर भरिपूरे॥ सागरसप्त समानलौ गयो शोक अरु दोष दुख। अमरपुरी अहिपुर धरणि अवधि अनन्द प्रवन्ध सुख॥ १॥

दशरथभाग सराहई सुर मुनिवर नरनारि। धर्म-धुरीण प्रतापनिधि जिन पाये सुतचारि॥ जिन पाये सुतचारि जासु यश वरणि न जाई। औरघुपतिमुख देखि हर्ष अति लोग लुगाई॥ लोग लुगाई तृण गनत शाक रो सुख चाहई। पुरौ भाग अनुराग सुर दशरथ भाग सराहई॥ २॥

नृपसों विनय सुनायकै केकयसुवन सप्रीति। भरत-हेतु विनती करी कहि मृदुवचन विनीत॥ कहि मृदुवचन विनीत दिवस दश रहैं गुसांई। सुनिहु कहे नृप पाहि भूप

पठये दोउ भाई। मुनि रखने आयसु दियो भरत उठे शिर नायके। कोकनदन लै भरा संग न्टपसों विनय सुनायके॥ ३॥

विदा रामके चरण धरि भरत शत्रुहन भाय। मातु गुरू भ्राता न्टपहि चले सबहि शिर नाय॥ चले सबहि शिर नाय सुभट सेना सँग लीन्हे। श्रीरघुपतिपदकमल हृदय मन मधुकर कीन्हे॥ मनमधुकर पदकमलरति सुमिरतनाम सनेह भरि। धन्य भरत भूतल भये विदा रामके चरण धरि॥ ४॥

नारद आये अवधपुर रामचरित हित जाहि॥ प्रेम नेन जाके अवधि रामरूप उरमाहि॥ रामरूप उरमाहि राम देखत उठि धाये। पूजत विविध प्रकार जोरि कर प्रभु शिर नाये॥ प्रभु शिर नाये बूझियो मुनि प्रकटो विधि हृदय जुर। कहन विरञ्चि सँदेश सब नारद आये अवधपुर॥ ५॥

रामवचन सुनि मुनि गये पाय वचन विश्वास। राम प्रकट माया करी सबके हृदय प्रकाश॥ सबके हृदय प्रकाश गुरुहि न्टप जाय सुनायो। रामतिलक करि देहु नाथ सबके मन भायो॥ सबके मन भायो सुखद सुनि वशिष्ठ आनँद भये। तिलकसाज साजो मुदित रामभवन सुनि मुनि गये॥ ६॥

न्टप बातें प्रकटीं सबै मुनि रघुवर समुझाय। नेम क्रिया व्रत धर्म न्टप तिलक भेद विधि गाय॥ तिलक भेद विधि-गाय कहेउ भूपनिहि बुलाई। मङ्गल वस्तु मँगाय तिलककी करो सुहाई॥ करो सुहाई कालि है राम राज्य बैठहि जबै। बाजे विपुल बधाव पुर न्टपबातें प्रकटीं सबै॥ ७॥

राम हेतु मङ्गल रचो आनो तीरथ नीर। पान फूल फल मूल दल हय गय मणिधन चीर॥ हय गय मणि धन चीर धरा सुन्दर रचि राखी। वन्दनवार पताक कलश चौके

अभिलाषी॥ अभिलाषी कुसुमप नगर वीथी कैरनिसों रची। मणिमय दीप प्रकाशिये रामहेतु मङ्गल रची॥ ८॥

देखि देव सोचत भये अवध रामको राज। दुष्ट कष्टको नाशि है निश्चय भयो अकाज॥ निश्चय भयो अकाज सुमिरि शारदा बुलाई। राम विपिन कहँ जायँ मातु सो करहु उपाई॥ राम विपिन कहँ जायँ जव कर उपाय बुधि वलनये। चरण गहैं पालन करौ देखि देव सोचत भये॥ ९॥

धिक धिक देवन कहि चली आगे हेतु विचारि। अवध गई रानी जहाँ देखौ सुमति सँभारि॥ देखौ सुमति सँभारि तहाँ परवेशन पायो। कछ मन्थरा वैठि तासु चित हित भरमायो॥ हित भरमायो तेहि सवै प्रिया कैकयीकी अली। उर दुखदागिनि सी भई धिक् धिक् देवन कहि चली॥ १०॥

नगर देखि वातैं कही हित तोरनकी घात। मोहिं सोच इक उर भयो जो फुर मानहु वात॥ जो फुर मानहु वात हितू हेतौ दुख जानै। काज नशात विचारि विना पूछेहु वखानै॥ विनपूछे प्रभुके वचन इन वातैं पातक नही। उतर देत नहिं दोष है नगर देखि वातैं कही॥ ११॥

इन ठौरनि पूछे विना कहै स्वामिसों दास। सर्प अव अरि विष अनल अनिल कपट दुर्वास॥ अनिल कपट दुर्वास घासन पथ्य अपथ्य जनावै। लाभहानि दुखदानि कहत पातक नहिं आवै। लाभहानि नहिं वोलई प्रभु आयसु रुख निशि दिना। स्वामि सुहागिलि देहि सिख इन ठौरन पूछे विना॥ १२॥

मोहिं भामिनी दुख भयो समुझि एक उत्पात। सव पुरको नीको लगै तुम्हैं भरतको घात॥ तुम्हैं भरतको घात

आन नृपरानि विचारो। कालहि राम नृप होहिं भई शोभा पर भागे॥ भारि विपति विचारिके हृदय मोर दुखयुत तयो भरत निवेश नरेश पर मोहिं भामिनी दूखभयो॥ १३॥

विरति बीज अङ्कुर भयो वयो कौशला रानि। पावस नृप उर देति शुभ आयसु सुन्दर पानि॥ आयसु सुन्दर पानि अवनयननसुत बल पाई। गुरु पुरजन भे वारि तुम्हें नित कीन्ह उपाई॥ कीन्ह उपाय सहाय सब भरत तेज तप सो गयो। चारि दिवस गन देखियो विपति बीज अङ्कुर भयो॥ १४॥

सत्य मानि रानी कहे कहु सखि मोहिं उपाव। भरत गये अमगुन भये सो सब यहे प्रभाव॥ सो सब यहे प्रभाव बुद्धि मैं ना जानी। सवनि ईरषा छांड़ि पुत्र पति आपन मानी। याको मानि न कछु कहिय नृप मलीन उदास चहे। हितू जगत मेरो तुही सत्य मानि रानी कहे॥ १५॥

कहि सुभाय रानी वदन जनि मन करसि मलीन। द्वै वर तेरे नृप चहैं लेहि मांगि परवीन॥ लेहि मांगि परवीन शीघ्र दृढ़ वचन न डोले। राम विपिन सुत राज्य सत्य करि नृपमन बोले॥ राम विपिन जब जाय हैं भरत भूप होई नदन। सवति हृदय यहि भांति दहि कहि सुखाय रानी वदन॥ १६॥

मन प्रतीति रानी भई लई सोख उरमानि। जो कछु मन रघुपति चहैं सोई सत्य उर आनि॥ सोई सत्य उर आनि कोपके भवन सिधाई। दुर्गति करि तन दशा मनहुं यमपुरते आई॥ दशा मनहुं नृप मरणको धरणि कुलचणको मई। कवि कुरीति सुप्रीति सिख मन प्रतीति रानी भई॥१७॥

का न कहिं यह कर्मवश केहि जग यम नहिं लीन। पवन उगायो काहि नहि को दुख दुखी न दीन॥ को दुख दुखी न दीन मोहमद केहि नहिं बाध्यो। तृष्णाज्वर नहि जरयो कामघर काहि न साध्यो॥ काहि न साध्यो क्रोधदल केहि न चल्यो तरुणीतरल। चितचिन्ताआलिनि यथा का न करहिं यह कर्मबल॥ १८॥

अवधपुरी अमरावती बाजैं विपुल बधाव। सबके उर आनन्द अति रामतिलक सतिभाव॥ रामतिलक सतिभाव साँझ समया नृप पायो। सरल सुहृद नृप हृदय कैकयी गृह चलि आयो। आयो सुनि रिसकै सदन वदन पीत भय छावती। अवधनाथ सुरपति सरिस अवधपुरी अमरावती॥ १९॥

सो दशरथ कम्पहि हिये काम प्रताप बलीन। जाको दश दश लोकमहँ केहि अनर्थ नहि कीन॥ केहि अनर्थ नहिं कीन चन्द्र सुरपति गति देखौ। नृप दिलीप सुनि चतु ययातिहि चित अवरेखौ॥ चित अवरेखहु कामबल तीनिलोक भेदित किये। ताको घर नृप उर गड्यो सो दशरथ कम्पत हिये॥ २०॥

देखि जाय रानी विकल भूमि शयन तन दीन। पट पुरान सूखे अधर नयन अरुणरँग पीन॥ नयन अरुणरँग पीन मनहुँ दुर्दशा अनैसी। विपति नारिके रूप कुमति जसि प्रकटति तैसी॥ प्रकटति वचन वदनमहँ कुमतिसाज धरि छल कुचल। भूप सभय पैठे भवन देखि जाय रानी विकल॥ २१॥

क्रोध कौन कारण कियौ गजगामिनि वरनारि। जोइ माँगसि सोइ देउँ तोहिं कामादिक फलचारि॥ कामादिक फलचारि तोहि परतीति सदाई। तेरे सुखकै हेतु तिलकको

...॥ करो शोभाई तिलककी अवध लोग सुनि ... ... करि प्रबोध नृप पाणि गहि क्रोध कौन कारण ...॥ २२॥

... बैठी बोलत भई करि कटाक्ष मुसुकाय। भूप न ... हृदि नारि चरितके भाय॥ नारि चरितके भाय ... नहि जाननहारे। है वर यासों देहु ... हम तजे ...॥ तजे तुम्हारे दानिता कहौं शपथ साँचो नई। फिरि न टरै कहि उच्चरौं उठि बैठो बोलत भई॥ २३॥

शपथ सत्य लखि काह चलि वचन अमङ्गलमूल। देहु एक वर प्रथम यह भरतराज्य अनुकूल॥ भरतराज्य अनुकूल दूसरो माँगहुँ साँई। चोदहवर्षविशेषि राम वन मुनि को ...॥ ... नाँई जाहि वन कालहि राम तो अति भलो। मोर मरण अपनो अयश शपथ सत्य लखि कहि चलो॥ २४॥

सुनि भूपति उर अति दह्यो वज्र हृदय जनु लाग। मुख सुखान लोचन सजल प्राण विकल भय भाग॥ प्राण विकल भय भाग मूँदि राखे दोउ लोचन। शोक दाह उर ... कछु बनत न शोचन॥ बनत न शोचन मुख वचन मनहु प्रेत कर्मनि छल्यो। धुनत शीश व्याकुल शिथिल सुनि भूपति उर अति दह्यो॥ २५॥

... विकल सुनि नृप कहा वचन लगे जिमि वान। सत्य... मन किये कह्यो देन वरदान॥ कह्यो देन वरदान ... कह्यो सँभारे। कौशल्यासुत सुवन भरत नहि ... तुम्हारे॥ भरत सुवन पठये कुयत रामतिलकआनँद ...। सावँत छल तस फल लह्यो भये विकल सुनि नृप कहा॥ २६॥

नयन उघारे नृप कहत समुझि प्रिया वर माँगु। भरत नृपको तिलक पर तामैं लगै न दागु॥ तामैं लगै न दागु राम वन पठवति काहे। कौन लाग अपराध राम सब साधु सराहे॥ साधु सराहे नारिनर अब अचर्य छाती दहत। ताते समुझि विचारि कर नयन उघारे नृप कहत॥ २७॥

ये न वचन टरि हैं नृपति मरहु उजरि पुर जाइ। अयश अवधि विधना करहि अघ रविवंश नशाय॥ अघ रविवंश नशाय हाय पुर काल हवाले। कलह कपटकी आगि अवनि भगि जाय पताले॥ भगि पताल अवनी घटै रवि शशि रेंगहि उलटि गति। विधि हरिहर आपुहि कहैं ये न वचन टरि हैं नृपति॥ २८॥

अनल चन्द बरषे कबहुं शीतल सूरज होय। शेष तजे धरनी धरन समुद बिना जल जोय॥ समुद बिना जल जोय शम्भु शिर चन्द्र प्रजारै। तिमिर दहै रवि रूप वृद्धकर दण्डहि डारै॥ दण्डहि विधि जग सृष्टि सब नारायण मिटि जाहि कहुं। ये न वचन नरपति टरैं अनल चन्द वर्षैं कबहुँ॥ २९॥

राज्य न चाहैं भरत पुर लागो तोहि पिशाच। मोरि मृत्यु बोलत वचन अब मुख चढ़ि शिर साँच॥ अब शिर चढ़ि करि साँच राम नृप होवहि भारी। तुहि कलङ्क दुख भोर मिटहि कबहुँ क नहिं नारी॥ नारी करि चित चाहिके वचन भार जिय जानि फुर। राम भूप सेवक अनुज राज्य न चाहैं भरत पुर॥ ३०॥

बसौ अवध नृप राम हैं यह जानत सब कोय। भोर मरण भो भामिनी यह सुख लख्यों न सोय॥ यह सुख लख्यों न सोय सत्य जिय जानसु भामिनि। मौन जिये बिनु काजि ...दिनु जियों न भामिनी॥ जियों न भामिनि

दिन वृथा जानि मरण परिणाम है। तू अभागिनी तजु
दियो बसी अवध नृप राम है॥ ३१॥

राम राम कहि नृप गिरत्रा कुमति न मानी बात। अवध बधाव अनन्द बड़ नींद न लागी रात॥ नींद न लागी रात कालहि शुभ घरी सुहाई। देख्यो जाय सुमन्त भूप गति मति विकलाई॥ मति विकलाई देखिके लखि कुचाल आतुर फिरत्रो। आये राम लिवायको राम राम कहि नृप गिरत्रो॥ ३२॥

पितु उठाय बोले वचन नृपति लीन उर लाय। नयन नीर धारा धसे वचन बोलि नहिं जाय॥ वचन बोलि नहिं जाय राम पूछी महतारी। कहनि कठोर कुवैन कथा करणी कट भारी॥ कट भारी सो हेतु सुनि तन प्रसन्न कह मृदु वचन। लघु उपदेशत दुःख महा पितु उठाय बोले वचन॥ ३३॥

राउर चरण प्रतापते बन मुद मङ्गल मोहि। मुनि तीरथ देवन दरश मोर परमहित होहि॥ मोर परमहित होहि तात बिन बिलम न लागै। आतुर ऐहौं अवधि धरन पुनि चरन सभागै॥ धरन चरन पुनि आय हौं आयसु देहुय आपते। कुशल क्षेम घर आयहौं राउर चरण प्रतापते॥ ३४॥

उत्तर कहेउ न भूपमुख राम धरे नृपपाँय। कुमति कठोर कुवचन कटु मातु कहत मुसक्याय॥ मातु कहत मुसक्याय हृदय छोडन नहिं राजा। करि प्रबोध शिर नाय विपिनको साजि समाजा॥ साजि समाज प्रसन्नमुख गहे मातुपद प्रेम सुख। राम चलत व्याकुल गिरत्रो उत्तर कहत्रो न भूपमुख॥ ३५॥

मातु गोद मोदति भरे कहति वचन आनन्द। कालहि तिलक नृप मुख रच्यो कितिक बार सुख वृन्द॥ कितिक बार सुख वृन्द लाभ लोचलन सब ठौ। सिंहासन सिय

सहित निरखि रविशतद्युति छूटी॥ रविशतद्युति छूटी नवविधि मधुर लाल भोजन धरे। न्हाय खाउ बड़ बार भो मातु गोद मोदनि भरे॥ ३६।

राज विपिनको मोहि दयो जहां मोर बड़ काज। राउर चरणप्रतापते कुशल आइ हौं साज॥ कुशल आइ हौं साज मातु आशिष मोहि दीजै। जान दिवस नहि बार हर्षि मन आयसु कीजै॥ आयसु कीजै हर्षिके मातुचरण प्रभु शिर नयो। कह मृदु दुहु कर जोरिकै राज विपिनको मोहि दयो॥ ३७॥

सहमि सुखानी सुनि वचन सिया धरे पग आय। राम बुलाई जानकी विपिन विपति सब गाय॥ विपिन विपति सब गाय सुनत लक्ष्मण उठि धाये। कहि कहि विविध प्रकार लषण सिय प्रभु मुसुकाये॥ मुसुकाये प्रथमहि सिया करि विवेक बन प्रिय सदन। उत्तर कछुक न सिय दयो सहमि सुखानी सुनि वचन॥ ३८॥

धरि धीरज कह जानकी मन समुझिय रघुराय। कण्टक-वन दावा अनल अनिल व्याल दुखदाय॥ अनिल व्याल दुख दाय व्याघ्र वृक अहि गज घेरे। सूकर भालु पिशाच विषम वन भय बहुतेरे॥ बहुतेरे उत्पात जे डरत रहे भय आनकी। प्रभु वियोग छाती दहै धरि धीरज कह जानकी॥ ३९॥

विपिन आपु सँग अति सुखी डासि पात तरु छाह। गिरिगण सरि सरवर मुदित क्षुधा तृषित नहि दाह॥ क्षुधा तृषित नहि दाह निरखि पदकमल तुम्हारे। श्रमपथ तनक न लेश सकल विधि प्रभु रखवारे॥ प्रभु रखवार विचारिये तजे जीव जानिय दुखी। त्यागिय मोहि विवेक करि विपिन आपु सँग अति सुखी॥ ४०॥

प्रभु सुखपर नहि प्रण करौं उत्तर दीन्हे पाप। तजौ तौ

कहा करौं प्रिय समुझि बिचारिय आप॥ समुझि बिचारिय आप प्राण तन त्यागि निवारौं। प्रभु सँग जाइय भाय देह घर राखिय डारौं॥ राखिय डारौं देह घर बहुत कहत पातक डरौं। सत्य मन्त्र मन दृढ़ धरयों प्रभु मुखपर नहिं प्रण करौं॥ ४१॥

तुम लक्ष्मण मानो कही राम सिखावन देत। मात पिता पर शोच सब नाशहु बसौ निकेत॥ नाशहु बिपत अनेक अवधपुर भरतहु नाहीं। भूप वृन्द नरनारि दुखित मम दुख मनमाहीं॥ दुख मनको दूषण तजो मानि मन्त्र राख्यो सही। दूषण देइहि मोहिं नर तुम लक्ष्मण मानो कही॥ ४२॥

प्रभु बनमें हौं घर रहौं आयसु तज्यो न जाय। प्राण वायु ममवश नहीं देह कहौ तहँ जाय॥ देह कहौ तहँ जाय भार यह कापर डारो। मैं सेवक शिशु कुमति चरणरज सेवनवारो॥ सेवनवारो रज चरण धर्म नीति मग किमि लहौं। अवध काज मेरो कहा प्रभु बनमें हौं घर रहौं॥ ४३॥

मातुचरण रघुवर नये बिदा माँगि कर जोरि। अश्रुधार धाई धरणि माता कहति बहोरि॥ माता कहति बहोरि कठिन उर फाटत नाहीं। ठाढ़ो देखत नयन राम सुत कानन जाहीं॥ कानन जाहि विशेषिकै सबके सुख सुरति गये। भेटि नाथ उर यह कह्यो मातुचरण रघुवर नये॥ ४४॥

गुरुपायन पर सौंपिकै लीन लषण सिय साथ। चले भूप मंदिर जहां बिदाहेतु रघुनाथ॥ बिदाहेतु रघुनाथ राय उर हृदय लगायें। नयनधार अन्हवाय राम बहुविधि समुझायें॥ समुझायें नृप राम बहु सिया प्रेम उर तोपिकै। [illegible] भाट भूपति गिरयो राम चले गुरु सौंपिकै॥ ४५॥

करि प्रणाम रघुपति चले त्यागि अवध सुखमूल। सबको सार सँभार करि मेटि मोहमय शूल॥ मेटि मोहमय शूल लोग सब व्याकुल भागे। रामविरहकी आगि नारिनर उठि सँग लागे॥ सँग उठि लागे नारिनर कालकर्म गुण दल दले। शिर धरि रानि बखानि कटु करि प्रणाम रघुपति चले॥ ४६॥

नृप हुलाय सुमन्तको सिखदै दयो पठाय। सुनत सचिव आतुर चल्यो स्यन्दन तुरत बनाय॥ स्यन्दन तुरत बनाय विनय करि राम चढ़ाये। तमसातीर निवास प्रथम दिन रघुपति आये॥ प्रथम लोग तजि प्रभु उठे सचिव साधि रघु लन्तको। गये राम जिय जानि सब सङ्ग बुलाय सुमन्तको॥ ४७॥

रामविरह दावाअनल भयो अवध वन घोर। पुरवासी खग मृग भये रहैं दुखी सब ठौर॥ रहैं दुखी सब ठौर-कैकयी भई किराती। ज्वाल बढ़ै चहुँ ओर जरति निशिदिन तन छाती॥ अवधि मेघको आश उर रहि न सकत तप कठिन यत। सो उपाय व्रत जप सुहृद रामविरह दावाअनल॥ ४८॥

राम गये सुरसरि निकट केवट परम हुलास। वचन सुमन्त बुलायके बोले राम प्रकाश॥ बोले राम प्रकाश तात अब अवध सिधावें। पितुपद गहि मम ओर कुशल सब विधि समुझावें॥ समुझाये कहि कोटि विधि तदपि परयो सङ्कट विकट। चले कर्मवश सचिव पुर राम गये सुरसरि निकट॥ ४९॥

माँगी नाउ निहारिके राम कहे मृदु बैन। सुनत बात केवट कहै सुनिये राजिवनैन॥ सुनिये राजिवनैन रावरो

पदरज खोंटौ। मानुष उड़ि उड़ि जात काठको गति है छोटौ॥ गति है छोटौ मोरि प्रभु बात कहौं डर डारिके। रज मानुष कर मूरि कछु मागहु नाउ निहारिके॥ ५०॥

तरनि होय मुनिकौ वरनि मरै सकल परिवार। कोटि करो बामन लरो कहो बचन शतबार॥ कहो बचन शतबार नाउ नहिं तुम्हैं चढ़ाऊं। अपने कुलको हानि होय जो तुम्हें चढ़ाऊं॥ तुम्हैं चढ़ाऊं नाथ जब चरण प्रक्षालौं निज करनि। बिन धोये न चढ़ाय हौं तरनि होय मुनिकौ वरनि॥ ५१॥

चरण प्रक्षाल बिलम्ब कह राम कह्यो मुसक्याय। पानी आन्यो दूह करनि धर्यो कठोता आय॥ भर्यो कठोता आय पाय पनि धोवन लाग्यो। देवन बर्षे फूल कहत यहि सम को भाग्यो॥ यहि सम बड़भागो कहा शिवविरञ्चि पदकमल चह। धन्य धन्य कहि सकल सुर चरण प्रक्षाल कुटुम्ब सह॥ ५२॥

कौन पार परिवारको चरणसुधाजल प्याय। पीछे पार उतारियो निज कर कोशलराय॥ निज कर कोशल-राय उतरि सिय सहित बहोरो। केवट लीन बुलाय लेहु उतराई थोरो॥ उतराई थोरो लई ताहि भयो श्रम पारको। दीन देखि मोहिं दीन वहु पार कौन परिवारको॥ ५३॥

ते पद धोये आजु मैं शिव बिधि योग कमाहिं। जिन चरणनको शेष श्रुति वरणत निशिदिन जाहिं॥ वरणत निशिदिन जाहिं प्रकट कीन्हो जिन गङ्गा। अशरण शरण पुनीत पगनिको बिरद अभङ्गा॥ बिरद अभंग प्रमाणको धोये जनक समाजमैं। सकल सिद्ध सिद्धन दई ते पद धोये आजमैं॥ ५४॥

विमल भक्ति वर दे चले राम लषण सिय सङ्ग। वन गिरि सरिसर ग्राम पुर देखत मृगजु बिहङ्ग॥ देखत मृगजु बिहङ्ग

ग्रामपुर निकसहि जाई। देखि कहहिं नरनारि रामसिय सुन्दरताई॥ रामसिया लहु बन्धु इन देखि भाग तिनके भले। प्रेम नेम लए योगफल विमल भक्ति वर दे चले॥ ५५॥

एक कहत मुख चन्दसों भामिनि भावत मोहि। कला होत शशि शीतकर सीता कलित सजोहि॥ सीता कलित सजोहि श्याम रेखा शशिमाहीं। सिय सुखपर लट श्याम सुभग बरणत कवि ताही॥ बरणत कवि मृगश्रङ्क कहि यह मृगनयन अनन्दसो। ताप हरत यह शशिमुखी एक कहत मुख चन्दसों॥ ५६॥

एक कहति मुख कमलसो और न पटतर ताहि। सहज सुवासित अति मृदुल सो सियमुख लवगाहि॥ सो सियमुख अवगाहि शीत मुत वह यह सीता। कवि वरणत हैं वाहि याहि मुख सुयश पुनीता॥ सुयश पुनीता दुहुनको भ्रमर मिल युग सुयलसो। और कहाँ उपमा लगै एक कहति मुख कमलसो॥ ५७॥

सीतामुख सो मुख कहौ कमल चन्द्र सो नाहिं। कमल मन्द है रजनि युति चन्द मन्द दिनमाहिं॥ चन्द मन्द दिनमाहिं राहु छिपिश्रनु सदाई। सीतामुख अरि नाहिं लोकतिहुँ खोजहु जाई॥ लोकतिहूँ महँ बिदित है घटै बढ़ै निशिदिन लहौ। कमल चन्द पटतर कहाँ सीता मुख सो मुख कहौ॥ ५८॥

एक कहैं पुर धन्य है मातु पिता पुनि धन्य। जिन देखे ते धन्य हैं जहाँ जात धन धन्य॥ जहाँ जात बन धन्य विटप गिरि सरि सर जेते। खग मृग निरखत धन्य वसत घर बैठत तेते॥ बैठत तेते सङ्ग हँसि बोलत चितवत धन्य हैं। धन्य पन्थ वन धन्य हैं हम देखत अति धन्य हैं॥ ५९॥

राम लषण सीता सहित देखि प्रभाव प्रयाग। न्हाय दान दीन्हे द्विजन प्रीति सहित अनुराग॥ प्रीति सहित अनुराग दर्शसुख सबहिन पाये। दुख सुख सबको देत आप ऋषिआश्रम आये॥ आश्रम आये सुनत ऋषि भरद्वाज आनद लहित। आसन आदर मुनि करयो राम लषण सीता सहित॥ ६० ॥

राम तुम्हारे दर्शते यह फल प्रकट दिखात। नेम प्रेम जप योग तप तीरथ व्रत दुख गात॥ तीरथ व्रत दुख गात आजु सब सुफल हमारे। राउर आगम लहत नयन मुख सुखद निहारे॥ सुखद निहारे सुख भयो तीरथ राउर परशते। भयो मोद मङ्गल परम राम तुम्हारे दरशते॥ ६१ ॥

भोर प्रयाग नहायके राम लषण सिय साथ। चले मनोहर मनहरन वन्दि चरण मुनिनाथ॥ वन्दि चरण मुनिनाथ मदन रति ऋतुपति मानो। ब्रह्म जीवके मध्य लसत माया छवि जानो॥ माया छवि लय देखिधौं उमाशंभु गण नायकै। चले किधौं सुरपति शची भोर जयन्त लिवायकै॥ ६२ ॥

पन्थ चरित सिय रामको सबसुख मङ्गलदाय। राम लषण सियदर्शते खग मृग सुखी सुभाय॥ खग मृग सुखी सुभाय परमपदके अधिकारी। को न लहे सुख सकल सुखद वर वदन निहारी॥ वदन निहारि सप्रेममय भरयो पर्म सुख धामको। हरि तरु खग मृग नारिनर देखि चरित सिय रामको॥ ६३ ॥

वालमीकिआश्रम गये सिया लषण रघुराय। आये मुनिवर मिलनको भेटे हृदय लगाय॥ भेटे हृदय लगाय पूजि परिपूर्ण कीन्हे। आसन आदर देय फूल फल अङ्कुर दीन्हे॥

अङ्कुर दीन्हे अमिय सम अस्तुति आनँद मन भये। सकल सिद्ध साधन सुफल वाल्मीकिआस्रम गये ॥ ६४ ॥

जाके हित मन गोत्र सित साधत साधन धाम। मोह-मदादिक गण तजे अहनिशि जागत याम ॥ अहनिशि जागत जाम जापतप योग विरागे। मानस ब्रह्मणि रूप रहत निशिदिन अनुरागे ॥ निशिदिन अनुरागे रहै ज्ञान ध्यान मन्दिर लहित। सो प्रत्यक्ष मूरति लखौ जाके हित मन गोत्र सित ॥ ६५ ॥

राम कह्यो कर जोरिके मुनिनायक सुनि बैन। आस्रम पावन दीजिये जहां करौं शुचि अयन ॥ जहाँ करौं शुचि अयन दिवस कछु तहाँ बिताऊँ। जानत कारण सकल कहा कहि प्रकट जनाऊँ ॥ प्रकट जनाऊँ आस्रम न देहु मुनीश निहोरिके। चलिय कृपा करि देहु मुनि राम कहेउ कर-जोरिके ॥ ६६ ॥

सुन्दर गिरिगण सरित वन दीख जाय मुनि सङ्ग। कहत महातम पर्म थल देखि होय दुख भङ्ग ॥ देखि होय दुख भङ्ग सुखी खगमृग वनचारी। तरुवर फलित विभाग सुधासम सुन्दर वारी ॥ सुन्दर जल थल निरखि यह चित्रकूट मङ्गल भरित। पावन करिय विहारथल सुन्दर वन गिरिगण सरित ॥ ६७ ॥

राम लषण आस्रम कर्‌यो चित्रकूट सिय सङ्ग। मनहु विपिन वसि तप करत रति ऋतुराज अनङ्ग ॥ रति ऋतुराज अनङ्ग राम लखि सुख वनचारी। भरि भरि दोना सफल भेट धरि वदन निहारी ॥ वदन निहारि निहारि सब मगन सदन मङ्गल भर्‌यो। विपिन भयो कामद सुखद रामलषण आस्रम कर्‌यो ॥ ६८ ॥

अब सुमन्त्र अवधहि चले राम बिदा जब कीन। हय न

चरहिं रघुबरबिरह सचिव भयो दुख दीन॥ सचिव भयो दुख दीन सिथिल रथ हाँकि न पायो। बिकल बिषाद निहारि गगन केवट पहुँचायो। केवट गुह गायो बहरि सांझ पाय अवसर भजे। हानि गलानि निहाल उर अब सुमन्त अवधहि चले॥ ६९॥

कह सुमन्त कहँ रामसिय उठे बिकल नरनाह। सचिव हृदय भेटेउ नृपति नयनन नीरप्रवाह। नयनन नीरप्रवाह सचिवमन बोलि न आयो। रामसिया सन्देश सकल मुख कहन न पायो॥ कहन न पायो मुखबचन अङ्गअङ्गनृप थहरो जिय। लखन रामसिय रामसिय कहु सुमन्त कहँ रामसिय॥ ७०॥

भूपभवन रोदन पर्यो रानी पुर नरनारि। अवधनाथ अथयो मनहुँ रबिनिशि अवध निहारि॥ निशि सम अवध निहारि गारि सब कुमतिहि देई। बिपति बियोग कुयोग दराह इव दीन्हेसि नेई॥ दीन्हेसि सबकहँ दुसह दुख जेहिके कारन नृप मर्यो। हाय हाय लायो नगर भूपभवन रोदन पर्यो॥ ७१॥

राखि भूप तन करि यतन कह वशिष्ठ समुझाय। दूत पठाये भरतपहँ आतुर चार बुलाय॥ आतुर चार बुलाय भूप गति प्रकटेहु नाहीं। गुरु बुलाये भरत वेगि ले गमनहु नाहीं॥ गवन कीन शिर नाय तब हयगति मारग सुनि वचन। मुनि बुझाय रानी सकल राखि भूपतन करि यतन॥ ७२॥

गुरुसंदेश आये भरत अशकुन नगर नगीच। खान शृगाल उलूक स्वर बोलन अशुभ कुनीच॥ अशुभ कुनीच भरत मति गति थिति नाहीं। भरत देखि नरनारि बाम दाहिन चलि जाहीं॥ बाम अवधपुर देखिके दुखज्वरसों

छाती जरति। हरत पावँ डगमग परत गुरुसँदेश आये भरत॥ ७३॥

भूषण भाजन साजिकै सुन आगमन विचारि। लै धाई कैकयसुता कृत आरती उतारि॥ सुत आरती उतारि माय दोउ भ्रमते भूले। पियो न जल थल बैठि शूलके अङ्कुर हूले॥ अङ्कुर शूल विचारिकैं कुशल पूंछि निजराजिके। बोली सुतदाहक वचन भूषण भाजन साजिकै॥ ७४॥

कुशल राज्य सब काजमैं राख्यों पुत्र सुधारि। भई मन्थरा परमहित दुख दूषण सब जारि। दुख दूषण सब जारि राज सब तुम्हते जान्यो। कण्टक भे सब दूरि अगम वर नृपसन माँग्यो। अगम सुधारो बात मैं नृप सुरपुर सुखसाजमैं। कछुक बिगारयो विधि यहै कुशल राज्य सब काजमैं॥ ७५॥

रामलषण सिय वन गये मरे भूप तेहि शोच। तुमकहँ राज्यविलास अब कीजे छाँड़ि सकोच। कीजे छाँड़ि सकोच होत सब विधिका कीनो। मरन जियन जग रीति लेहु पुर राज्य नवीनो॥ राज्य सुनत व्याकुल गिरयो रोदन करि मुर्छित भये। तात तात हा तात कहि रामलषण सिय वन गये॥ ७६॥

परे न कीरा मुहँ जरयो वर माँगत जड़ तोहि। कुमति कठोर न नृप लख्यो मिथ्या जन्मे मोहि॥ मिथ्या जन्मे मोहि बाँझ तू भई न काहे। ऐसो कुमति कठोर कर्म करि मो उर दाहे। दाहे उर खल वचन मुख राम बिपिन-कह मन धरयो। को तू काके रूप धर परे न कीरा मुख जरयो॥ ७७॥

पौतम मारत नहिं डरी वन पठये सियराम। प्रेत पिशाचिनि रूप तू भई कहांको बाम॥ भई कहांको बाम

राम तोहिं त्यनहित लागे। जोहसि सो उठि बैठु ओट तज्जि आँखिन आगे॥ आँखिन आगेते टरै धिक मैं जन्मयों जोहि वरी। रामसुवन पठये बनहिं पौतम मारत नहिं डरी॥ ७८॥

त्याई दुखदायिनि तिया नाम मन्थरा जाहि। भूषण-भार शृंगारि तन रिपुहन लखि चष चाहि॥ रिपुहन लखि चष चाहि दौरि पग कूबर मारयो। परो धरणि धरि केश घसीटत तनक न हारयो॥ तनक न हारयो बीर तव भरत जाय रचण किया। उठे त्यागि कुल दाहिनी आई दुख दायिनि तिया॥ ७९॥

उठत कौशला गिरि परीं भरत देखि उठि दौरि। लीन्हे हृदय उठायके आँगन गिरीं वहोरि॥ आँगन गिरीं वहोरि रोय दीन्हों दुहुं भाई। मातु लगाई कण्ठ अश्रु धारा नहवाई॥ नह वाये चषनीरते वीर भरत धीरज धरी। विकल भरत समुझावती उठत कौशला गिरिपरी॥ ८०॥

अञ्चल नयन लगायके आँसू पोंछति मात। तोहिं विना सुत यह दशा उठन न पैयत गात॥ उठन न पैयत गात रामसिय वनहिं सिधाये। पुर परिजन भे विकल लषण सिय वहु समुझाये॥ वहु समुझाये नहिं रहे राम चले सँग लायके। सुनत भरत जलसों भरे अञ्चल पोंछति धायके॥ ८१॥

मातु जगत जन्मयों वृथा भई न केकयि वाँझ। राम सिया अप्रिय भयो अयशमूल जगमाँझ॥ अयशमूल जगमाँझ जासु हित यह मति तोरी। जन्मत हत्यो न मोहि देति विषमाहुर घोरी॥ माहुर दै मारयो जगत कुल कुठारि उपज्यो यथा। नृपगति यह रघुपति विपिन मातु जगत जन्मयो वृथा॥ ८२॥

सुर गुरु द्विज पातक परैं जो जानत यह बात। बाल वालवध अघ अयश गाय गोठ पुर घात॥ गाय गोठ पुर घात मीत नृप माहुर दीन्हे। परधन परतियहानि परै अघ गोवध कीन्हे॥ गोवध निंदावेदको पर अपकारी अघ करै। जो जननी जानहुँ तनक सुर गुरु द्विज पातक परं॥ ८३॥

परघर अग्नि लगावहीं कुपथ पन्थ पग देयँ। वल करि तिय परधन हरैं रण भगि अपयश लेयँ॥ रण भगि अपयश लेयँ मातु पितु विप्र न मानैं। हरिहर पदते विमुख भूत प्रेतन उर आनैं॥ उर आनैं तीरथ कुकृत निज कुटुम्ब दुख लावहीं। जो जानौं तौ अघ परैं परघर आगि लगावहीं॥ ८४॥

लोभ मोह फाँसे रहैं साधु सङ्ग नहिं लेयँ। मीत विप्र कुल कष्ट लखि अशन नीर नहि देयँ॥ अशन नीर नहिं देयँ कूप सर वाग विध्वंसैं। तन पोषक विन तोष गहत विष धन पर अंसैं॥ पर अंशैं जे नित धरैं कुवचन बोलि छाती दहैं। तिनकी गति विधि देहु जग लोभ मोह फाँसे रहैं॥ ८५॥

ते नर जग हो ते मरै करैं जन्म भरि पाप। रणमण्डल अपयश लहैं देहि विप्र गुरु ताप॥ देहि विप्र गुरु ताप वसत घर लाय उजारैं। सन्तसभा नहि वैठि मृषा मुख वचन उचारैं॥ मृषा साखि जग उच्चरैं नित्य रारि उठि गृह करैं। रामसिया जेहि प्रिय नहीं ते नर जग होते मरैं॥ ८६॥

तुम सुत शपथ न खाँचियो राम प्राण प्रिय तोहि। तुम रामहि अति प्रिय सदा विधि गति बाँकी होहि॥ विधि गति बाँकी होहि देहु दूषण जनि काहू। कर्म प्रधान किसान व-

के तुनियत सोइ ताहु॥ बधो तुनियत जगतमें भूप मरे हम वाँचिये। राम चले प्राण न चले तुम सुत अपयश न खाँचिये॥ ८७॥

बड़े भोर मुनि आयगे बैठेहि रैनि बिहानि। भरत बुझाय वशिष्ठ मुनि भूपक्रिया विधि आनि॥ भूपक्रिया विधि आनि दाह सरयूतट दीन्हो। रानिन केर प्रबोध भरत पाँयन परि कीन्हो॥ पाँयन परि करि कर्म सब तिल अञ्जलि दन रागके। भरत सिखाये मृत करम बड़े भोर मुनि आयके॥ ८८॥

हय गय मणि भूषण दये सिंहासन महिसाज। धेनु नगन आयुध चवँरछत्र पात शिरताज॥ छत्र पात शिरताज अमति गनि मुनि जस भाषो। गत श्रत कौन विधान भरत कीन्हो अभिलाषो॥ करि करतूति प्रमाण जस सब प्रकार विधिवत भये। शुद्ध सिद्ध करि काज सब हय गय मणि भूषण दये॥ ८९॥

शुद्ध भये मुनिवर गये जहां राजदरवार। नगर महाजन विप्रजन सचिव सुभट सरदार॥ सचिव सुभट सरदार बोलि पठई सब रानी। भरत शत्रुहन साथ बोलि लीन्हे मुनि ज्ञानी॥ मुनि ज्ञानी बैठारि ढिग मधुर बचन बोलत भये। राजसभा दरबार सब शुद्ध भये मुनि वर गये॥ ९०॥

नृपति प्रेम पूरण कियो तेहिको शोचिय नाहि। जाको यश शशि अर्द्धंगी को नहि देखि सिहाहि॥ को नहि देखि सिहाहि भोग सुरपति सम कीन्हो। राम वियोग कृशानु प्राण तेहि तृण करि दीन्हे॥ राम भूपण तुम शत्रुहन चारि सुवन लहि भगजियो। बिछुरि गयो सुरलोक वर नृपति प्रेम पूरण कियो॥ ९१॥

राम स्वभाव सनेहको कहिय कौन विधि गाय। पितु आयसु तुरतहि उठे सब पुरजन समुझाय॥ सब पुरजन समुझाय सिया लषणहि समुझायो। प्राण तजौं यह जानि सङ्ग करि शोचन आयो॥ शोचन आयो भूपको भूपति वचन सनेहको। धर्मशील गुणको कहै रामस्वभाव सनेहको॥ ६२॥

कठिन कैकयी का कहौं कहतहु कहो न जाय। कुमति कुभागि बरायके दीन्हो अवध लगाय॥ दीन्हो अवध लगाय राम सिय वनहिं सिधाये। पुर परिजन सब शोच भूप हठि प्राण पठाये॥ प्राण गवाँये भूपवर भावी गतिको नहिं कहौं। विधि विमता अति कठिन है कठिन कैकयी का कहौं॥ ६३॥

भूप वचन प्रिय प्राण नहिं भरत सुनौ सतिभाव। सो कुरको सिय शिर धरिय धर्म स्मृति श्रुति गाव॥ धर्म स्मृति श्रुति गाव तजे रघुवर जेहि लागो। मातु सचिव पुर लोग जरत ज्वर नाशहु आगो॥ नाशहु आगौ अवधकी अवधि लगे नृप राज्य तहि। दोष न कछु मानस करौ भूपवचन प्रिय प्राण नहि॥ ६४॥

कहत कौशला पाँय परि पूत सुनहु गुरु बात। भूप सुर रघुपति गये तुम यहि विधि कदरात॥ तुम यहि विधि कदरात अवध उत्पात विचारी। कालकर्म गति वाम कुदिन सुख कीजिय कारी॥ कीजिय गुरु आयसु मुदित पुर परिजन शिर भार धरि। पालि शोच सबको हरौ कहत कौशला पाँय परि॥ ६५॥

भरत नयन धारा चली सुनि गुरुजननी बैन। हाथ जोरि बोले मधुर जल उमड़े द्वौ नैन॥ जल उमड़े द्वौ नैन

सीख भलि दीन्ह गोसांई। मातु कहेउ उपदेश मोहिपर दया सदाई॥ दया सदाईते कहत सचिव मातु गुरु हित भले। उतर देत पातक लहौं भरत नयन धारा चले॥ ९६॥

पाँयन पनहीं नहिं धरी राम विपिन किय गौन। भूप मरे प्रण पूर करि ताको शोचब कौन॥ ताको शोचब कौन घाव यह तीक्ष्ण लाग्यो। यहै पीर नित दहत रयन भरि शोचन जाग्यो॥ शोचन जाग्यों निशि सबै जाति सबै छाती जरी। राम लषण कटिपट तजे पाँयन पनहीं नहि धरी॥ ९७॥

प्रातकाल करि हौं यहै सुनहु सत्य सब बात। धर्म जाय जग अयश लहि नरकहु दुख सहिगात॥ नर कहुदुख सहि गात जन्म भरि सङ्कट होई। सब दुख दाँवा दहौं अनल बरु डारहु कोई॥ डारहु कोय जुवाल ज्वर सकल दोष दुख भरि रहै। जाहुं अनुजयुत विपिन कहँ प्रातकाल करि हौं यहै॥ ९८॥

शरण सामुहे देखिके रघुपति करि हैं छोह। शील स्वभाव सुस्वामिको समुहे जनपर मोह॥ समुहे जनपर मोह रामसिय वाम न काहू। मैं शिशु सेवक नीच कुमति उर प्रकटेउँ ताहू॥ प्रकटेउ विधि अघ अयश लै नीच दास शिश लेखिके। रामसिया करि हैं कृपा शरण सामुहे देखिके॥ ९९॥

भरत वचन लखि रवि जगे रामविरह निशि पाय। भूपमरण कैकय कुमति तिमिर रहेउ पुर छाय। तिमिर रहेउ पुर छाय मुर्छि सोवत नरनारी। लषण सियाको विरह व्याघ्र वृक गर्जत भारी॥ गर्जत भारी भय विकल तारागण मुनि द्विज लगे। दुखद सेज सोवत विकल भरत वचन लखि रवि जगे॥ १००॥

सबके मन सब सुख भयो भरत भलो मत कौन। दुख समुद्र बूड़त सकल जेहि अवलम्बन दीन॥ जेहि अवलम्बन दीन सभा सब उठि भे ठाढ़े। रामचन्द्र सिय दर्श मन्त्र नर वारिधि वाढ़े॥ वारिधि वाढ़े लोग सब भरत मन्त्र सबही लयो। साजि साजि वाहन चले सबके मन सब सुख भयो॥ १०१॥

भरत साज साजत भये मातु सकल पुरलोग। चले चित्रकूटहि भरत कृश तन रामवियोग॥ कृश तन रामवियोग चले सजि साज समाजे। पाँयन पनहीं त्यागि शीश नहिं भूषण राजे॥ भूषण साजे त्यागिकैं भाय मातु सँग सब लये। रामप्रेम पूरण भरे भरत साज साजत भये॥ १०२॥

तमसातीर निवास करि प्रात समाज समेत। सुरसरि देखो जाय तब केवट कहत सचेत॥ केवट कहत सचेत भरत सेना सँग लीन्हे। समुझि निषाद विचारि कपट अन्तरमहँ दीन्हे॥ अन्तर कपट विचारिकै सजग होउ सब घाट धरि। राम जानि वन भरत सजि तमसातीर निवास करि॥ १०३॥

रामकाज जूझहु सुभट भरत रामके भाय। मैं सेवक रघुवीरको लोहे देहुँ अघाय॥ लोहे देहुँ अघाय सुभट विन कटक निहारौ। हय गय रथ जल वोरि पाउँ पीछे जनि धारौ॥ पाउँ न पीछे कोउ धरहु राम काज अरु गङ्गतट। मोर निहोर विचारिकै स्वामि काज जूझहु सुभट॥ १०४॥

पहिरत अगरी धनु धरत भई छींक गति वाम। सगुन सगुनिया कहि चल्यो सगुन सुमङ्गलधाम॥ सगुन सुमङ्गल-धाम भरत नहिं कपट कुचाली। राम मनावन जाहिं सङ्ग ल मातु सुचाली॥ सङ्ग मातु गुरु सचिव सब लोग राम

सोचनि जरत। सहसा कार्य न कीजिये पहिरन लागी वसु धरत ॥ १०५ ॥

समुझि भेट नृप ज्यों चले सकल पुरा धन पट मौन। मिलन साज सब सङ्ग लिये पुरजन परम प्रवीन॥ पुरजन परम प्रवीन मिले मुनिवरकहँ आगे। रामसखा सुनि भरत चले मिलने अनुरागे॥ अनुरागे केवट कह्यो नाम जाति पग जन भये। भरत लग्यो उमंगत नयन लागि भेटि नृप ले चले ॥ १०६ ॥

भरत कुशल पूछ्यो तबै भेंट दियो कीन्ह। तब पद रज लखि कुशल मन प्रभुदर्शन जब कीन्ह॥ प्रभुदर्शन के हेतु सकल दुख दूरि पराने। चलिहैं आपने पाहिं राम जासु सेवक जाने॥ सेवक कहैं पुकारि के मानुषि लखि ठाकुर जबै। है अशोक जनु लखण भ्रम हेतु कुशल पूछी तबै ॥ १०७ ॥

सब सुपास सबको भयो सुरसरि भरत नहाय। रामसखा सेवा करी सबको बास दिवाय॥ सबको बास दिवाय रयनि सब तहाँ गवाँई। एकहि खेवा पार कियो केवट उतराई॥ उतराई दे भेंटयुत चले प्राग मारग लियो। रामदर्श लालच हृदय सब सुपास सबको भयो ॥ १०८ ॥

न्हाय प्रयाग प्रणाम करि दान दीन सुख पाय। भरद्वाज आश्रम गये मिले पूजि बैठाय॥ मिले पूजि बैठाय कह्यो हम सब सुधि पाई। कानन राखहु सह भरत प्राणसम प्रिय रघुराई॥ प्राण समान सनेह पद तजि सहानि जनि हृदय धरि। निशि करि कीन सुपास सब प्रात नहाय प्रणाम करि ॥ १०९ ॥

रामनाम रसना रसिक ध्यान राम सियरूप। श्रवण कथा रघुपति सगुण हृदय चरित्र अनूप॥ हृदय चरित्र

अनूप परत पग मग हग डोलैं। शिथिल सनेह गँभीर राम सिय सुख भरि बोलैं॥ सुख भरि बोलैं रामसिय पथ्य अपथ्यहु निश्चलित। वर्षत सुर जय जय कहत रामनाम रसना ललित॥ ११० ॥

सुन्दर वन गिरि गण मुदित मृग विहङ्ग कपि भाल। प्रमुदित प्रजा समाज सब राजा सुखद सुकाल॥ राजा सुखद सुकाल सकल तरु फल सुखदायक। सुधा सरिस सरि-वारि कर्म अघ औगुणखायक॥ औगुण छल दल दपट दूरि कपट द्विरद केहरि विद्रित। केवट भरत बताइयो सुन्दर वन गिरिगण मुदित॥ १११ ॥

नाथ विटप वट तरु तरे कीन छावनी राम। सिया बनाई वेदिका निज कर ललित ललाम॥ निज कर ललित ललाम राम शुभ आश्रम नीको। मुनिगण कहत पुराण सुनत दिनकरकुलटीको॥ दिनकरकुलमण्डन मही दुख खण्डन कहि जय हरे। रामसिया लक्ष्मण लखौ नाथ विटप तरु वट तरे॥ ११२ ॥

जाय भरत पाँयन परे त्राहि त्राहि भगवन्त। अशरण-शरण प्रताप जग आदि मध्य नहि अन्त॥ आदि मध्य नहि अन्त प्रणत जनरक्षक स्वामी। शील स्वभाव विचारि शरण पद रज अनुगामी॥ अनुगामी शिशु औगुणी धाय आनि प्रभु पद धरे। त्राहि त्राहि रक्षक प्रभो जाय भरत पाँयन परे॥ ११३ ॥

भरत प्रेम रघुवर शिथिल उठे शरीर विसारि। धनुष तीर पट शिर मुकुट जटा दये छिटकारि॥ जटा मुकुट छिट-कारि नयन उमँगे जल धारा। दुहुँ कर लियो उठाय मगन नहि देह सँभारा॥ देह सँभार विचार तजि भाय लाय

उरमें विकल। देखि दशासुरगण लसित भरत प्रेम रघुवर शिथिल ॥ ११४ ॥

छोडि न भावत शिथिल दोउ भाय प्रेम परिपूरि। मन रचि निज हित लायके करि कुतर्क सब दूरि ॥ करि कुतर्क सब दूरि राम पुनि केवट भेटे। लखण भरत पुनि मिले शत्रुहन उर दुख मेटे ॥ मेटि दुसह उर दाह दुख भरन शीश पद धरे दोउ। सकल सभा मुनिगण मगन छोडि न भावत मगन दोउ ॥ ११५ ॥

केवट गुरु आगमन कहि राम उठे सब सङ्ग। धरे जाय मुनिपदकमल भेंटे मुनि धरि अङ्ग ॥ भेंटे मुनि धरि अङ्ग चले आश्रमहि लिवाई। मातन भेटे आय मनहु शिशुधेनु लुगाई ॥ धेनु लुगाई गति मिली सिय सासुनके चरण गहि। रोदन करत विलाप करि केवट गुरु नृपमरण कहि ॥ ११६ ॥

भये शुद्ध मुनि वचन कहि भरत राम सब भाय। सब समाज करुणा हरष मातु सचिव ऋषिराय ॥ मातु सचिव ऋषिराय भरत विनती उठि कीन्हो। श्रीरघुवर सर्वज्ञ सकल गति मति रति चीन्हो ॥ मति गति चीन्हि सनेह सब अवश करिय सोइ आजु लहि। चलिय अवध नृपता करिय भये शुद्ध मुनि वचन कहि ॥ ११७ ॥

आयसु नृप बनको दयो सोई धरि शिर आज। तुमको पितु पुरको दयो पूरण राज समाज ॥ पूरण राज समाज हमहुँ तुम आयसु कीजे। पालिय पितुको बैन जन्म अभिमत फल लीजै ॥ अभिमत फलनि न जग लह्यो पितुआयसु जिन शिर लयो। वचन न खण्डित सो करौ आयसु नृप बनको दयो ॥ ११८ ॥

जो श्रुति कहत सुसत्य है भरत कहत कर जोरि। पितु आयसु शिर राखिये परमधर्म शत कोरि ॥ परमधर्म शत

कोरि तदपि पितु तियवश होई। सन्निपात अतिवात वारु-
णो सेवत सोई॥ सेवत सोई रोगवश वचन कुयोग अपत्य
है। समुझि नाथ कीजै उचित जो श्रुति कहै सो सत्य
है॥ ११६॥

प्रभुरुख लखि मन प्रण कियो गये गङ्गके तीर। जल
उठाय सङ्कल्प करि जो न चलैं रघुवीर॥ जो न चलैं रघुवीर
देह तृणसम तजि डारौ। तन मन अर्पित देखि गङ्गतिय
वेष सुधारौ॥ वेष सुधारौ एक मुख ढिग उपदेश सुधारियो।
सुनु विवेक रामानुजे प्रभुरुख लखि प्रणमन कियो॥ १२०॥

सत्य सच्चिदानन्द हरि राम सकल सुर ईश। ताहि न
सुत भ्राता गनौ सर्वोपरि जगदीश॥ सर्वोपरि जगदीश
शम्भु विधि हरिकारण कर। पद पताल शिर गगन लोक कर
उर गिरि सरवर॥ गिरि सरवर धर अङ्ग सब भरण हरण
थिति पूरि भरि। हठन करौ आयसु धरौ ब्रह्म सच्चिदानन्द
हरि॥ १२१॥

जन पालन खलगण दहन चले विपिन सुरकाज।
महीदेव श्रुति द्विज विकल मुनिपालन तपसाज॥ मुनि-
पालन तपसाज जात दश कण्ठहि मारैं। करि प्रमाण निज
कर्म अवधपुर तिलक सुधारैं॥ तिलक राज लीला करहि
महीमोद सुख निर्वहन। उठहु राम आयसु करौ सुरपालन
खलगण दहन॥ १२२॥

शुभ आनन सुनिकै भरत मगन भये सुख वन्द। भई
अदृष्टि अशीश दै श्रवण सुधा शुभ छन्द॥ श्रवण सुधा शुभ
छन्द भरत आनन्द सिधाये। श्रीरघुवरपदकमल प्रेम धरि
शीश नवाये॥ शीश नाय विनती करी देहु पादुका शिर धरत।
करत अटन तीरथ विपिन शुभ आनन सुनि सिख भरत॥ १२३॥

मगन समाज समेत सो चित्रकूट बन देखि। सुखद राम कर बदन लखि जीवन सफल विशेषि॥ जीवन सफल विशेषि भरत [illegible] सुनाये। निन्दाहेतु गुरु बचन कहे सबकहँ समुझाये॥ सब परोस भेंटे मिले चले सगाज सनेहसों। अवधि त्याग पर राम रुचि मगन समाज सनेहसों॥ १२४॥

राम भरतके प्रेमको को कविवरणत पार। नेम क्रिया [illegible] करी परम आचार॥ कर्म परम आचार [illegible] [illegible] हारे। मति जड़ बरणहि काहु मसक नभ अन्त [illegible]॥ मशक [illegible] किमि पावहुं गगन उड़े करि नेमको। तुलसिदास शठ क्यों कहै राम भरतके प्रेमको॥ १२५॥

वर्णे अवधपुर लोग राज भरत वसे पुर त्यागि। नन्दिग्राम [illegible] [illegible] [illegible] व्रत मुनि निशि दिन जागि॥ निशि दिन मुनि व्रत साधि पादुका नृप करि सेवै। राजकाज सब साज [illegible] पूछन द्विज देवै॥ [illegible] सनातन अवधिदिन राम समागम होय कब। तुलसिदास मुनि व्रत भरत बसि अवधपुर लोग सब॥ १२६॥

इति अयोध्याकाण्डं

समाप्तम् २॥

अथारण्यकाण्डप्रारम्भः ॥



फटिकशिला सुन्दर सुखद बैठे सिय रघुबीर। सुमन लखण आनहिं सुभग सुरभित सुमुख समीर॥ सुरभित सुमुख समीर राम सिय भूषण साजे। अङ्ग अङ्ग प्रति रुचिर कामरति लखि छवि लाजे॥ लखि लाजे रति काम तन इन्द्र-सुवन भरमैं दुखद। परब्रह्म श्रीराम सिय फटिकशिला सुन्दर सुखद॥ १ ॥

समुझि मनुज अवगुण कस्यो हस्यो चोंच तन काग। रुधिर देखि धर सुमनको कीन्ह क्रोध करि त्याग॥ कीन्ह क्रोधकर त्याग लोक लोकन भ्रमि आयो। मति गति विह्वल विकल मोह माया भरमायो॥ मोहअन्ध नारद लख्यो पाय सोख पायँन पस्यो। त्राहि त्राहि रच्छा करो समुझि मनुज अवगुण कस्यो ॥ २ ॥

एक आँखि करि प्रभु तज्यो कर्म कौन वड़ घोर। कृपा-निधान समानको प्रणतपाल वरजोर॥ प्रणतपाल वर-जोर चरित सुर नर मुनि गावैं। चित्रकूट वस सुखद जानि सब आश्रम धावैं॥ आश्रम विदित विचारिकै विपिनसाज सब तन सज्यो। अत्रि जहाँ आश्रम गये चित्रकूटथल प्रभु तज्यो ॥३ ॥

ऋषि अनन्द भेंटत भये देखि लषण सिय राम। आसन वेठारे मुदित पूजे अभिमतकाम॥ पूजे अभिमतकाम जानकी लेन लाई। अनसूया पट दीन नित्य नूतन सुख-

[illegible] सबकागन उपदेश दै पतिव्रत धर्मनि सब दये। आदर [illegible] भये ॥ ४ ॥

[illegible] रघुराय। चले [illegible] पाय॥ महामुदित मन [illegible] मुनि भये [illegible]। [illegible] तप करहिं योग [illegible]॥ होम विनागि सँभारि हरि आशिष [illegible]। मङ्गलमय [illegible] भयो विदा अत्रिसों [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible] मग सुख भये देखि जाय सरभङ्ग। परि-[illegible] प्रफुल्लित अङ्ग॥ प्रेम प्रफुल्लित अङ्ग [illegible]। करि निहोर रचि चिता अग्नि [illegible] लगाई॥ होन अग्नि तन अर्पिकै राम लषण सिय [illegible]। गये धाम श्रीराम लखि बधि विराध मग सुख भये ॥ ६ ॥

मिले सुतीक्षण धायकै पुलकनयन जलधार। जेहि विधि शिव योगीश मुनि ध्यावत हृदि आगार॥ हृदि मन्दिर ध्यावत सदा आये तेयन आजु हैं। देखौं नयन सनेह भरि [illegible] सुख [illegible] हैं॥ अन्तर्यामी धारि मन मूरति नेह लगायकै। राम जगाये प्रेम परि मिले सुतीक्षण धायकै ॥ ७ ॥

सङ्ग गयो मगमें चल्यो जात लखत प्रभु रूप। ऋषि [illegible] आश्रम गये हर्षि [illegible] भूप॥ हर्षि देखि सुर [illegible]। आसन आदर पूजि वेद [illegible]॥ जान ठानि सब पानि प्रभु मधुर वचन बोल्यो भल्यो। शुभ अस्थान बताइये सङ्ग गयो मगमें चल्यो ॥ ८ ॥

शुभ गोदावरि सन्निकट सुन्दर इट सुखधाम। पञ्चवटी कानन करिय अति पावन कीन्ह॥ अति पावन कीन्हस हर्षि मुनिगन सब आई। शुभ थल नरु मग देखि कुटी मङ्गलमय छाई॥ मङ्गलमय कल्याणथल राम लषण सिय शुभ चरित। कहत ज्ञान वैराग्य जनु शुभ गोदावरि वर सरित॥९॥

ज्ञान भक्ति वैराग्य जनु की विधितिय सुत आप। महादेव गिरिजा गणप लीन्हे कर शर चाप॥ लीन्हे कर शर चाप मदन रति ऋतुपति तीनो। परमारथ अरु योग प्रीति जनु नर तन कीनो॥ नरतन कीनो वीररस शान्त और शृङ्गार मनु। कमठ शेष सुरधेनुकी ज्ञान भक्ति वैराग्य जनु॥१०॥

मन मोह्यो मुख कहि वचन शूर्पनखा लखि राम। मदनबाण उरमें लगो सुनहु कुँवर घनश्याम॥ सुनहु कुँवर घनश्याम मोहि दासी अब कीजै। हौं कुमारि छविधाम भगिनि रावण गनि लीजै॥ रावण भगिनी जानिकै रमौ सङ्ग करिकै सदन। सुख सम्पति सिधि पाइहौ मन मोह्यो मुख कहि वचन॥११॥

सत्य कह्यो वाणी मृदुल गजगामिनी विचारि। लषण कुमार बिनतिया मेरे सग यह नारि॥ मेरे सँग सुनि नारि लषणकी ओर सिधाई। लक्ष्मण कह्यो सक्रोध लाज तोहि तनक न आई॥ तन मन लाज न तोहि कछु कहति निलज औरेहि सङ्ग। गई रामपहँ क्रोध करि सत्य कह्यो वाणी मृदुल॥१२॥

हास्य मनुसि धावत भई रामवचन चित चाहि। धरे रूप व्यंकट विकट सभय सिया मनमाहि॥ सभय सिया मनमाहि राम कहि लषण निहारे। लक्ष्मण लाघव ज्ञान नासिका काटि निवारे। काटि निवारे अङ्ग शुभ अशुभ

प्रमन्त्र मुसमई। खरदूषण पहँ गय विकल हास समुझि भारत भई १३ ॥

करि प्रबोध सेना सजौ खरदूषण मन क्रोध। राम उभाये लषणको सिय गिरि राखिय शोध॥ सिय गिरि राखो शोधि दनुजसेना यह आई। भानुयान छपि गये धूरि नभमण्डल छाई॥ छाय धूरि नभमें रहो दुन्दुभि दीरघ अति तजो। सीतहि राखो कन्दरा करि प्रबोध सेना सजौ॥ १४॥

भगहु भाग बोले वचन लखि छवि दूत पठाय। नारि सग्र करि मिलहु नृप कहे दूत यह आय॥ कहे दूत यह आय राम तेहि उत्तर दीन्हो। सुनि खरदूषण क्रोध सुभट लै दर्पित कीन्हो॥ दर्पित डारहिं भल बहु धरि सम्भल असि शक्ति घन। मनहु मेघ वर्षत अचल धरहु धाय बोले वचन॥ १५॥

राम साजि शारङ्ग शर चले विशिख जनु व्याल। कटे विकट पद उर चरण भुज महि गिरहि कपाल॥ भुज महि गिरहि कपाल विकल भाजहिं लखि शायक। खलदल सभय सशोक निरखि खरदूषण धायक॥ धाय क्रोधि शायक तजे रहे पूरि दिशि गगन धर। सजि पावकशर जारि तम राम साजि शारङ्ग शर॥ १६॥

खलदल वृन्द निहारिके प्रभु मन कीन विचार। रामरूप कीनो कटक सब लरि मस्यो अपार॥ सब लरि मस्यो अपार एक एकन धरि मारैं। कौतुक लखि सुर मगन रामको चरित निहारैं॥ चरित निहारि पुकारि सुर वर्षि प्रसून सुधारिके। जय जय जय महिभारहर खलदल मरन निहारिके॥ १७॥

खरदूषण त्रिशिरा परे शूर्पणखा लखि नैन। रोवत रावणकी सभा कहि कहि आरत बैन॥ कहि कहि आरत बैन देहकी सुरति विसारी। शिर धरि डेरा करयो खबर

नहिं तोहि सुरारी॥ खबरि न तोहिं निहारु मोहिं अङ्ग सकल शोणित भरे। जुरे जाय भ्राता समर खरदूषण त्रिशिरा परे॥ १८॥

ताहि सङ्ग वरभामिनी रतिरम्भाछवि छीन। रमा भारती शिवतिया लागहि सकल मलीन॥ लागहिं सकल मलीन कोटि शशिसम द्युति शोभा। खग मृग पशु जड़ जीव वाहि लखि विकल न को भा॥ विकल नारि नर मुनि मगन तजत योग जप यामिनी। दामिनि वरणत द्युति कहां ताहि सङ्ग वरभामिनी॥ १३॥

अवनि असुर खण्डित करैं प्रबल शत्रु वरिवण्ड। देखत बालक काल सम अति विशाल भुजदण्ड॥ अति विशाल भुजदण्ड मदन जनु वेष संवारें। मुनि मन भये अनन्द विपिन विचरत भय डारे॥ भय डारे मुनि जय करहिं खल-दल दलि सुर दुख हरैं। भूपकुमार अपार छवि अवनि असुर खण्डित करैं॥ २०॥

करि प्रबोध रथ चढ़ि चल्यो रावण मन अनुमानि। जहँ मारीचस्थान शुभ मन्त्र तन्त्र मन ठानि॥ मन्त्र तन्त्र मन ठानि गयो उठि आदर कीन्हो। मारीचहु मन लख्यो कछू स्वारथ मन दीन्हो॥ स्वारथ घाते विचारि जिमि अङ्कुश धनु अहि छल छल्यो। नवै बिलारि विचारि छल करि प्रबोध रथ चढ़ि चल्यो॥ २१॥

तात हेतु स्वारथ करौ कथा समस्त सुनाय। हरहुँ वाम नृप तनयकी वैर सकल बुझि जाय॥ वैर सकल बुझि जाय होउ मृगकपट बनाई। भगिनी लखि दुख मोहि करहु वन मोरि सहाई॥ मोरि सहाय विचारिके निज कुल मङ्गल मन धरौ। बात जात घातक भयो तात हेतु स्वारथ करौ॥ २२॥

सुन सुन गाढ़ि न नर गनो मैं जानत बल ताहि। बिन-कपार मोहि मारिथो गया समुद्र निरवाहि॥ गयो समुद्र निरवाहि मारि ताड़का सुबाहो। भञ्जो गिनको दण्ड जनक-कन्या की ब्याहो॥ जनकसमाज नृपाल बहु मान मर्दि भृगु-पति हनो। ताहि विरोध न कुशल है सुनु सुन ताहि न नर गनो॥ ९३॥

ज्ञान सिखावत मोहिकहँ मैं सुर नर बश कौन। उत्तर देहि न उठि चले डरडरात पुरतौन॥ डरडरात पुरतौन समुझि मन देखि बिचारो। यहि मारे यश नरक राम कर सुरपद भारो॥ सुरपद भारो पाय हौं चल्यो नाय शिर गम तहँ। रावण आतुर चढ़ि चल्यो ज्ञान सिखावत मोहि-कहँ॥ ९४॥

मायामय छाया करो सिय आयसु उर मानि। मृग देख्यो शचि हेममय खचित रतन मणिखानि॥ खचित रतन मणि-खानि लखत जानकी सुखारी। यहि हति सुन्दर छाल करिय प्रभु धनुशरधारी॥ धनुशरधारी मन समुझि जानत आगमको यरो। चले लषण सिय सौंपिकै मायामय छाया करो॥ ९५॥

मृग मारयो दूरी निकरि राम कठिन शर तानि। हा लक्ष्मण प्रथमैं कयो पीछे राम बखानि॥ पीछे राम बखानि कहन जानकी बिचारी। कही लषणसों बात भाय तव सङ्कट भारी॥ सङ्कटबश सुमिरत तुम्है जाहु तुरत धनुबाण धरि। असुरसैन्य अरिदल ग्रसे मृग मारयो दूरी नि-करि॥ ९६॥

राम न सङ्कट कहुँ परैं काल जुरै रणमाहि। सकल सुरा-सुर नरि मरैं समर जीति हैं नाहि॥ समर जीति हैं नाहि

शोच मनमांझ निवारो। राम दीनता बचन बदन कबहूँ न उचारो॥ कबहुं न संशय आनिये सत्य बचन मेरे धरो। छली देश निशिचर बिपिन राम कबहुं सङ्कट परो॥ २७॥

कह्यो बचन सहि नहिं गयो उठ्यो रेख धनु खाँचि। यती-वेष दशकण्ठ शठ आयो सियढिग याँचि॥ आयो सिय-ढिग याँचि जानकी ताहि बुलायो। देन लागि फल मूल दुष्ट तब बचन सुनायो॥ बचन सुनाय सुखद कहि बँधो भीख नहि कहुँ लयो। भावीवश सिय रेख तजि बचन कह्यो नहिं सहि गयो॥ २८॥

रेख त्यागि सिय जब गई रथपर लई चढ़ाय। गह्यो गगन भयते मगन इत उत देखत जाय॥ इत उत देखत जाय सिया रावण जब जान्यो। कहत पुकारि कृपाल नाथ कहुँ दूरि परान्यो॥ दूरि परान्यो लषण कहँ मोहिं दशानन हरि लई। परो विवश दशकण्ठके रेख त्यागि जब सिय गई॥ २९॥

राम राम कहि खग चल्यो गृध्र जटायू देखि। रोक्यो रथ रघुवरतिया दशशिर हरो विशेखि॥ दशशिर हरो विशेषि मारि रथ भूतल डार्‌यो। सौतहि लई छुड़ाय विकल दशशिर महि पार्‌यो॥ दशशिर पार्‌यो भूमितल छ्त्र चूर उर यल हल्यो। मुकुट अस्त्र शस्त्रहि दपट राम राम सुनि खग चल्यो॥ ३०॥

अति रिस रावण रण रच्यो तीक्षण काढ़ि कृपान। दल्यो पक्षमहि खग गिर्‌यो कहि मुख कृपानिधान॥ कहि मुख कृपानिधान साजि स्यन्दन सिय लीन्हों। लै नभपथ फिर चल्यो गीध विह्वल गति कीन्हों॥ विह्वल गति कपि सिय

जने नूपुर है कपि कर सच्यो। तरु अशोकतर राखिक अति सिय रावण फिरि रच्यो ॥ ३१ ॥

लषण बात नीको नहीं बन सिय आये त्यागि। असगुन भय मन हान अति सिय बिन उर बिरहागि॥ सिय बिन उर बिरहागि लषण पद गहि समुझाये। शोचत आश्रम देखि नयन उमड़े जल छाये॥ उमड़े जल छाये बिकल खोजत गिरि बन मग मह्यो। रुधिर धनुष आगे पर्यो लषण बात नीको नहीं ॥ ३२ ॥

राम राम रसना रटै लग्यो गीधपति जाय। कह्यो कथा सिय हेतु गति रामनयन जल छाय॥ रामनयन जल छाय गाढ़ धरि वचन उचारे। परमारथ तुम तात प्राणधन तृण करि डारे॥ तृण समान प्राणनि दयो कोपरहित रण-मह्ँ कटे। जियो भोग भोगो जगत राम राम रसना रटै ॥ ३३ ॥

दर्शलागि जीवन रहेउ भाग उदय रघुराय। जेहि बिरञ्चि शिव सेवहीं लियो गोदमाहि आय॥ लियो गोद माहि आय राम कहि प्राण गँवाये। भयो तुरत हरिरूप चारि भुज अस्त्र सुहाय॥ अस्त्र सबै शिर मुकुट वर पीताम्बर भूषण गहेउ। जोरि पाणि अस्तुति करत दर्शलागि जीवन रहेउ ॥ ३४ ॥

परमधाम गो गीधपति क्रिया कीन्ह श्रीराम। चले बिरहअङ्कुर भये बिपिन शावरीधाम॥ बिपिन शावरीधाम अर्घ आसन सब साजे। धूप दीप फल सुजल धरे रघुपति-के काजे॥ सब सप्रेम पायन परो दर्श पाय पावै न गति। राम तुम्हारे रूप लखि परमधाम गो गीधपति ॥ ३५ ॥

काठ साजि रचिकै चिता सिय सुधि कह्यो बहोरि।

शवरी जरि सुरगति गई क्रिया करी प्रभु कोरि॥ क्रिया करी प्रभु कोरि चले वन दूनौ भाई। सुनिगण मिलत अनेक दर्श अभिमतफल पाई॥ पावहि अभिमत जीव जड़ करहिं योग जेहि प्रभु निता। साजि साजि सुरगति लही काठ शावरी रचि चिता॥ २६॥

रामसिया खोजत गये पम्पा सुभग तड़ाग। सुन्दर जल तरु विहँग मृग मुनिगण सदन सुवाग॥ मुनिगण सदन सुवाग करत जप तप मन लाई। देखि सरोवर मुदित कीन मज्जन रघुराई॥ रघुराई मज्जन करयो नारद मुनि आवत भये। तुलसिदास सुर सुभग सर रामसिया खोजत गये॥ २७॥

इति अरण्यकाण्ड समाप्तः॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड प्रारम्भ।

चले विपिन लक्ष्मण सहित मिले पवनसुत आय। विप्र रूप पूछत भयो को तुम कहो बुझाय॥ को तुम कहो बुझाय विपिन सुकुमार सलोने। नृप दशरथके सुवन तासु आयसु तजि भौने॥ तजेउ भवन आये विपिन नारि गई शोध न लहत। खोजत हम द्विज कवन तुम चले विपिन लक्ष्मण सहित॥ १॥

ले सुग्रीव मिलाइयो प्रभु गुण मन अनुमानि। कही कथा सब परस्पर नूपर दये बखानि॥ नूपर दये बखानि राम लोचन भरि लावे। विरह विकल प्रभु देखि कीश बहु विधि समुझावे॥ समुझाये सुग्रीव प्रति राम लषण सुख मान्यो। प्रभु भेंटे हनुमन्त उर लै सुग्रीव मिलाइयो॥ २॥

प्रभु पूछे कारण कवन बसत विपिन कपिराज। कथा कही सब बालिकी कोपि कहा रघुराज॥ कोपि कहा रघुराज बालि एकहि शर मारौं। सम्पति अधिक तिय सहित तोहि आनि निकट सँवारौं॥ तिलक उँवारौं कालहि नहिं मिलहि नाम अपराध भवन। तौ न धनुष शर कर धरौं मित्र कहिय कारण कवन॥ ३॥

तब सुग्रीव दिखाइयो बालि महा बल बीर। गर्जि नगर बाह्यो ताहि चल्यो क्रोधि रणधीर॥ चल्यो क्रोधि रणधीर गर्वे पुनि दूतो भाई। शरणागत प्रण समुझि बाण मार्यो रघुराई॥ मारा बाण प्रमाण करि गिरो अवनि मुरक्ताइ। राजल लोचन पुलकि तब सुग्रीव दिखाइयो॥ ४॥

ध्यान रामछवि उर धरी बाणी कहत कठोर। नर गति हरि गति तजि दई सम प्रकाश सब ठौर॥ सम प्रकाश सब ठौर जगत अप्रिय कछु नाहीं। जो अप्रिय तब होय सकल दुःख सन विलाहीं॥ सङ्ग रङ्क नहिं चाहिये विधि पिपील रचना करी। जयति हरे श्रीराम कहि श्याम रामछवि उर धरी॥ ५॥

प्राण गये श्रीराम कहि नारि विकल परलोग। सुग्रीवहि आयसु दयो करहु मृतकक्कर योग॥ करहु मृतकक्कर योग लषण सबको समुझायो। राज हेतु सुग्रीव अनुज सँग नगर पठायो॥ नगर बुलाये द्विज सकल अङ्गदादिकपि बोध

लहि। वालिशोच दूषण हरो प्राण गये श्रीराम कहि ॥ ६ ॥

रामनाम कहि नृप करो तिलक सारि शिरताज। राम कृपानिधि जगतमें विरद गरीबनिवाज॥ विरद गरीबनिवाज कियो सुग्रीव सुखारो। गिरिवन निकुञ्ज विहात वालि डर कम्पित भारो॥ कम्पित डर निरभय नहीं जात दुसह ज्वर हर जरयो। धाम वाम नृप यामको रामनाम कहि नृप करयो ॥ ७ ॥

राजनीति कहि प्रभु रहे शैलप्रवर्षण छाय। अनुज सहित सुन्दर सदन राखे देव बनाय॥ राखे देव बनाय निरखि वर्षाऋतु आई। घनघमण्ड नभ घोरं मनहु रविपर निशि धाई॥ निशि धाई रवि भजि गये नीरवुन्द वाणन गहे। तड़ित कृपाण सुइन्द्रधनु राजनीति कहि प्रभु रहे ॥ ८ ॥

करि मनोज डेरा जगत सजि आयो करि सैन। असित पीत सित घन अरुण तनि वितान सुखचैन॥ तनि वितान सुख चैन तड़ित ध्वज सुन्दर राजै। निशि दिन घन घहरात मनहु वर दुन्दुभि वाजै॥ दुन्दुभि बाजै मोर पिक वक दादुर वन्दी लगत। विरहवन्त कारण सज्यो करि मनोज डेरा जगत ॥ ९ ॥

सुरपतिकै गिरिगण ग्रसे वुन्दवाण झरिलाय। कहुँ कहुँ मारत वज्रशर घनगज शीश चढ़ाय॥ घनगज शीश चढ़ाय मोर हर वल पुर आये। वाजे नौवति जीति कोकिला सुयश सुनाये॥ सुयश जनाव वितान तनि वेलि विटप गृह गिरि वसे। मुद्रित करि पाषाण जड़ सुरपतिकै गिरिगण ग्रसे ॥ १० ॥

कै समुद्र महिपर चढ़यो महि मुद्रित करि दीन। सर सरिता जलदल परे शरपञ्जर महि कीन॥ शरपञ्जर महि

कौन नदित बड़वागिनि मानो । वर्षत नभ चढ़िवारि त्रसित गिरि दिग्गज जानो ॥ दिग्गज कम्पहिं वन सदल नाद वाद दशदिशि बढ्यो । कम्पमान महि गहि धरो के समुद्र महिपर चढ्यो ॥ ११ ॥

शरद्भूप आयो मिलन धवल रूप द्युति साजि । कमल छोक खञ्जन चवर द्रुत उठे जग बाजि ॥ द्रुत उठे जग बाजि चन्द्र जनु छत्र सुहायो । सरि सर निर्मल बारि पाँवड़े पावस नायो ॥ पावस दीन्हो तिलक जग शरदराज राजत थलन । पावस गयो प्रणाम करि शरद्भूप आयो मिलन ॥ १२ ॥

शीश शोध अब लीजिये जाइ जहाँ कपिराज । खबरि बिसारी सुग्रीव सुपर पाय नारि धन राज ॥ पाय नारि धन राज बालि अस तुम्हें पठाऊं । कर धरि कीनो सखा ज्ञान दै मन समुझाऊँ ॥ मन समुझाय समेत कपि आप गमन पुर कीजिये । वानर भालु पठाय करि सियाशोध अब लीजिये ॥ १३ ॥

लक्ष्मण चले लिवायके प्रीति प्रबोध रिसाय । वानर भालु बुलायके गये जहां रघुराय ॥ गये जहां रघुराय मिले पांयन कपि नाये । रघुपति हँसि मृदु प्रकृति पुलकि गहि कण्ठ लगाये ॥ कण्ठ लगाय बुझाय कपि विनय करी चित लायके । वानर भालु विशाल भट लक्ष्मण चले लिवायके ॥ १४

कपि लक्ष्मण सबसों कहेउ सिय सुधि खोजहु जाय । पाम्ब दिवस बिन सुधि लिये हमहि मिल्यो जनि आय ॥ हमहिं मिल्यो जनि आय बहुरि अङ्गदहि बुलाये । तुम मारुत-सुत साथ जाहु दक्षिण शिरनाये ॥ दक्षिण सिय शोधहु सुभट भालु नील नल सुख लह्यो । मुँदरी दै हनुमन्तको तब कपि लक्ष्मण सब कह्यो ॥ १५ ॥

चले सुभट व्यङ्कट विकट खोजत गिरि सर खोह। राम-काज लवलीन मन बिसरयो तनकर छोह॥ बिसरयो तनकर छोह सघन वन जाय भुलाने। तृषावन्त भे विकल बिना जल सब अकुलाने॥ अकुलाने हनुमन्त लखि चल्यो ववर पैठयो सुभट। कथा सुनाई ऋषि प्रभा चले सुभट व्यङ्कट विकट॥ १६॥

जल फल खाय प्रणाम करि तेहि पठये जलतीर। सोस प्रेम पहुंचो तहां लक्ष्मण श्री रघुबीर॥ श्रीरघुकुलमणि वीर पठे बदरीवन दीन्हो। कपि सब सागरतीर सीय हित चिन्ता कीन्हो॥ चिन्ता कीन्हो कपिन सब सम्पाती लखि कहत हरि। धन्य जटायू सुभटको जल फल खाय प्रणामकरि॥ १७

सुनि सब कथा प्रणाम करि गये मुदित सम्पाति। भये पच्छ जल दीन शुचि कही पच्छ गति भांति॥ कही पच्छ गति भांति धरहु धीरज सब भाई। पैहौ सीतहि तबहिं पार सागर जो जाई॥ सागर शत योजन उलधि प्रबल वीर जाइ हि जो परि। सो सिय पावहि सत्य सुनि कपि सब कथा प्रणाम करि॥ १८॥

गयो कहत यह गीधपति कपि सब करत विचार। बहु रत संशय जिय कहैं अङ्गद जातो पार॥ अङ्गद जातो पार कहत ऋक्षेश बुढ़ाई। नल औ नील सकोच जानकी कौन दिखाई॥ कौन दिखाई जानकी पुनि प्रचारि कह ऋच्छ-पति। कहा समुद हनुमन्त तोहिं गयो कहत यह गीध पति॥ १९॥

इति श्रीकिष्किन्धाकाण्ड समाप्तः।

... भाग, ... जग मूर्छा विधि हरि हर दिग्पाल ... ॥ ९ ॥

... सिय पावक बारिकै तेल वस्त्र घृत बोरि। चढ्यो ... विधि... करतें तोरि॥ विधिशर करते तोरि ... दीन्हों आगी। चण महँ सब पुर बारि विभीषण ... न लागी॥ भवन भस्म भूषण भये समुद्र सुदर्प निवा- रिकै। सिय मणि लै कूदन भयो अति रिस पावक बारिकै॥ १० ॥

करि प्रबोध मायो सकल मधुबनके फल खाय। हर्षि ... प्रभुपदकमल उर भेंटे रघुराय॥ उर भेंटे रघुराय दीन्ह मणि प्रभु हँसि लीन्हों। सियदुर्दशा निहारि पवनसुत प्रकटित कीन्हों॥ प्रकटित कीन्हो सियदशा सुनत हाल रघुपति विकल। विजय करिय सिय आनिकै करि प्रबोध मायो सकल॥ ११ ॥

रामवचन कपिदल चल्यो दिग्गज अहि सकुचन्त। भालु बनी मर्कट सुभट यूथ यूथ बलवन्त॥ यूथ यूथ बलवन्त अन्त को पावहि लेखा। राम दटकको विभव रूप जानहि जिन देखा॥ जिन देखा ते जानहीं नभ अहि पुर भूतल हल्यो। समुद्र तीर डेरा परे रामवचन सुनि दल चल्यो॥ १२ ॥

वचन सुनत रावण कह्यो मन्त्री मित्र बुलाय। मन्त्र कह्यो पूछन सबहि कह्यो विभीषण आय॥ कह्यो विभीषण आय मन्त्र मधि मानिय मेरो। सीतहि सौंपहु जाय मिलहु रघुनाय सवेरो॥ सुनि गुनि उठि लातन हत्यो मितहि भ्रातको उर दह्यो। चल्यो हृदय अनुमान करि वचन सुनत रावण कह्यो॥ १३ ॥

मन गलानि हरिहै कवन चल्यो ताकि प्रभु पांय। दीन

बूड़ि जायँ सुर कुम्भजौ शेष डारि महिभार। वारि खाय बड़वानल शम्भुचन्द्र शिर डार॥ शम्भुचन्द्र शिर डारि चारि-मुख सृष्टि नशावै। गिरि सर सागर डारि धरणि तजि धीरज धावै॥ धीरज धरणी डर तजै जलधि मिले गिरि ह्वै रजौ। राम-वाण खल ना दहै बूड़ि जायँ सुर कुम्भजौ॥ ५॥

आसु देहु आयसु मुदित लखौं वाटिका जाय। सुन्दर फल लागे विटप भोजन करौं अघाय॥ भोजन करौं अघाय जानकी उत्तर दीन्हो। सुत रखवारे प्रबल पवन परवेश न कीन्हो॥ पवन सुर परवेश नहिं लखि न सकहिं रवि शशि उदित। कह कपि यह भय तनक नहिं आसु देहु आयसु मुदित॥ ६॥

करि प्रणाम जूझो सुभट लग्यो फूल फल खाय। मूल उखारे सकुदनहँ रक्षक पहुँचे जाय॥ रक्षक पहुँचे जाय मर्दि महि गर्द मिलाये। पुरी परग्रो अतिशोर अक्ष रावण पठवाये॥ अक्ष वृक्ष लै कपि हन्यो मेघनाद आयो विकट। शिरे प्रबल रघुपति सुमिरि करि प्रणाम जूझो सुभट॥ ७॥

ब्रह्मवाण कपि मानिके धरि लै गयो बहोरि। रावण आगे करि दियो कहि कटु वचन करोरि॥ कहि कटु वचन करोरि कह्यो रावण तव दानी। को मर्कट दूत कहां काहि बल फलकर हानी॥ फल दल मूल विध्वंसि करि रण कीन्हो अवराधिके। कहि कपि तव सुत छल कर्‍यो ब्रह्मवाण कर साधिके॥ ८॥

विधि हरि हर दिगपाल सब व्याल यक्ष गन्धर्व। पितृ प्रेत पशु मनुज जग सचराचर सुर सर्व॥ सचराचर सुर सर्व गगन धरणी गिरि घेरे। मैं तैं पुर परिवार धाम धन तिय सुत तेरे॥ तिय सुत तेरे लोक सब भवे रहे पुनि होहि

अथ लङ्काकाण्ड प्रारम्भ ।

बँधे सेतु आरम्भ भयो चलो विपुल कपिसैन। गर्जहि मर्कट भालु सब आये रावनसैन॥ [illegible] महोदधि के सुरम्यायो। [illegible] [illegible] [illegible]॥ [illegible] भयो। [illegible] सेतु [illegible] हेतु [illegible] [illegible] सागर भयो॥ १॥

[illegible] सागर [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥ [illegible] [illegible] लाज [illegible] नवाई। सागर [illegible] भयो सेतु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥ २॥

[illegible] [illegible]॥ [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] भरे [illegible] [illegible]॥ [illegible] [illegible] रावण भट यूथ हैं। हारे भट रावण [illegible] [illegible]॥ ३॥

[illegible] हल्यो पग नहि हल्यो [illegible] हल्यो गिरिशृङ्ग। उदय-अस्त कपिन भयो मन्दर [illegible] भङ्ग॥ मन्दर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] दिग्गज [illegible] [illegible]॥ चारि [illegible] [illegible] [illegible] ढहि ढहि [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] भट [illegible] हल्यो पग नहि [illegible] ४।

बन्धु दाया हृदय लीन्हे तुरत बुलाय॥ लीन्हे तुरत बुलाय तिलक पुनि निज कर सारो। रावण पुर सब दियो मिल्यो जब शीश उतारो॥ शीश उतारे शिव दयो तब पाये लङ्का भवन। सो पुर धन पांवन परत मन गलानि हरि है दवन॥ १४॥

लङ्का निकट बैठारिके पूछो सागर पाय। केहि विधि उतरै कपिकटक तेहि विधि करिय उपाय॥ तेहि विधि करिय उपाय सिन्धु करि मन तट कीन्हो। कुद्ध न द्रवहिं विशेषि तबहिं प्रभु धनु कर लीन्हो॥ धनु कर शर सारो विकल मिल्यो रत्न तै लायके। पद्म देहि कपिकटकहूँ लङ्का निकट बैठायके॥ १५॥

नाथ सुगम मारग रच्यो जल महि पावक पौन। विटप शैलसर जड़ रचे इनको सिखवत कौन॥ इनको सिखवत कौन करहु प्रभु एक उपाई। गिरिगण बाँधहिं सेतु नील नल दूनहुँ भाई॥ दूनहुँ भाई बांधि हैं शैल सकल मर्कट सच्यो। आपु प्रताप सहाय मम नाथ सुगम मारग रच्यो॥ १६॥

सुनि साँचे सागर वचन कपिपति कीश बुलाय। धावहु गिरि तरु आनिके नलहि देहु सुख पाय॥ नलहि देहु सुख पाय धरहिं गिरि सागरमाहीं। सुनि आयसु कपिवृन्द चले चहुँ दिशि श्रम नाहीं॥ श्रम नहिं शिर वह्नुल करहिं कोटि कोटि गिरि धरि रचन। देहिं आनि नल नीलकहँ सुनि साँचे सागर वचन॥ १७॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्तः॥

दाई॥ दुखदाई मारे सकल रावण मन शोचत चले। जय जय रघुवंशमणि मारि दुष्ट रण दलमले॥ ६॥

रण रावण आतुर चल्यो असुरसेनदल साथ। करत युद्ध देवन डरत धरत शरासन हाथ॥ धरत शरासन हाथ चलत महि दिग्गज डोलैं। क्षुभित उदधि जल छन्न शैल राशि महिधर बोलैं॥ महिधर बोलै अति सभय रवि मुद्रित सब मल हल्यो। सुभ प्रचण्ड रण मण्डियो रावण रण आतुर चल्यो॥ १०॥

हारि गये दल दश [illegible] चल्यो बालिसुत वीर। मुकुट धरे प्रभु पाँयतर मिले हर्षि रघुवीर॥ मिले हर्षि रघुवीर बालिसुत कारज भाख्यो। गढ़ घेर्‍यो करि जन्त्र जहां रावण तेहि राख्यो॥ राखि वीर पुर भयो दयो लङ्क [illegible]। भयो युद्ध अद्भुत समर हारि गये दल दश [illegible]। ५

मेघनाद योद्धा सुभट लक्ष्मण हन्यो विचारि। भई मूर्छा प्रभु लखे हनुमत तीन प्रचारि॥ हनुमत तीन प्रचारि [illegible] लेन पठायो। दुष्ट हन्यो कपि बीच शैल शिर राखि [illegible]॥ [illegible] भरत तानि [illegible] सायक [illegible]। राम कहत भेंटत कह्यो लक्ष्मण घाय पीड़ा [illegible]। ६

[illegible] भेंट्यो भरत कह्यो कीन चतुराय। [illegible] पठवौं तोहि [illegible]। पठवहुं तोहि [illegible]। तब [illegible] जाऊँ जहँ प्रभु [illegible]॥ प्रभु [illegible] विचारि के दोउ पग धरि पावन परस। धन्य धन्य हनुमन्त जग [illegible] सनेह भेंट्यो भरत। ७

[illegible] देव उपाय। सुने रावण [illegible] कहे [illegible]। [illegible] बल [illegible] भयो। ८

[illegible] दुन्दुभी बजाय। लक्ष्मणको घायलु [illegible] लङ्कपुर जाय॥ [illegible] लङ्कपुर माहि हनु [illegible] नाहिं। [illegible] हनु-

[illegible] भरत हनुमत कह्यो गाय [illegible] सिय राम। [illegible] युगल जीति असुर संग्राम। जीति असुर [illegible] देन मन स्वपल बसाये। राज विभीषण दीन्ह [illegible] पाये॥ नारद शारद शम्भु शुक [illegible] पावन [illegible] सो प्रभु आवन पवनसुत सुनहु भरत [illegible]॥१९॥

[illegible] भरत आनँद लयो परम [illegible]। [illegible] सुख [illegible] कहत कोटि [illegible]। [illegible] भरत पुनि नयन उघारि। पुनि हनुमत कह राम [illegible] आगे सुखभारि॥ सुखभारि उठि [illegible] हिये भेंटि [illegible]। अश्रुपात पावन पुलकि [illegible] भरत [illegible] [illegible]॥२०॥

[illegible] गनेश के कहा देहुँ [illegible]। [illegible] [illegible] करो मनुज सम बात॥ [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]॥ आवत देखि [illegible] [illegible]। [illegible] बहुरि [illegible] [illegible] सन्दे- [illegible]॥२१॥

अवध आय प्रकटी सबै [illegible] पुरजन [illegible]। [illegible] [illegible] लखन सीय [illegible] रघुराय॥ [illegible] रघुनाथ [illegible] पुरवासी। [illegible] [illegible] [illegible] आये। [illegible] [illegible] लखि [illegible]। चले नगर बाहिर [illegible] [illegible]॥२२॥

[illegible] हनुमन्त ले देखन [illegible]। नगर [illegible] देखि कै उतरे कृपानिधान॥ उतरे कृपानिधान [illegible] गोसाईं। आशिष देय [illegible] पूछी कुशि-

पूजा शङ्करकी करी सेतु सिया दरशाय। पञ्चवटी कुम्भजहि मिलि अत्रि आदि ऋषिराय॥ अत्रि आदि ऋषिराय मिले अनसूयहि जाई। आशिष आयसु पाय चले आगे रघुराई॥ रघुराई आये तहाँ चित्रकूट मङ्गल घरी। दैभन्द्वाय मुनिगण मिले पूजा शङ्करकी करी॥ १४॥

आयसु पायो मुनि दयो चले हर्षि श्रीराम। यमुनहि पूजि सप्रेममय प्रमुदित कीन्ह प्रणाम॥ कीन्ह प्रयाग प्रणाम मिले मुनिगण प्रभु जाई। करि मज्जन सिय सहित विप्र सान्यता बड़ाई॥ मान बड़ाई पूजिकै पुनि विमान आतुर गयो मिले निषादहि गङ्गतट आयसु पायो मुनि दयो॥ १५॥

कपि हनुमन्त पठाइयो भरत कुशलता देखि। आवत सिय लच्छण सहित यह तुम कहौ विशेषि यह तुम कहौ विशेषि प्रातउठि भरत निहारौं। पुरबासि न पुनि मिलौं मातुको शोच निवारौं॥ शोच निवारौं अवधको सब प्रकार समुझाइयो। भरत प्रबोधन हेत प्रभु कपि हनुमन्त पठाइयो॥ १६॥

एहि निसि डर ताड्यो रघुपति करुणापुञ्ज। लै आयो मन्दिर परम सुजल धोय पदकञ्ज॥ सुजल धोय पदकञ्ज रुचिर आसन बैठायो। धूप दीप नैवेद्य फूल फल अङ्कुर धार्यो॥ [illegible] पाइयो। प्रात [illegible] बिमान चढ़ि [illegible] निसि डर ताड्यो॥ १७॥

भरत कुटि हनुमन्त जब लख्यो शरीर कृश छीन। जटा शीश मुनिवेष धर प्रेम पाँवरी लीन॥ प्रेम पाँवरी लीन राम सिय लखन उचारो। [illegible] हनि डारो॥ [illegible] छिन आहि [illegible]। [illegible] देखि हनुमन्त जब॥ १८॥

[illegible] नृप उपज्यो विप्र न [illegible] दीन। देव [illegible] दुन्दुभि [illegible] [illegible] नवीन [illegible] [illegible] गीत [illegible] [illegible] सुनि [illegible] राम जय जय [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] सुर [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥

[illegible] अपार। निगम [illegible] ॥ [illegible] हित [illegible] लीला [illegible] ॥ [illegible] बजायकै। [illegible] सुनायकै ॥ ५ ॥

उठि शङ्कर जय जय करत राम स्वरूप तुम्हार। मङ्गल-मय मूरति मधुर सुमिरत सब दातार॥ सुमिरत सब दातार नाम सुख सुन्दर ध्यावै। गुणगण पावन गाय तरत भव-सिन्धु सुख पावै। सुख पावै मुनिगण भनहिं ज्ञान ध्यान सो ध्यावहि चहत। रविकुलकमलदिनेश प्रभु उठि शङ्कर जय जय करत ॥ ६ ॥

सुरपति करत प्रणाम करि [illegible] राम सुरूप। प्रति [illegible] अपार गुण बरणत वेद अनूप॥ बरणत वेद अनूप [illegible] नत [illegible] ललित राम [illegible] निहारि॥ ताहि निहारे [illegible] तपत बचे सोह

साईं॥ दुरिताईं प्रभु भेंटिके भरत हृदय भगवन्त तें। अति सनेह दूरि नयन भरत सङ्ग हनुमन्त तें॥ २३॥

मिले सकल पुर जन मुदित राम चरित यह कौन। सब जानत पुनहि मिले हमकहं राम प्रवीन॥ हमकहँ राम प्रवीन जेहि सकल नर नारी। यथा योग्य मिलि सबहि बहुरि भेंटी महतारी॥ भेंटी महतारी सबै प्रथम कैकयी पदै हित। विरहविथा नाशी सकल मिले सकल पुरजन हित॥ २४॥

इति लङ्काकाण्डसमाप्तः॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भ।

राम लखन आये कुशल घर घर मङ्गल साज। पुरी भई अमरावती रामराज्यके काज॥ रामराज्यके काज भरत सब साज सजाई। सुर गन्धर्व मुनीश सकल आये सुरसांईं॥ सुरसांईं मङ्गल सजे बजे अवध दुन्दुभि विमल। वर्षि सुमन जय जय कहत राम अवध आये कुशल॥ १॥

सुभ सिंहासन सुचि रच्यो रघुपति बैठे आप। भूषण जटित नग जगमगत कोटिन भानुप्रताप॥ कोटिन भानुप्रताप वेदध्वनि विप्र उचारैं। छत्रचँवर धनुबाण दण्ड भरतादिक धारैं॥ भरतादिक सुखमय मगन लिय आई भूषण धन्यो। राजतिलक शोभित भये राम सिंहासन शुचि बन्यो॥ २॥

मद नामकै। हम निशिदिन विषयाविवश सुरपति कहत प्रणामकै ॥ ७ ॥

रविश्वञ्जलि जोरे कहत राम सुनहु मम वैन। कृपा करिय निज चरण रति निशि दिन राजिवनैन॥ दीजिय राजिवनयन तोष बड़ हृदय हमारे। जबते मम कुल जन्म रावरे नरतन धारे॥ नरतन धरि यश विस्तरयो चिरञ्जीव जोरी रहत। जय जय रविकुलरविविमल रविश्वञ्जलि जोरे कहत ॥ ८ ॥

अनिल अनल धर विनय करि खलखण्डन तुम राम। राज काज लयपर विशद राजहि जग अभिराम॥ राजहि जग अभिराम सब सज्जन सुखकारी। नरतन धनु धरि हाथ हरयो धरणी अघभारी॥ धरणीनखण्डन खण्डि खल राज विराजत सुवन भरि। जय जय श्रीसीतारमन अनिल अनल धर विनय करि ॥ ९ ॥

निगम विप्रतन करि कहत राम सुनहु सुरईश। कोटि कोटि यतन करत नहिं पावत योगीश॥ नहिं पावत योगीश हृदय शङ्कर पचिहारे। विधि सनकादिक नेम धर्म करि तुम्हें निहारे॥ तुम्हें निहारत सुख लहैं ते दपि भालुहि कर गहैं। जयति राम लीला अगम निगम विप्रतन करि कहैं ॥ १० ॥

शारद नारद जोरि कर विनय करत चित लाय। अद्भुत चरित तुम्हार प्रभु सुनिये श्रीरघुराय॥ सुनिये श्रीरघुराय पिता दशरथ सम नाहीं। तव सम तन तजि कौन सुयश जाको जगमाहीं॥ सुयश कियो जेहि जन्म भरि गयो विरह तजि अमरघर। गीधक्रिया निजकर कहैं शारद नारद जोरि कर ॥ ११ ॥

कहे लौं गुण मुनिसें कहौं कपि समाजके काज। भरत ... दिन सदा कपिनायक शिरताज॥ कपि नायक ... लिये उठि सबहि बहोरी। बिदा किये सन्मानि ... प्रीति न थोरी॥ प्रीति न थोरी प्रभु करी सब प्रणाम ... लगी। बार बार यश प्रभु कहैं कहँलौं गुण मुनिसें ... ॥

... राज भयो गयो सकल दुख भागि। रोग ... सकल काज कर्म गुण त्यागि॥ काल कर्म गुण ... गयो। बारि दुगन गति बारि भई ... धायो॥ सूम्भो गुर धरणो भई कपट दम्भ पाखँड ... । भये ... विचार नर राम राज राजत भयो॥ २२॥

काम क्रोध ... मान मोह मद गर्व। दोष दुःख ... दारिद्रदाहन सर्व॥ दारिद्रदाहन सर्व वैर पर- ... । ... स्वभाव सब छूटि गई मति परअपकारी॥ ... योग याग महि प्रकट अब। गये ... काम क्रोध मद रोग सब॥ २३॥

... नगर दया क्षमा सन्तोष। योग यज्ञ जप ... वेद ... पोष॥ वेद सुमङ्गल पोष रहो परमा- ... दुःख कुहन दुस्तर भय दूरी॥ ... रवि जगमगत। कमल कोक ... जगत॥ २४॥

... गायनो यह कलिकर्न न और। ताते ... मन्त्र यहै शिरमौर॥ मन्त्र यहै शिरमौर ... गाऊं। साधन उत्तम जानि सुमति निज मनहि दृढ़ाऊं॥ मनहि दृढ़ाऊं मन्त्र यह जिहि प्रसाद

... । ... सबै ... ...

...

... ... जाय। ... ... पाँय॥ ... ... हत्यो ... ...॥ १७॥

... हनुमन्त ... सुनि ... निताये मोहि। कपिनहि ... ... मुद्रिक कर ... ... लगे सब ... जाय ... ... सबहिको समुझ- ... पच्छ तब सम्पाति है ये हनुमन्त ...॥ १८॥

... पारि हुमट लाग्यौ तट बैठाय। ... ... ॥ वन उजारि फल खाय ... ... पुर लङ्क ... घर घर ... ... वारिनिधि ... चल्यो ... गर्जत घोर कठोर अति गयो उदधि पारे हुमट॥ १९॥

... ... चल्यो ... ... पार ... ... किये पुर ... दुर्ग किये पुर गड्ड ... द्रोणागिरि धरि ... ... मारग धावत ... लग्यो भरत कोपि ... ... उत्साहके ... हित गिरि ... ... ॥ २०॥

सुख पायबो। शुक नारदको सीख यह एक रामगुण गायबो ॥ २५ ॥

एक राम सुख नाम धृत ध्यान रामको रूप। राम चरित गावत परम धर्म पवित्र अनूप ॥ धर्म पवित्र अनूप करिय जब लौं जग जीजै। रसना रस करि चरित सरित निशि बासर पीजै ॥ निशि बासर श्रम तजि भजै तुलसिदास यह शुभ सुकृत। कामधेनु कलि कल्पतरु एक राम सुख नाम धृत ॥ २६ ॥

इति श्री उत्तरकाण्ड समाप्तम ॥



[illegible] मुनीश [illegible] [illegible] तब॥ गौतमनापसतीय तरी [illegible]। [illegible] मिथिलापुरको पग॥ आइ विलोकि [illegible]। [illegible] नरेश समाज गयो दवि॥ आयसु [illegible]। चाप चाल [illegible] पुज महेशनु॥ डिगे न [illegible] प्रमाणनु। सुनते [illegible] शरासनु॥ सेचि [illegible]। [illegible] धरा अरु अम्बर॥ [illegible] चारि [illegible]। मारग बीच मिले फर- [illegible]॥ [illegible] भये तपसीवर। राउ विवाहि [illegible] घर॥ [illegible] विवाह यथामति। जो सुनिकै [illegible] गति है॥ दोहा॥ चरित चारु रघुवीरके [illegible] मन कीन्ह विचार। निज मनसों तुलसी कहै [illegible] न होइ भव पार ७॥

इति श्रीबालकाण्डसमाप्तम्॥

[illegible]॥ [illegible] सुहाय आरसी गही। [illegible] लखि श्वेत है सही॥ रायकानमें मनोज- [illegible] यों कही। राज देव रामको वने सिधाव लो सही॥

अथ रामायण छन्दावली ॥

दशकन्धर घटकर्ण अघ भारधरा दुख होइ। गई गगन गोदेह धरि कहि सुरपतिसों रोइ १॥ छन्दचौपय्या॥ सुरपतिगुरु बूझा सुरमति सूझा गे विधिलोक तुरन्ता। विधि सुर समुझाये सङ्ग सिधाये जहँ सोवत श्रीकन्ता॥ दशमुखको करणी बहुविधि वरणी धरणी जेहि विधि रोई। सुनि शारँगपाणी भइ नभवाणी विधि जाना नहिं कोई॥ विधि वचन सुनाये सुर समुझाये तजहु शोच मन देवा। जो जनहितकारी प्रभु असुरारी करहिं पार सोइ खेवा॥ वानर गोपूछा मन धरि रीछा वसहु जाय वनमाहीं। अवधेशनिकेता व्यूहसमेता प्रभु आवत तुमपाहीं २॥ दोहा॥ यहि विधि विबुध विशोधि गे गे सुर निज निज धाम। कछु काल बीते अवध प्रकट भये श्रीराम ३॥ शशिवदनछन्द॥ जनहितकारी प्रकट सुरारी। नरतनधारी छविसुखकारी॥ मृदुभुजकारी अरिदलहारी। सुमुख निहारी बलि महतारी॥ अवधविहारी भवभयहारी। जयतपुरारी सवअघहारी॥ अव शउधारी यह प्रणभारी। तुलसिहि तारी शरण सम्हारी ४॥ हरिगीतिकाछन्द॥ सम्हारि शरण विचारि तुलसी रामयश गावत लियो। त्रयतापशमन कलेशहरको और नहिं जग मग वियो॥ जेहि गाइ यमन किरातखल हरिपुर गये करि सुधि हियो। रघुवीरयश सुनि हिय न हरण्यो वृथो तिन अपनो हियो ५॥ सुन्दरीछन्द॥ राजत मेचक अङ्ग महाछवि। वोल मनोहर कहहिं महाकवि। जो छुनिके

[illegible] दियो पराग गाइके १ ॥ दोहा ॥ लखि मुकराट [illegible] कोन्ह निवार। पुरुषसिंह ये कवन हैं [illegible] ॥

इति श्रीआरण्यकाण्डसमाप्तम ॥

[illegible] ॥ रामरामको लेवाइके तब शैल ऊपर [illegible] प्रीति दृढाइके। [illegible] शैलऊपर राम बूझ कपीशसों ॥ त्यों कह्यो [illegible] रामसों ॥ बालिको वधि बाणसों [illegible] जानकी तुमको मिलावों [illegible] अपने कह्यो ॥ बालि मारि कृपालराम सुराज [illegible] चारि सुनामके तहँ बासना करि [illegible] कपिईश कीश पठाइकै। [illegible] वेगि ल्यावहु खोजि देखहु जाइकै १ ॥ दोहा ॥ [illegible] प्रसंग निन अशन कियो फलफूल। पूँछि [illegible] नयन ठाढे [illegible] २ ॥

इति श्रीकिष्किन्धाकाण्डसमाप्तम् ॥

तोटकछन्द ॥ हनुमान गयो तरि सागरको। उलघ्यो [illegible] ॥ गिरि ऊपरपै चढि लङ्क लखी। हनि [illegible] भयो ॥ लघुरूप धरयो हनुमान बली। [illegible] नाइ भलो ॥ रघुवीर प्रिया कितहूं न [illegible] विभीषण गेरि घलो ॥ रघुवीर सुप्राजुहि [illegible] हनुमान हियो सुभरयो ॥ तेहिको

केकयी सुनी सुदात शोकमात ते गही। राज मांग पूतको श्रीरामको बने कही॥ राइनते सुनी सो बात तात ताप यों तये। रामसीय सङ्गले सवन्धु कानने गये॥ रायरामचन्द्र साथ प्राण काढ़िकै दये। गङ्गपार होइकै सुचित्रकूटमें गये॥ राजकाजकै भरत्थ शोकसिन्धु मैं भले। साथ लै वशिष्ठ वन्धु पांयप्याद ही चले॥ केवटै सवन्धु भेंटि राम पास जाइकै। राम दीन पावरी हिये सुपीन लाइकै १॥ दोहा॥ राम पावरी पाइकै गवन गेहको कीन। गणक बोलि तब भरथने नेमधरमव्रत लीन २॥

इति श्रीअयोध्याकाण्डसमाप्तम्॥

सुन्दरीछन्द॥ विदेहजातकी कहे सुरेशतातने छुवो। श्रीरामवाण तासते विहीननैन सो हुवो॥ श्रीदेवदत्त तातशो श्रीराम वन्दना कियो। तिन्होंकि तीय सीयको सुचैलभूषणो दियो॥ विराध वद्धि रामचन्द्र शारभङ्गके गयो। तहां सुरेश देखिकै सवन्धु सुःखसो भयो॥ वहोरि श्रीसवन्धुसङ्ग पञ्चवाटिका गये। तहानखानकाननाक सूपनेखकै हये॥ त्रिशूल आदिदै सुरारि एक वाणसों हये। सुनी सो बात रावणा मरीचपास सो गये॥ कही कथा सुनी तिनो सो नेकुरङ्ग सो भयो। लखो श्रीराम मारि ताहि धाम आपनो दयो॥ सुन्यो सो शब्द सीय शेष राम पास पाठयो कर्यो विरूप रावणा लै सीय जातयो भयो॥ सवन्धुशाल देखिकै कृपाल दुःखमें परे। तहां जटायुघातते तिन्होंतो वूझते लगे॥ कही सुसुद्धि गीधने कबन्धबन्धकै चले। करी सनाथ शेवरी सवन्धु वेगलै भले॥ वहोरि पम्पताल श्रीकृपालराम जाइकै। तहां

[illegible]॥ लगो [illegible] चाह्यो दुआरे।
[illegible] नाहिं [illegible]॥ तबै [illegible] बांधे दशानन
[illegible] जो पाथे॥ महारोष-
[illegible]। [illegible] विराजे। बनौ
[illegible] गाजे। [illegible] घनघोर
[illegible]॥ [illegible] शोभा पसारे। तहैं घोर कपि
[illegible]॥ [illegible] जे जे पुकारे। तहां
[illegible]॥ [illegible] रणधीरबन्धू जगाये।
[illegible] लाये॥ लाग्यो जाइ रघुवीर
[illegible]। [illegible] लख्यो न लङ्के॥ सुनो
[illegible]। [illegible] बीह घननाद
[illegible] पिता को हमारखो। कास्त्रो क्रोध
[illegible]॥ [illegible] गहिके प्रभायो।
[illegible] पठायो॥ हत्यो ताहि सौमित्रना
[illegible]। [illegible] सुन्यो तीयने
[illegible]। [illegible] त्रिलोक मांचो॥
[illegible]। [illegible] नहिं हाथ से
[illegible]। [illegible] प्रचारो। कहा वा-
[illegible]॥ चले साजि सेना सबै वीर गाजैं।
[illegible] भेरि बाजैं॥ तबै रामके सामुहे रथ जो
आयो। हिये दृष्टि श्रीराम सौमित्र लायो॥ तबै राम शरको
[illegible] खैंचि बाध्यो। लियो चाप कर साधि वर ताहि
मार्‍यो। छुटे बाण दशशीशके शीश छीने। लसे शीश
[illegible] भये ते नवीने॥ तब राम लङ्केशको मन्त्र बूझ्यो।
[illegible] न दशकन्ध जूझ्यो॥ [illegible] नाथ यहि ईशको
[illegible]। [illegible] निन्ह [illegible] कीन्हे॥ हिये

मिलि सुद्धि लई सगरी। हरषे हरिको मिलि ज्यों नगरी॥ तहँ जाय लखो रघुवीरप्रिया। कृशपङ्क मलो सुखहीन सिया॥ पुनि रावण आनि कलेश कियो। सुनि क्रोध भयो हनुमान हियो॥ रुदगै दई डारि निहारि प्रिया। सुखदुःख भयो हनुमन्त हिया॥ रघुवीरको दूत प्रसन्नकिया। फलखानको आयसु मांगि लिया॥ लखि बाग लग्यो फल खान हनू। उतपात महा अतिवाग घनू॥ मनुजार्दनि जाय पुकार करौ। हनुमान हनी सेना सगरौ॥ घननाद गज्यो पवनातमजा। दशकन्ध सभामहँ जाइ गजा॥ चलिगो रिपु ज्यों न डरयो मनमें। मद-मत्त गयन्दनके घनमें॥ घनतेल लँगूर लपेट सही। जलसो निजपेकरि लङ्क दही॥ हनुमानके हांकते गर्भ गिरयो। मनुजाद त्रिया नहिं धीर धरयो॥ सियआयसु लेकरि सिन्धु तरयो। हनुमान सदेह कह्यो सिगरयो॥ सुनिके हियसिन्धु अनन्द नरयो सजि सेन समूह पयान करयो॥ वल देखि पयोनिधि पांय-परयो। नल देखिके सेतु समुद्र तरयो॥ सुनि मयतनया पिय-पांय परी। प्रभु व्यापकविश्व विराटहरी॥ तव जाय सभाह विचार करौ। तपसौन धरो हमरौ नगरौ॥ तिन मन्त्रिन मन्त्र कुमन्त्र कियो। लघु वन्धुहि मारेसि लात हियो॥ रघुवीरके तीर गयो भजिकै। न्टपको अविवेक कह्यो सजिकै॥ प्रभु लङ्क हि अङ्गदको पठयो। पद रोपि सभाप्रण जाइ ठयो॥ दशकन्ध सभा महँ वीरवचा। नटरयो पदज्यों महिसङ्ग रचा॥ वरवीर सभा नइ नारि फिरयो। रघुवीर पदाम्बुज पाइ परयो १॥ दोहा सुनि कृपालु अङ्गदवचन वूझे मन्त्रीयूह। अनी चारि करि द्वारचहुँ लागे कीशसमूह २॥

इति श्रीसुन्दरकाण्ड समाप्तम॥

[illegible] जे जे करैं॥ गहि छत्र चामर चमर
[illegible] लये। भरतादि अनुज विभीषणाङ्गद
[illegible] गावन लगे॥ सतु सिया श्रीरघुवीरको अवि-
[illegible] धरे। कह दास तुलसी जन्मसुख लहि
[illegible] सम नरे॥ दोहा॥ नित नव मङ्गल अवध-
[illegible] सकल नरनारि॥ लहहिं चारिफल अकृत तनु
[illegible]॥ छन्द॥ नित प्रीति सहित अन्हाइ बन्धु-
[illegible] प्रभु भोजन करे। गज बाजि राजसमाज लखि सब
[illegible] फिरें॥ बैठे सभामहँ जाइ श्रीरघुवीर दुख
[illegible]। हरिव्यास प्रवान उलूकको लखि लोग सब विस्मय
[illegible]। [illegible] यतिकिरति उरमिलासो सबनि सुत द्वै द्वै
[illegible]। [illegible] गुन युगल गाये सब निगम आनँद वने॥
सनकादि नारद आदि मुनिवर सकल अवधहि आवहीं।
[illegible] रघुवरके चरित सब विधिहि जाय सुनावहीं।
[illegible] महिदेवको सुत सभामहँ आयो मरो। गुरु
[illegible] पारि जटहि नवहिमें उठि जिय परो॥ यहि
[illegible] पापपवित्र नित नूतन करें। कहि दास-
तुलसी सुनत सबके वचन मन पातक टरें ३॥ दोहा॥ सुनि
[illegible] युगल सुत राम कीन्ह अनुमान॥ लोक सिखावन
दीन्ह हित [illegible] श्रीभगवान ४॥

इति श्रीउत्तरकाण्ड समाप्तम॥

[illegible]

राम [illegible]

[illegible]

राम चढि यान उत्तर [illegible] [illegible] आयो। तहां राम हनुमान अवधै पठायो॥ दोहा॥ सोक भाल लिय सङ्ग लै तिरवेणी को न्हाय। भरद्वाजको वन्दि प्रभु केवट भेटयो आय॥

इति लङ्काकाण्ड समाप्तम्॥

छन्द॥ शुभ सगुण अवध जनाइ तेहि क्षण होत सुद मङ्गल महा। शीतल सुगन्ध सुमन्द मारुत अमल जल सुर-सरि वहा॥ शुभ अङ्ग फरकत भरतके हिय हुलसि अहि आनँद लहा। तेहि समय श्रीहनुमान प्रभुको आइ सन्देशो कहा॥ मन हरष भरत सुनाइ गुरुकहँ मातु सकल बुला-इकै। कहि खबरि श्रीरघुवीरकी तिन सजे मङ्गल जाइकै॥ गुरु वन्धु संयुत चले प्रभुपर निरखि पदपङ्कज गहे। धरि भरत भुज उर ल्याइ प्रभु राजीवलोचन जल वहे॥ पुनि प्रेम-युत सब मातु भेटीं निरखि प्रभु हुलस्यो हियो। तिन कनक मणिगण वसन भूषण आनि महिदेवन दियो॥ शुभ समय जानि वशिष्ठ वेगि लिवाइ लियो सुमन्तको। सब राजसाज सम्हारि तेहि क्षण राज दिय भगवन्तको॥ सिय सहित रघु-कुलमणि विराजत सुभग सिंहासन परैं। सुर सुमन बरषहि

हग्न सकल, मलमूल। तुलसी मर्म हियो गरहि उपजत सुख [illegible] ॥ रेफरमित परमातमा सह अकार सिय रूप। दीरघ [illegible] तुलसी [illegible] अनूप ॥ अनुस्वार [illegible] मकारसों तुलसी [illegible] ॥ [illegible] विराग [illegible] तुलसी पेषि। [illegible] विशेषि ॥ नाम [illegible] करि [illegible] ॥ वरण विपर्यय [illegible] शुभ कारण सतुमि [illegible] शुभ [illegible] भक्ति [illegible] राम समान वर सपनेहु अपर न [illegible]। [illegible] परमान ॥ अहि रस- [illegible] शुक्रवार। माधव सित सिय- [illegible] अवतार ॥ अरण हरण अति अमिति विधि [illegible] सिद्धान्त मत तुलसी वदन [illegible] ॥ [illegible] सतसैया सुखधाम ॥ [illegible] भक्ति अभिराम ॥ मन भय [illegible] छन्द युत होइ। सो वटना शुभदा सदा [illegible] अपर वेद [illegible] जान ॥ दीरघ [illegible] विश्राम। प्राकृत प्रकट [illegible] सारगण रा- [illegible] युग [illegible] हरगण सोइ। [illegible] तुलसी [illegible] नाम। सकुचति [illegible] धरमधुरन्धर राम। दम्पति रस रसना [illegible] सुगेह। तुलसी हर हित वरण शिशु [illegible] सनेह ॥ हिय निर्गुण नयन सगुण रसना राम

तुलसी सतसई॥

नमो नमो श्रीराम प्रभु परमातम परधाम। जेहि सुमिरत सिध होत हैं तुलसी जन मन काम॥ राम बाम दिशि जानकी लखन दाहिनी ओर॥ ध्यान सकल कल्याणकर तुलसी सुरतरु तोर॥ परमपुरुष परधाम वर जापर अपर न आन। तुलसी सो समुझत सुनत राम सोई निर्बान॥ सकल सुखद गुन जासु सो राम कामनाहीन। सकल कामप्रद सर्बहित तुलसी कहहिं प्रवीन॥ जाके रोमैरोम प्रति अमित अमित ब्रह्मण्ड। सो देखत तुलसी प्रकट अमल सुअचल प्रचण्ड॥ जगतजननि श्रीजानकी जनक राम शुभ रूप। जासु कृपा अति अघहरणि करणि विवेक अनूप॥ तात मातुपर जासु के तासु न लेश कलेश। ते तुलसी तजि जात किमि तजि घर तर परदेश॥ पिता विवेकनिधान वर मातु दया युत नेह। तासु सुवन किमि पाइ है अनत अटन तजि गेह॥ बुद्धि विनय गतिहीन शिशु सुपथ कुपथ गत जान। जननि जनक तेहि किमि तजै तुलसी सरिस अजान॥ मात तात सियरामलख बुधि विवेक परमान। हरत अखिल अघ तरणि तर तब तुलसी कछु जान॥ जिन्हते उद्भव वर विभव ब्रह्मादिक संसार। सुगति तासु तिनकी कृपा तुलसी वदहि विचार॥ शशि रवि सीताराम नभ तुलसी उरसि प्रमाण॥ उदित सदा अथवत न सो कुवलित तमकर हान॥ तुलसी कहत विचार गुरु राम सरिस नहिं आन। जासु कृपा शुचि होति रुचि विशद विवेक प्रमान॥ रारसरूप अनूप अल

[illegible] नहिं [illegible]। प्रनाम सोइ तजि रामपद तुलसी
[illegible]॥ तजो सो नहिं चतुरता रामचरण लव-
[illegible]। [illegible] गनिका परम प्रवीन॥
[illegible] मन गहि जानहिं ज्वाय॥ तुलसी प्रेम
[illegible] नशाय॥ प्रेम शरीर प्रपञ्च तज
[illegible] उपाधि॥ तुलसी भलो सो बेद्र भेगि बांधहू
[illegible]॥ [illegible] बर महिमा अगम अपार।
[illegible] पहुनहूं [illegible] तउँलगि डार॥ तुलसी
[illegible] मनु [illegible] कहुं चोर। प्रण राम मयङ्क
[illegible] चकोर॥ ऊँचे नीचे नहुँ मिले हरि-
[illegible]। [illegible] काम [illegible] कोनेउ [illegible]॥
[illegible] दुर्लभ होतो [illegible]। गाडर राखे ऊनको
[illegible]॥ चतुर नीति मग रामपद प्रेम निबाह-
[illegible]। तुलसी पहिरिय सो बसन जो नय बारत फीक॥
[illegible]। रामकृपालुतें कहि सुनाव गुण दोष। होउ दुबरी
[illegible] परम [illegible] सन्तोष॥ सुमिरन सेवा रामपद राम-
[illegible]। [illegible] लाभ न [illegible] मन तो तुलसी हित-
हान॥ [illegible] बाधक भये साधक भये न कोय। तुलसीराम-
[illegible] होय तो होय॥ तुलसी मिटै न कल्पना गये
[illegible]। [illegible] न [illegible] जनकसुताको
[illegible]। [illegible] निपट [illegible] जीवन सनद सुरीति।
[illegible] उचित चलीति॥ जाय कहब
[illegible] जाय योग बिन क्षेम। तुलसी जाय उपाय सब
बिना [illegible]॥ तुलसी रामहि परिहरे निपट हानि
सब सोउ। निमि [illegible] रहित बर सुरा सरिस
[illegible]। हरे चरहिं तापहिं बरे फरे पसारहिं हाथ।

सुनाम। मनहुँ पुरट सम्पुट लसत तुलसी ललित ललाम॥ प्रभु गुणगण भूषण बनन वचन विशेष सुदेश। रामसुकीरति कामिनी तुलसी करतव केश॥ रघुबरकी रति तियवदन इव कह तुलसीदास। शरदप्रकाश अकाशछवि चारु चिबुक तिल जास॥ तुलसी शोभत नखतगण शरदसुधाकर साथ। मुक्ता झालर झलक जनु रामसुयश शिशु हाथ॥ आनम मध्य विवेक बिनु राम भजत अज्ञात। लोक सहित परलोकको अवश विनाशी बात॥ दव मराल मानस तजे चन्द्र शीत रवि घाम॥ मोर सदा हिक जो तजै तुलसी तजै न राम॥ आसन दृढ़ आहार दृढ़ सुमति ज्ञान दृढ़ होय। तुलसी बिना उपासना दिनु दुलहेको जोय॥ रामचरण अवलम्ब बिनु परमारथकी आश। चाहत वारिदबुन्द गहि तुनी चढ़न अकाश॥ रामनाम तरुफूल रस अष्ट पत्र फल एक। युगल सन्त शुभ चारि जग बरणत निगम अनेक॥ राम कामतरु परिहरत सेवत कलितरु ठूँठ। स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ झूँठ॥ तुलसी केवल कामना रामचरित आराम। निशिचर कलि करि निहत तरु मोहि कहत विधि वाम॥ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एकही ओर। द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर॥ हितसम हित रति रामसन रिपुसन बैर विहाव॥ उदासीन संसारसन तुलसी सहज सुभाव॥ तिलपर राखे सकल जग विदित विलोकत लोग॥ तुलसी महिमा रामकी को जग जानन योग॥ जहाँ राम तह काम नहि जहाँ काम नहि राम। तुलसी कबहुँ होत नहि रवि रजनी इक ठाम॥ राम दूर माया प्रबल घटति जानि मनमाहि। बढ़ति भूरि रवि दूर लखि शिरपर पगुतर छाहिं॥ सम्पति सकल जगतकी

ललो नेरींगोकरई चातक छोको साथ। सुनियत जा-
न ः ोः ा ंियै दारे नाउ॥ प्रीति पपी ा पय ः ो प्रकट
न र प ि ान। याचक जगत अधीन इन किये कनौडो
ान॥ कं ो जान पयोदरा नीचो पियत न नीर। के धांचे
 ा ा ो के दुख गढ़े शरीर॥ क वरषे वन समय सिर
 , भ ा ज ा ग िगर॥ तु ासी चातक याचक ि त-
 ा ि ा ो ा ा॥ चढ़त न चातक चित कबहुं प्रिय प्यो-
ो ा र। शाग प्रेमप्योधि बर तुलसो शोग न होय॥
ा ा ा ा ा प ा ग ा ः ो एक एक घन यानि॥ देत सो सुभाग-
 । भ ा ा ा ंट भरि पानि॥ हूं अधीन याचत न ो घ ा घ
ा ा ा ा ा। ऐसे माने मांगनहि को वारिद बिन देय॥
प ा ा ा ा ा ा ग ग ज अ ि झकोर जर खीजि। दोप
न ा ा ा ंग ा ा ि तुलसी रागहि रीझ॥ कोन जिआवे
जनसम ः जीवनदायक पानि। भयो कनौडो चातकहि
प ा ः प ा पहिचानि। मान राखिबो मांगिबो पियसों स ज
न ः ा ा ा ा ा पै जस चातक मन लेह॥ तुलसी
चात ा फर यान राखिबो प्रेम। वक्रबूंद लखि स्वातिको
ि ि ि ा ा ा न नेम॥ उपल बरषि गरजत तरजि डारत ह ि श
क ा ा। चितव कि चातक जलद तजि कबहूँ आन ा ओर॥
ा ि प ा पाहन जलद पल करे टूक टूक। तु ासो तदपि
न चाहिये चतुर चातकहि चूक॥ रटत रटत रसना लटो
तृषा सूखिगो अङ्ग। तुलसी चातकके हिये नित नूतनहि
ा ा। गङ्गा यमुना सरस्वती सातसिन्धु भरिपूर। तुलसी
चातकके मते बिन स्वाती सब धूर॥ तुलसी चातकके मते
स्वाती पियत न पानि। प्रेमतृषा बढ़ती भली घटे घटेगी
ानि॥ सर सरिता चातक तजे स्वाती सुधि नहि लेइ।

तुलसी स्वारथ मीत जग परमारथ रघुनाथ। तुलसी खोटे दामका राखत रघुवर मान। ज्यों सूरजउ परोहितहि देत दान यजमान॥ ज्यों जग वैरी मीनको आपु सहित परिवार। त्यों तुलसी रघुनाथ विन आपनि दशा विचार॥ तुलसी राम भरोस शिर लिये पाप धरि मोट। ज्यों व्यभिचारी नारिकहँ बड़ी खसमकी ओट॥ स्वामी सीतानाथको तुमलगि मेरी दौर। तुलसी काग जहाजको सूझत और न ठौर॥ तुलसी सब छल छांड़िके कीजै राम सनेह। अन्तर पतिसों है कहा जिन देखी सब देह॥ तबही कोप रखे लखे बहुत कहे का होय। तुलसी तेरो राम तजि हित जग आर न कोय॥ तुलसी हम-सों रामसों भलो मिलो है सूत। छांड़े वनै न संग रहे ज्यों घर-माहँ कपूत॥ कोटि विघन सङ्कट विकट कोटि शत्रु जो साथ॥ तुलसी वल नहि करि सकैं जो सुदृष्टि रघुनाथ॥ लगन मुहूर-त योगबल तुलसी गनत न काहि। राम भये जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि॥ प्रभु प्रभुता जाकहँ दई बोल सहित गहि बांह। तुलसीते गाजत फिरहिं रामछत्रकी छांह॥ सावन सौंरति सब सहत सुमन सुखद फल लाहु॥ तुलसी चातक जलदको रीझि बूझि बुध काहु। चातक जीवन जलदकहँ जानत लाय सुरीति। लखत लखत लखि परत है तुलसी प्रेम प्रतीति॥ जीव चराचर जहँलगे है सब-को प्रिय मेह। तुलसी चातक मन बसो घनसों सहज सनेह॥ डोलत विपुल विहङ्ग बन पियत पोखरीवारि। सुयश धवल चातक नवल तोर भुवन दशचारि॥ सुख मीठे मानस सलिल कोकिल मोर चकोर। सुयश ललित चातक वलित रह्यो भुवन भरि तोर॥ माँगत डोलत है नहीं तजि घर अनत न जात। तुलसी चातक भक्तकी उपमा देत लजात॥

[illegible] संग पातक सेवत होय। तुलसी [illegible] गिर रेनु नाय॥ तुलसी केवल [illegible] सो घर कहत जन नाटमहँ कतहु [illegible] रामहु के नतरा कछु हेत। [illegible]॥ के तोहि [illegible] तुलसी उचित [illegible]॥ राम हिये दाम सँग [illegible] गंग नृप भये वश [illegible] कछु नाहि। [illegible] नाहिं॥ राम गरीब- [illegible] जन जानि। तुलसी मन परिहरत नहिं [illegible]॥ घर कीन्हे घर होत है घर छाड़े [illegible] तुलसी घर बन बीचही रहो प्रेमपुर छाय॥ [illegible] सो तुलसी खाता न खाय। लोरकाईते [illegible]॥ [illegible] न कीजिये भजि [illegible] स्वास सारिखे तीर॥ [illegible] अधिकाति। कछुक कछुक [illegible]॥ [illegible] माखि [illegible] तरे ज्यों तरुवर- [illegible] निरनाय। [illegible] सत्य सन्ताप॥ चपल वसन [illegible] घर होइ। सन्तसमागम रामधन [illegible] तुलसी तोरहि के बले अवशि पाइये [illegible]। [illegible] न पाइवे सर सरिता अवगाह॥ डग [illegible] जलमञ्चार। तुलसी करिया [illegible] बूड़त तरत न बार॥ तुलसी हरि अपमानते होत

तुलसी सेवक वश कहा जो साहब नहिं देइ॥ आश पपीहा पयदकी हनु हो तुलसीदास। जो अंचवै जल स्वातिको परिहरि बारहमास॥ चातक घन तजि दूसरे जियत न नाई नारि। मरत न माँगे गङ्ग जल सुरसरिहूको वारि॥ व्याधा बधो पपीहरा परो गङ्ग जल जाय। चोंच मूंदि पीवै नहीं छिरा पिय मों प्रण जाय॥ बधिक बधो परि पुख्यजल उपर उठाई चोंच। तुलसी चातक प्रेमपट मरत न लायो खोंच॥ चातक सुतहि सिखाव नित आन नीर जनि लेहु। ये हमरे तुलसी धरम एक स्वातिसों नेहु॥ दरशन परशन आन जल बिनु स्वाती सुनु तात। सुनत चेचुवा चित चभो समुझि नीति वर बात॥ तुलसी सुतमे कहत हैं चातक बारम्बार। तात न तरपन कीजियो बिना बारिधरधार॥ बाज चञ्चु गत चातकहि भई प्रेमकी पीर। तुलसी परवश हाड़ मम परि है पहुनो नीर॥ अण्ड फोरि किय चेचुवा तुश परो नीहार। गहि चञ्चुल चातक चतुर डाख्यो बारहि बार॥ होय न चातक पातकी जीवनदानि न मूढ़। तुलसी गति प्रहलादकी समुझि प्रेमपद गूढ़॥ तुलसीके मत चातकहि केवल प्रेम-पियास। पियन स्वातिजल जान जग तावत बारहमास॥ एक भरोसो एक बल एक आश विश्वास। स्वातिसलिल रघुनाथ वर चातक तुलसीदास॥ आलवाल मुक्ताहलनि हिय सनेह तरुमूल। हेरु हेरु चित चातकहि स्वातिसलिल अनुकूल॥ रामप्रेम बिन दूवरे रामप्रेम सह पीन। विशद सलिल सरवर बरन जन तुलसी मन मीन॥ आप बधिक वर वेष धरि कहै कुरङ्गमराग। तुलसी ज्यों मृगमन मुरे परै प्रेमपट दाग॥

इति प्रेम भक्ति निर्देशः प्रथमः सर्गः १॥

[illegible] [illegible]॥ [illegible] जाहि विधि प्रकट तीनि [illegible]। [illegible] जानत हैं श्रुत वेद॥ [illegible] गुण तीन। चन्द्र भान [illegible] विधि हरि हर [illegible] प्रवीन॥ अनल रकार [illegible] जासु [illegible]। [illegible] रकार विधि मन [illegible]॥ [illegible] कर अनल प्रचण्ड [illegible]। [illegible] तुलसी कहहिं विचार॥ [illegible] प्रगट [illegible]। विधि हरि [illegible] तुलसी [illegible]॥ [illegible] सचक्र को [illegible]। विधि हरि [illegible] शिरोमणि प्रगट सकल [illegible]। [illegible] अनुपम [illegible] तुलसी जानत राम। [illegible] मन काम। छत्र मुकुट सम [illegible]। सकल [illegible] सिरपर रहत [illegible]॥ [illegible] रघुवर [illegible] श्याम राम [illegible]। [illegible] तुलसी [illegible] अकार॥ [illegible] धर धीर। विधि विहरत [illegible] तुलसी [illegible] पीर॥ [illegible] करण सङ्कट [illegible]। [illegible] महेश [illegible] तपण [illegible]॥ राम सदा [illegible] वर सुखसागर पर- [illegible]। [illegible] पद अभिराम॥ होन- [illegible] नहिं होत। [illegible] गिरह [illegible]- [illegible] तुलसी [illegible]॥ तुलसी होत सिखेन हित तन [illegible]। [illegible] प्रकट विलोकहु [illegible] जलज पत्र अनयास। [illegible] जात [illegible] अकास॥ त्रिविध [illegible] पत्र [illegible] सूर। [illegible] कौने तुलसी

अकाज समाज। राज करत रज मिलि गयो सदल सकुल कुलराज॥ तुलसी मीठे वचनते सुख उपजत चहुँ ओर। वशी-करण यक मन्त्र है परिहरु वचन कठोर॥ रामकृपाते होत सुख रामकृपा विन जात॥ जानत रघुवर भजनते तुलसी शठ अलसात॥ सनमुख ह्वै रघुनायके देहु सकल जग पीठि। तजे केचुरी उरगकहँ होत अधिक अति डीठि॥ मरयादा दूर-हि रहे तुलसी किये विचार॥ निकट निरादर होत हैं जिमि सुरसरिविस्तार॥ राम कृपानिधि स्वामि मम सब विधि पूरणकाम। परमारथ परधाम वर सन्त सुखद बलधाम॥ रामहि जानहि राम रट भजु रामहि तजु काम। तुलसी राम अजान नर किमि पावहि परधाम॥ तुलसी पति रति एक सम सकल साधना सून। अङ्क रहित कछु हाथ नहिं सहित अङ्क दश गून॥ तुलसी अपने रामकहँ भजन करहु दृढ़ अङ्क। आदि अन्त निरवाहिवो जैसे नवको अङ्क॥ दुगुणे ति-गुणे चोगुणे पञ्च षष्ठओ सात। आठौते पुनि नव गुणे नवके नव रहि जात॥ नवके नव रहि जात हैं तुलसी किये विचार। रमो राम इमि जगतमें नहीं द्वैत विस्तार॥ तुलसी राम सनेह करु त्यागु सकल उपचारु। जैसे घटत न अङ्क नव नवके लिखत पहारु॥ अङ्क अगुण आखर सगुण समुझिअ उभय प्रकार। पोये राखे आप भल तुलसी चारु विचार॥ यहि विधिते सब राममय समुझहु सुमतिनिधान। याते सकल विरोध तजु भजु सब समुझु न आन॥ राम कामनाहीन पुनि सकलकामकरतार। याहीते परमातमा अव्यय अमल उदार॥ जो कछु चाहत सो करत हरत भरत गत भेद। काहु सुखद काहू दुखद जानत हैं बुध वेद॥ सन्त कमल मधु-मास कर तुलसी बरण विचार। जग सरवर तर भरण कर

[illegible] मति एक॥ विशद देइ गति एक विधि कबहुँ
[illegible]। तिनि कहँ पावत सदा निरसहि मन्त
[illegible] आने [illegible] सन्तहि राम प्रमान। सन्त-
[illegible] राम [illegible] न पान॥ ताते सन्त दयाल
[illegible]। [illegible] जानिकै [illegible]
[illegible] सन्त [illegible] फूलि फरहि पर-
[illegible] फल देत॥ दुख सुख दोनों
[illegible]। [illegible] उदधि गति [illegible] जिमि
[illegible]॥ तुलसी राम सुजानको राम जनावे
[illegible] आने [illegible] ज्ञान कबहुँ ना होइ॥ सो
[illegible] नहीं विषमता लेश। ताकी कृपा कटाच्छ-
[illegible]॥ गुरुकहँ तब रामको सुनै निज कर-
[illegible]। [illegible] गुरु कर तब करै मिटै सकल भव-
[illegible] नहि रामकै जिन्ह हियधी सियरूप।
[illegible] उपदेश। संशय शमन नशाय
[illegible]॥ [illegible] सोता सम सनुफ्त गुरु विवेक
[illegible]। [illegible] सदा भयो विगत मग बान॥
[illegible] मति [illegible] समान। तैइ सन्त
[illegible] मति आन॥ एई शुद्ध उपासना परा-
[illegible]। [illegible] नहि मगु पगु धरे रहे रामपद प्रीति॥
[illegible] गुरुदेवके किमि जाने कहु कोय। जहँते जो
[illegible] है [illegible] है मोय॥ अपगत ये सोई अवनि सो
[illegible]। जहाँ जनम अपि मरणमपि लसुलहि सुम-
[illegible]। [illegible] भेद अस मधु मदिरा मकरन्द। गुरु
[illegible] प्रगट पुरुष परमानन्द॥ डावर सागर कूपगत
[illegible] देत। है एकै दूजे नहीं द्वैत आनके हेत॥ गुरु-

रहै तेहि विधि पच्छ मयूर॥ काकसुता गृह ना करै यह अचरज बड़भाय। तुलसी कहि उपदेश सुनि जनित पिता घर जाय॥ सुपट कुपश लीन्हे जगत स्व स्वभाव अनुसार। तुलसी सिखवत नाहिं शिशु मूषकहन न मजार॥ तुलसी जानत है सकल चेतन मिलन अचेत। कीट जात उड़ि नित्य निकट जिनहि पढ़े रति देत॥ होनहार सब आपते वृथा सोच कर जीन। कन्द छेव तुलसी मृगन कहहु उसेठत कौन॥ सुख चाहत सुखमें बसत है सुखरूप विशाल। सन्तत जा विधि मानसर कबहुं न तजत मराल॥ नीति प्रीति यश अयश गति सबकहँ शुभ पहिचान। बस्ती हस्ती हस्तिनी देत न पति रति दान॥ तुलसी अपने दुखदते को कहु रहत अजान। बीश कुन्त अङ्कुर वनहि उपजत करत निदान॥ यथा धरणि सब बीजमें नखत अकाश निवास। तथा राम सब धर्ममय जानत तुलसीदास॥ पहुमी पानी पावकहु पवनहु माहं समात। ता कहँ जानत राम अपि विनु गुरु किमि लखि जात॥ अगुण ब्रह्म तुलसी सोई सगुण विलोकत सोइ। दुख सुख नाना भांतिको तेहि विरोधते होइ॥ शूर यथा गण जीति हरि पलटि आव चलि गेह। तिमि गति जानहि रामकी तुलसी सन्त सनेह॥ परमातमपद राम पुनि तीजे सन्त सुजान। जे जगमहँ विरचहिं धरे देह विगत अभिमान॥ कैयो संज्ञा जीवकी सदा रहत रत काम। तुलसीसेवन रामपद निशि वासर वशराम॥ सुख पाये हरषत हँसत खीझत लहे विषाद। प्रकटत दुरत निरय परत केवल रत विषवाद॥ नाना विधिकी कल्पना नाना विधिको सोग। सूक्षमनी अस्थूल तन कबहुं तजत नहि रोग॥ जैसे कुटीकी सन्ना गठित रहत दोउ देह। बिन्दहुकी गति तै-

[illegible] होत सचेत। तुलसी त्रिविध प्रकारके
[illegible] ॥ जासों करत विरोध हठि कहु तुलसी
[illegible] तव [illegible] होगि मलान।
[illegible] मारि न जाय। [illegible]न लाभ
[illegible] विष [illegible]॥ कोह द्रोह [illegible]मूल है
[illegible]। [illegible] कारण समुझि को दुख
[illegible]॥ [illegible] है [illegible] समुझ रहित नहिं भूल।
[illegible] रामको [illegible] फूल॥ ५

इति द्वितीयः सर्गः॥

[illegible] अम[illegible]रि। तुलसि-
[illegible] पोरि॥ तुलसी तेरो
[illegible]। [illegible] उचित [illegible]
[illegible]। [illegible] विशेषि निषेध पति उर मानसु
[illegible] करि तेहि [illegible] पलटि
[illegible] रहित सुखधाम।
[illegible]॥ बीज धन-
[illegible]। प्रकट तहां नहि तम
[illegible]॥ [illegible] कोकनद वश
[illegible]। [illegible] जगहित मानस
[illegible]। [illegible] है रामचरण [illegible]। तुलसी
[illegible] है यह मनो प्रवीन॥ [illegible] दून [illegible]
[illegible] नहि कीन्ह। जेहि हरि [illegible] मनि मान हनि
[illegible] नेहि पद लीन्ह॥ [illegible] आयु मोचक वरण हरण
[illegible] जञ्जाल। भरण करण सुख सिद्धितर तुलसी परम
[illegible] हर [illegible] धराधरण वलधाम।
[illegible] अभिराम॥ विहग

गत नाना भांति तेहि प्रकटत कालहि पाय। जान जाय गुरु ज्ञानते बिन जाने भरमाय॥ तुलसी तरु फूलत फलत जा विधि कालहि पाय। तैसेही गुण दोषते प्रकटत समय सुभाय॥ दोषहु गुणकी रीति यह जानु अनल गति देखि। तुलसी जानत सो सदा जेहि विवेक सुविशेखि॥ गुरुते आवत ज्ञान उर नाशत सकल विकार। यथा निलय गति दीपके मिटत सकल अंधियार॥ यद्यपि अवनि अनेक सुख तोय ता-सु रस ताल। सन्तत तुलसी मानसर तदपि न तजहिं मराल॥ तुलसी तोरत तीर तरु मानस जहँ सविडार, विगत नलिनि अलि मलिन जल सर सरिहू बड़ि आर॥ जो जल जीवन जगत को परसत पावन जौन। तुलसी सो नीचे ढरत ताहि निवारत कौन॥ जो करता है करम को सो भोगत नहिं आन। बवनहार लुनि है सोई देनो लहै निदान॥ रावण रावणको हन्यो दोष रामकहँ नाहि। निज हित अनहित देखु किन तुलसी आपहिमाहि॥ सुमिरु राम भजु रामपद देखु राम सुनु राम। तुलसी समुझहु रामकहँ अहनिशि इह तव काम॥ रज अप अनल अनिल नभ जड़ जानत सब कोइ। इह चेतन्य सदा समुझ काहजरत दुख होइ॥ निजकृत विल-सत सो सदा बिन पाये उपदेश। गुरुपगु पाय सुमग धरै तुलसी हरै कलेश॥ सलिल शुक्र शोणित समुझ पल अरु अस्थि समेत। बाल कुमार युवा जरा है सुसमुझ कर चेत॥ ऐसिहि गति अवसानकी तुलसी जानत हेत। ताते यह गति जानि जिय अविरल हरि चित चेत॥ जानै रामस्वरूप जब तब पावै पद सन्त। जन्म मरण पदते रहित सुखमा अमल अनन्त॥ दुखदायक जाने भले सुखदायक भजि राम। अब

[illegible] पति प्रीति पावन पवन तुलसी करहु विचार। [illegible] पद पन्नगन तामत तव निरधार॥ हम कपट [illegible] प्रथमन्त। भजु तुलसी तजि वाम [illegible] रत भगवन्त॥ कना समुझि कवरण हरहु [illegible]। ओकर तमहर वरण वर तुलसी सरत [illegible]॥ [illegible] आदि युत पाण्डुसुत सह अन्त। [illegible] सतर करि हे कृपा परन्त॥ झटिति [illegible] हिय आदि वरण हर एक। अन्त प्रथम [illegible] तत्व विवेक॥ [illegible]दि चन्द्र चञ्चल सहित [illegible] नाम। अघगञ्जन रञ्जनसुजन भवभञ्जन [illegible]॥ [illegible] जागु पनि पद रति सहित [illegible] तुलसी करु प्रेम॥ [illegible] सारंग सहित जान। आदि [illegible] प्रथम युत तुलसी समुझु न आन॥ गिरिजापति [illegible] आदि वक हरि नचत युधि जान। आदि अन्त भजु अन्त [illegible] तुलसी रुचि मन मान॥ ऋतुपतिपद पुनि पदि-[illegible] प्रथम आदि पुर लेहु। अन्त हरण पद द्वितियमहँ [illegible] वरण नह नेहु॥ वाहन शेष सुमधु परव भरत नगर युत [illegible]। हरि भजि मतिन विरच्यो करि आदि मध्य अवसान॥ [illegible] वरण वनज सहित दोउ अन्त। ताकहँ [illegible] रहित एक दल अन्त॥ वारिज वारिज वरण वर [illegible] तुलसीदास। आदि आदि भजु आदि पद पावै परम [illegible]॥ भजु तुलसी कुलिशान्तकहँ सह अगार तजि काम। [illegible] नागर ललित चलो चलो परधाम॥ चञ्चल सहि-[illegible] अन्त अन्त युत जान। सन्त शास्त्र सम्मत समुझि [illegible] परमान॥ आदि वसन्त इकार दै आश्रय ता-

बीज रैयत वितय पति पति तुलसी तोर। तासु विमुख सख सति विन्न सपनेहु होन न भोर॥ द्वितिय कोल राजिव प्रथम जाहु न निश्चय ताहि। आदि एक कल दे भजहु वेद विदित गुण नाहि॥ बसत जहां राघव जलज तेहि मिति गोजहि सङ्ग। भजु तुलसी तेहि अरि सुपद करि उर प्रेम अभङ्ग॥ भजहु तरणिअरि आदिकहँ तुलसी आत्मज अन्त पञ्चानन वहि पद्म मधि गहे विमल मन सन्त॥ वनिता शैल सुतासकी तासु जनमको ठान। तेहि भजु तुलसीदास हित प्रणत सकल सुखधाम॥ भजु पतङ्गसुत आदिकहँ मृत्युञ्जय अरि अन्तु। तुलसी पुहकर यज्ञकर वरण पाँसु-मिच्छन्तु॥ उलटे तासो तासु पलि सौ हजार मन सत्व॥ द्वितिय दतिय हर कास नहि भजु तेहि तुलसीदास। काका-नन आसन किये सासन लहे उपास॥ आदि द्वितिय अव-तारकहँ भजु तुलसी रूप अन्त। कमल प्रथम अरु मध्य सह वेद विदित मत सन्त॥ जेहि न गन्यो कछु मानसहु सुरपति परि सौ आस। तेहि पद शचिता अवधि भव तेहि भजु तुलसीदास॥ नैनकरण गुणधरण वर तावर वरण विचार। चरण लतर तुलसी चहसि उवरन शरणअधार॥ भजु हरि आदिहि वाटिका भरिता राजिव अन्त। करिता पद विश्वास भव सरिता तरसि तुरन्त॥ जड़ मोहन वरणादि-कहँ सह चञ्चल चित चेत। भजु तुलसी संसार अहि नहि गहि करत अचेत॥ मरण अधिप वारण वरण दूसर अन्त अगार। तुलसी दूषु सह रागधर तारण तरण अधार॥ ज्यों उरविज चाहसि लटित तौ करि घटित उपाय। सुमन सवर वर अरि-चरण सेवन सरल सुभाय॥ द्वितिय पयोधर परमधन वाग अन्त युत सोय। भजु तुलसी संसार हित याते अधिक न

[illegible]सी ताहि बिसारि शठ भरमत फिरत भुलान॥ कौन जाति [illegible]नामनी को दुखदायक बाम। को कहिये शशिकर दुखद [illegible]नागक को राम॥ को शङ्कर गुरुवागवर शिवहरको अभिमान [illegible]को अजजगतको भरताको हरिजान॥ सरवेय सरजीव- [illegible] तेहि दृढपहिचान। पञ्चवर्ग गहि युतसहित तुलसी [illegible] समान॥ होत हरष का पाय धन बिपति तजे का धाम॥ [illegible] पुनि कनारि तर अति सुखदायक राम॥ बीर कवन [illegible] धीर कवन रतराम। कवन क्रूर हरिपदबिमुख [illegible]मी बगराम॥ कारण को कंजीव को खंगुण कह सब [illegible]। [illegible]नको तुलसी कहत सो पुनि आवन होय॥ तुलसी [illegible] [illegible]को ओचप बितिय रामेत॥ अब समुझे जड़ सरि- [illegible] साधु सचेत॥ जासु आसु सरदेवको अरु असार [illegible]। [illegible] दुखद तुलसी तजहु मध्य तासु सुखधाम॥ [illegible] नियमजु प्रथम हरि जो चाहसि परधाम। तुलसी कहहि [illegible] सुनहु यही सयानप काम॥ कुलिशधर्म्म युग अन्तयुत [illegible] काम॥ अशुभहरण संशयशमन सकल कला [illegible]धाम॥ शोकरको रघुनाथहर अनयश कह सब कोय। सुख- [illegible] जानन सुमति तुलसी समतादोय॥ वैरमूलहित हरवचन [illegible] उपकार। दोहा सरल सनेहमें तुलसी करै विचार॥ [illegible] कवन गुरु लघु जगत तुलसी और न आन। श्रेष्ठाको हरि- [illegible] को लघु लोभ समान॥ चरण द्वितिय नाशक निरय [illegible] अन्तरमार। भजहु सकल शोकरसदन जनपालक खल- [illegible] चपर्गग सम्बर सहित यमयुत दुखद न आन। तुलसी [illegible] युगल अन्तिकार सहजान॥ तुलसी यमगण बोध [illegible] मिटै कलेश। ताते सदगुरुशरण गह जाते पद- [illegible] भगण जगण कासों करसि रामसयन नहिं कोय।

सु विचार। तुलसी तासु शरण परे कासु न भयो उधार॥ धरा धराधर वरण युग मरण हरण भवभार। करन सतर तर परम पद तुलसी परमाधार॥ वरन धनञ्जय सूनुपति चरण शरण रति नाहि। तुलसी जगवञ्चक किठि किये विधाता नाहि॥ तुलसी रजनी पूर्णिमा हार सहित लखि लेहु। आदि अन्त युत जानि कहि तुलतरपनतननेहु॥ मातु गोत तिनि तासु पति कारन चति छिन जाहि। ज्ञान सुगति युत सुखसदन तुलसी मानत ताहि॥ भजु तुलसी औयाकिकहँ सहित तत्व युत अन्त। अन्त आयुर्जय जासुबल मन चल चञ्चल करन्त॥ हेत कहा रूप वाजपर लेत कहा इत राज। अन्त आदि युत सहित भजु जो चाहसि शुभ काज॥ चन्द्रवखि भजु गुण सहित समुझि अन्त अनुराग। तुलसी जो यह बन परे तौ तव पूरण भाग॥ जिनके हरि वाहन नहीं दधिसुत सुत जेहि नाहि। तुलसीते नर तुच्छ हैं विना समीर उड़ाहिं॥ रवि चञ्चल अरु वस्त्र द्रव वीच सुवास विचारि। तुलसिदास आसन करै अवनिसुता उर धारि॥ वन वनिताहगकोपमा युत कछ सहित विवेक। अन्त आदि तुलसी भजहु परिहरि मत कर टेक॥ उर्वी अन्तहु आदि युत कुल शोभौ कमलादि। कै विपर्य्य ऐसेहि भजहु तुलसी शमन विषाद॥ तौ तोहिकहं सब कोउ सुखद करहि कहा तव पाँच। हरव ठतिय वारिज वरण तजद तीन सुतु साँच॥ तजहु सदाशुभ चाशनरि अज्ञ सुनमस परिकाल। सजु मतईय अवन्तिका तुलसी विमल विशाल॥ एतवन्त वरवरणयुग सेत जगत सब जान। चेत सहित सुमिरण करत हरत सकल अघखान॥ मैचौवरणयकारको सहसर आदि विचारि। पञ्चवर्ग गहियुत सहित तुलसी ताहि सँभारि॥ हलयम मध्य समानयुत याते अधिक न आन॥

तुलसी पतिपहिचान विन कोउ तुलकवहुँलहोय ॥ तुलसी तगण-विहीन नर सदा नगणके वीच । तिनहिं जगण कैसे लहैं परे सगणके वीच ॥ इन्द्रमणि सुरदेव ऋषि रुक्मिणिपति शुभ जान । भोजनदूहिता काक अलि आनँद अशुभ समान ॥ को हिन सन्त अहित कुटिल नाशकको हित लोभ । पोषक तोषक दुखद अरि शोषक तुलसी चोभ ॥ सदा नगण पद प्रीति यहि जानु नगण सम ताहि । जगण ताहि जययुत रहत तुलसी संशय नाहि ॥ भगण भक्ति कर भरम तजि तगण सगण विधि होय । सगण सुभाय समुझि तजो भजे न दूषण कोय ॥ श्रीगज आसनजुतजु विहरत तीर सुधीर । यज्ञ पाय मैत्राणपद राजत श्रीरघुवीर ॥ वाणयुतजु तट निकट विहरत रामसुजान । तुलसी करकमलन ललित लसत शरासन वान ॥ मृदुमेचक शिररुह रुचिर शोभतिलक भ्रूवङ्क । धनुशर गहि जनु तहितयुत तुलसी लसत मयङ्क ॥ हंस कमल विच वरणयुत तुलसी अतिप्रिय जाहि । तीनलोकमहँ जो भजे लहै तासु फल ताहि ॥ आदि महै अन्तहु महै मध्य रहै तेहिजान । अनजाने जड़जीव सव समुझै सन्तसुजान ॥ आदि रहै मध्ये रहै अन्त रहै सो वात । रामविमुखके होत है रामविमुखते जात ॥ ललित चरण कटि कर ललित लसत ललित वनमाल । ललित-चिवुक द्विज अधरसह लोचन ललित विशाल ॥ भरणहरणअर्थ्यै-अमल सहित विकल्पविचार । कह तुलसी मति अनुहरत दोहा अर्थ अपार ॥ वर्णिष्ठादिलङ्कारमहँ सङ्केतादि सुरीति ॥ कहे वहुरि आगे कहव समुझव सुमतिविनीति ॥ कोष अलङ्कृत सन्धि गति मैत्रीवरण विचार । हरण भरण सुविभक्ति भल कविहि अर्थ निरधार ॥ देशकाल करताकरम वुधि विद्यागतिहीन । ते सुरतरु तर दारदी सुरसरितीर मलीन ॥ देशकाल गतिहीन जे

…को तनकर पग्म पियाम॥ सोई सेमर सोइ सुवा सेवत … । तुलसी महिमा मोहकी विदित बखानत सन्त॥ … देखो नगन संगय गमन समान। तुलसी समता … जान पानकहँ पान॥ बसहा भव अरि हित … न समुझान हीन। तुलसी दीन मलीनमति … पानी पानो॥ भटकत पर अद्वैतता अटकत ज्ञान … । भटकत विनरनते विकटि फटकत तिपु अभिमान॥ … निज दूषित सुखित रहित तेहि होइ। तुलसी … सुगम रामते सोइ॥ मात पिता निज … उपदेश। सुनि माने विधि आप जेहि … कलेश॥ … भलो मनाइबो भलो होनकी … । … गगनके गडुआ सो गठ तुलसीदास॥ विलि- … देवता करणी समता देव। मुये मार अविचार- … पावक पत्र॥ बिनहि बोज तरु एक भव शाखा दल … फूल। को बरणे अतिशय अमित सब विधि अकल … ॥ शुक पिक मुनिगण बुध विबुध फल आश्रित अति … । तुलसी ते भव विरहहित सो तरु तासु अधीन॥ को न- हि सेवत आय भव को न सेय पछताय। तुलसी बादहि … है आपहि आप नशाय॥ कहत विविध फल विमल … लहत न एक प्रमान। भरम प्रतिष्ठा मानि मन तुलसी … ॥ मृगजल घट भरि विविध विधि सींचत नभ- … । तुलसी मन हरषित रहत बिनहि लहे फल फूल॥ … कहहिं हमकहँ लखो नभतरुको फल फूल। ते तुलसी … मुनि मानहिं मुद मूल॥ तेपि तिन्हैं याचहिं … करि करि बार हजार। तुलसी गाडरको ढरन जाने … ॥ शशि कर सग रचना किये कत शोभा सर-

तुलसी सो तब लखि परै करै कृपा वरधीर॥ अपने खोदे कूपमहँ गिरे यथा दुख होइ। तुलसी सुखद समुझि हिये रचत जगत सब कोय॥ ता विधिते अपनो विभव दुख सुख दे करतार। तुलसी कोउ कोउ सन्त वर कीन्हे विरचि विचार॥ रसनाहीके सुत उपर करत करनतर प्रीति। तेहि पाछे जग सब लगे समुझ न रीति प्रतीति॥ माया मन जिव ईश अखि ब्रह्मा विष्णु महेश। सुर देवी औ ब्रह्मलौं रसना सुत उपदेश॥ करणधार वारिधि अगम को गमं करै अपार। जन तुलसी सन्तसङ्गवद पावे विशद विचार॥ गहि सुवेल विरले समुझि वहि गय अपर हजार। कोटिन बूड़े खबरि नहिं तुलसी कहहि विचार॥ भाव न सुनत देखत नयन तुलन न दिविध विरोध। कहहु कहौ केहि मानिये केहि विधि करिय प्रबोध॥ श्रवणात्मक ध्वन्यात्मक वरणात्मक विधि तीन। त्रिविध शब्द अनुभव अगम तुलसी कहहि प्रवीन॥ कहत सुनत आदिहि वरण देखत वरणविहीन। दृष्टिमान चर अच्छरणा एकहि एकन तीन॥ पञ्च भेद जगत विपुल तुलसी कहहिं विचारि। नर पशु स्वेदज खगज कृमि कहि बुध मत निरधारि॥ अनि विरोध तिनमहँ प्रबल प्रकट परत पहिचान। आच्छा-दर गति अपर नहि तुलसी कहहिं प्रमान॥ रोम रोम ब्रह्माण्ड बहु देखत तुलसीदास। बिन देखे कैसे कोऊ सुनि मानै विश्वास॥ वेद कहत जहँलगि जगत तेहिते अलग न आन। तेहि अधार व्यवहरत लखु तुलसी परम प्रमान॥ सरषप सूझत जासुकहँ ताहि सुमेरु असूझ। कहेउ न समुझत सो अबुध तुलसी विगत विसूझ॥ कहत अदर समुझत अवर गहत तजत कछु और। कहेउ सुनै समुझत नहीं तुलसी अति मतिबौर॥ देखो करै अदेख दूव अनदेखो विश्वास। कठिन प्रबलता

[illegible] संवारी ताकी रहन पराये पोर॥ सुने बरण माने बरण [illegible] नहिं ज्ञान। तुलसी गुरुप्रसाद बल परै बरण [illegible] बैनिगण तासके साकाकार न जान। [illegible] बिना तत्त्वा नाम भुलान॥ करनद ही [illegible] पहचान। [illegible] कानारसो भोगे [illegible] पटते सटक अटक अचित नहिं [illegible] भरमत फिरत भुलान॥ ज्यों [illegible] भये सुम तात है [illegible] पद [illegible] [illegible] निज मन समाहि लीन॥ [illegible] ते तुलसी [illegible]॥ बिन पाये [illegible] [illegible] भरि भरि [illegible] तुलसी कौन विचार। [illegible] ज्ञान नहीं निरधार॥ काम क्रोध [illegible] मनमें त्याग। का पण्डित का मूरख [illegible]॥ [illegible] ताको कारणो तजे उन न भजे अग- [illegible] भये ज्यों [illegible] पान॥ कोर [illegible] बात [illegible]। मन राखत वैराग- [illegible]॥ रामचरण परच नहीं बिन साधन [illegible]। [illegible] मुडाये बादही भाँड भये तजि गेह॥ काहू भयो [illegible] सो बनि आयो नाहि। बनते बनते बनि गयो [illegible] घरहीमाहि॥ जो गति जाने बरणकी तन गति सो [illegible]। [illegible] बिन्दु कारण यथा तथा जानु नहिं आन॥ [illegible] नाम जग जानु भरमको मूल। तुनसो करता [illegible] मानु जनि भूल॥ नाम जगत सम समुझ जग

सात। स्वर्ग सुमन अवसन्त खलु चाहत अचरज बात॥ तुलसी बोल न बूझई देखत देखन जोय। तिन शठके उपदेश-का करब सयाने कोय॥ जो न सुनै तेहि का कहिय कहा सुनाइय ताहि। तुलसी तेहि उपदेशही तासु सरिस मति जाहि॥ कहत सकल घट राममय तौ खोजत केहि काज। तुलसी कह इह कुमति सुनि उर आवत अति लाज॥ अलख कहहिं देखन चहहिं ऐसे परम प्रवीन। तुलसी जग उपदेशही बनि बुध अबुध मलीन॥ हहरत हारत रहित विद रहत धरे अभिमान। ते तुलसी गुरु आब नहिं कहि इतिहास पुरान॥ निज नैनन दीसत नहीं गहौ आँधरे बाह। कहत मोहवश तेहि अधम परम हमारे नाह॥ गगनवाटिका सींचही भरि भरि सिन्धुतरङ्ग। तुलसी मानहिं मोद मन ऐसे अधम सुमङ्ग। इषद करत रचना विहरि रङ्ग रूप सम-तूल। विहग वदन विष्ठा करे ताते भयो न तूल॥ चाह तिहारो आपते मानन आनन आन। तुलसी करु पहिचान पति याते अधिक न आन॥ आतमबोध विचार इह तुलसी करु उपकार। कोउ कोउ रामप्रसादते पावत परमतपार॥ जहां तोष तहँ राम हैं राम तोष नहिं भेद। तुलसी देखि गहत नहीं सहत विविध विधि खेद॥ गोधन गजधन वाजिधन और रतनधनखान। जब आवै सन्तोषधन सब धन धूरि समान॥ क्षुधि रति अटन विमूढ़ लट घट उद्घटत न ज्ञान। तुलसी रटत हटत नहीं अतिशय गति अभिमान॥ भूभुवङ्ग गत दाम भुव काम न विविध विधान। तो तन वर्त्तमान यत तत तुलसी परमान॥ भो उर सुक्ति विभव पढ़ि मनगत प्रकट लखात। मन भो उर अति सुक्तिते विलग विजानब तात॥ रामचरण पहिचान बिनु मिटो न मनकी दौर।

[illegible] सो कर पहिचान। आजु जेइ सो काल है तुलसी भर-
[illegible] ॥ वर्तमान आधीन दोउ भावी भूत विचार। तुलसी
[illegible] जो है सो निरुधार॥ मानस उर बर मम
[illegible] पनिनीर। उठेउ वृजिन बुधि मल भई बुधि
[illegible] पमोर॥ अलङ्कार कवि रीति यत भूषण दूषण
[illegible]। [illegible] विविध तुलसी विमल विनीति॥
[illegible] ता सो पराग रस गन्ध। कामादिक तेहि
[illegible] घाट प्रबन्ध॥ प्रेम उमंग कवितावली चली
[illegible]। राम वराबरि मिलन हित तुलसी हरष
[illegible]॥ [illegible] तरङ्ग सुछन्द वर हरत द्वैत तरु मूल। वैदिक
[illegible] विमल लसत विशदवर कूल॥ सन्तसभा विमला
[illegible] सुमङ्गलखानि। तुलसी उर सुरसरिसुता लसत
[illegible] नि॥ मुक्त मुमुक्षु [illegible] विषद श्रोता त्रिविध प्रकार।
[illegible] युग सुतट तुलसी कहहि विचार॥ बाराणसी-
[illegible] नहि [illegible] मन होय। तिमि अवधहि सरयु न तजे
[illegible] सब कोय॥ कहब सुनब समुझब पुनः सुनि समु-
[illegible] आन। अमहर घाट प्रबन्धवर तुलसी परम प्रमान॥

इति चतुर्थःसर्गः॥ ४॥

[illegible] जानु वर सकल कला गुणधाम॥ अविनाशी
[illegible] भो यह तनु धरि राम॥ सदा प्रकाश सरूपवर
[illegible] न आन। अप्रमेय अद्वैत अज याते दुरत न ज्ञान॥
[illegible] रमसकह तुलसी सन्त न आन। जाकी कृपा
[illegible] पावै पद निर्वान॥ तजत सलिल अपि पुनि गहत घटत
[illegible] नहि गति। तुलसी यह गनि उर निरखि करिय रामपद-

वस्तु न करि चित वैन। विन्द गये जिमि गेनते रहत ऐनको ऐन॥ आपुहि ऐन विचारु विधि सिद्धि विमल गति मान। आन वासना बिंदुसम तुलसी परम प्रमान॥ धन धन कहे न होत कोउ ससुझि देखु धनमान। होत धनिक तुलसी कहत दुखित न रहत जहान॥ हिमकी सूरतिके हिये लगत नीरकी प्यास। लगत शब्द गुरु तरनिकर सोसैं रही न आस जाके उरवर वासना भई भाष कछु आन। तुलसी ताहि विडंम्बना कहि विधि कथहि प्रमान॥ रुजत न भव परचे विना भेषज करि किमि कोय। जान परै भेषज करै सहज नाश रुज होय॥ मानस व्याध कुचाह तव सदगुरु वैद समान। जासु वचन अलवल अवल होन सकल रुज हान॥ रुचि बाढ़े सतसङ्गमहँ नीति क्षुधा अधिकाय। होत ज्ञानबल पीन अल वृजिन विपति मिटि जाय॥ शुक्लपक्ष शशि स्वच्छमी कृष्णापक्ष द्युतिहीन। वड्‌व घटव विविध भाँति विचि तुलसी कहहिं प्रवीन॥ सतसङ्गति सितपक्ष सम असित असन्त प्रसङ्ग। जानु आपकहँ चन्द्र सम तुलसी वदन अभङ्ग॥ तीरथपति सतसङ्ग सन भक्ति देवसरि जान। विधि उलटी गति रामकी तरणिसुता अनुमान॥ वर मेधा मानहु गिरा धीर धर्म्म नदबोध। मिलन त्रिवेणी मनहरणि तुलसी तजहु विरोध॥ समस्कन्द सव मज्जन विशद मल अनीत गद धोय। अवश मिलन संशय नहीं सहज रामपद होय॥ क्षेम विमल वाराणसी सुरअपगा सम भक्ति। ज्ञानविश्वेश्वर अति विशद लसत दया सह शक्ति॥ वसत क्षेम गृह जासु मन वाराणसी न दूरि। विलसित सुरसरि भक्ति जहँ तुलसी नय कृत भूरि॥ सित काशी मगहर अमित लोभ मोह मद काम। हानि लाभ तुलसी समुझि दास करहु वसुयाम॥ गये पलटि आवै

रन परिहरि परखुरा। सूक्षम गुण को जीवकर तुलसी सो तन-
ऊर । पावत खपर तिते गया जात तथा रविमाहि॥ जहँते
कारन ते दूरन तुलसी जानत ताहि। प्रकट भये देखत
तरन लखत कोउ कोय। तुलसी यह अतिशय अगम
गुरु सुगम न होय। या जग जे नयहीन नरबरबस दुखनग-
नाहि। गकटत दूरत महादुखी कहँलगि कहियत ताहि॥
ग मग अपने गहे मगकोहु गहत न धाय। तुलसी राम-
नाम बिनु सो किमि जानो जाय॥ महिते रवि रविते अवनि
कहुँ नाहि। तुलसी तबलगि दुखित अति शशिमन-
न नाहि॥ सन्तनको गनि शीतकर लेश कलेश न होय।
विषपद सुखदा सदा जानु परमपद सोय॥ तजत अमिय
जानि जग तुलसी देखत रूप। गहत नहीं सबकहं विदित
अतिशय अमल अनप॥ शशिकर सुखद सकल जगत को तेहि
जानत नाहि। कोक कमलकर दुखदकर तदपि दुखद नहि
नाहि॥ बिन देखे समुझे सुने सोउ भो मिथ्यावाद। तुलसी
गुरु समझे लगे सहजहि मिटै विषाद॥ वरषि विश्व हरषित
करत हरत ताप अघप्यास। तुलसी दोष न जलदकर त्यों जड़
जरत जवास॥ चन्द्र देत अमि लेत विष देखहु मनहि विचार।
तुलसी निशि प्रिय सन्तवर महिमा विशद अपार॥ रसम विदित
रवि रूप लखु शीत शीतकर जान। लसत योगयमकार भव
तुलसी मनमम समान॥ लेति अवनि रविअंशकहं देति अमिय
जलसार। तुलसी सूक्षमको सदा रवि रजनीश अधार॥ भूमि
भानु अम्बु अनल अप सकल चराचर रूप। तुलसी बिन गुरु ना लहै
यह मत अमत अनूप॥ तुलसी जे लयलीन नर ते निशिकर तम-
लीन। अरु सकल रविगत भये महाकष्ट अतिदीन॥ तुलसी
जोगते मनमर्जत जब होय। राम मिलन संशय नहीं

प्रीति ॥ चुम्बक इरहन सेति जिम सन्तन हरि सुखधाम। जान निरीचर सम सफरि तुलसी जानत राम ॥ भरत हरत दरशत सबहिं पुनि अदरश सबकाहु ॥ तुलसी सुगुरु प्रसादवर होत परमपद लाहु ॥ यथा प्रत्यच्छ सरूप बहु जानत है सब कोय ॥ तथाहि ले गतिको लखब असमञ्जस अति सोय ॥ यथा सकल अपि जात अप रविमण्डलके माहिं। मिलत तथा जिव रामपद होत तहांले नाहिं ॥ कर्म्मकोष सँग ले गयो तुलसी अपनी बानि। जहां जाय जिलसे तहां परे क ्रां पहिचानि ॥ ज्यों धर्म्मीमहँ हेतु सब रहत यथा धरि देह। त्यों तुलसी ले राममहँ मिलत कबहुं नहिं एह ॥ शोषक पोषक समुझ शुचि राम प्रकाशसरू प। यथा तथा बिन देखिये जिमि आदरश अनूप ॥ कर्म मिटाये मिटत नहिं तुलसी किये विचार। करतब होके फेर है या विधि सार उधार ॥ एक किये हो दूसरो बहुरि तीसरो अङ्क। तुलसी केसेहु ना नशे अतिशय कर्म तरङ्ग ॥ इन दोउनते रहत भो को3 न राम तजिआन। तुलसी यह गति जानिहै कोउकोउ सन्तसु जान ॥ सन्तनको ले अमिसदन समुझहि सुगति प्रवीन। कर्मविपर्यय कबहुँ नहिं सदा रामरसलीन ॥ सदा एकरस सन्त सिय निश्चय निशिकर जान ॥ रामदिवाकर दुखहरण तुलसी शीलनिधान ॥ सन्तनकी गति उरबिजा जानहु शशि परनाम। रमित रहत रसमें सदा तुलसी रति नहिं आन। जातरूप जिमि अनल मिलि ललित होत तन आन। सन्तशील कर सोय तिमि लमहिं रामपद पाय ॥ आपुहि बाँधत आपु हठि कौन छुड़ावन ताहि। सुखदायक देखन सुनत तदपि सो मानत नाहि ॥ जीन त... ते ... गति ऊर्द्ध तीन गति जात। तुलसी मकरी... न्त इव कर्म ... कबहुँ नशात ॥ जहां रहत तहँ सह सदा तुलसी तेगी बानि। सुधरे विधिवश होय जब सतसङ्गति पहिचानि। रवि रजनीश ...

नि दरसाम। सो बरतरता समन कोउ सब विधि पूरण-
काम। करना कारण सारपद आवै अमल अभेद। कर्म
... बनि रहन हैं तुलसी जानत वेद॥ स्वेदज जवन प्रका-
... करै कोउ नाहि। भये प्रकट तेहिके सुनौ कोन
... ताहि॥ भगो विषमता कर्म महँ समता किये न
... तुलसी गमता रासुझ कर सकल मान मद धोय॥
... रामरत जग सुहृद जान सबकाहु। तुलसी यह
... दिन प्रति अति सुख लाहु॥ यह मनमहँ
... है कोउ अपर न आन। कासन करत बिरोध
... तुलसी समुझ प्रमान॥ महि जल अनल सुअनिल
... प्रकट तन रूप। जानि जाय वर बोधते अति शुभ
... अनूप॥ जापै आत्ममातते उपजे बुद्धि विशाल।
... छलहीन हैं गुरुसेवन कछु काल॥ कारज युग
जानहु हिये नित्य अनित्य समान। गुरु गमते देखहि सुजन
... तुलसी परमान॥ महि मयङ्क अहिनादको आदि ज्ञान
... भेद। ता विधि तेहि जीवकहँ होन समुझ बिन खेद॥
... फिर निज कर्म महँ भ्रम भवका यह हेत॥ तुलसी कहत
सुजन सुनहु चैन न समुझ अचेत॥ नामकार दूषण नहीं
तुलसी किये विचार। कर्मनकी घटना समुझि ऐसे वरण
उचार॥ सुजन कुजन महि गत यथा तथा भानु शशिमाहिं।
तुलसी जानन हो सुखी होत समुझ बिन नाहिं॥ मातु तात
भरणनि जिमि तिमि तुलसी गति तोरि। मात न तात न
जानु नर है तेहि समुझ वहोरि॥ सर्व सकल तैं है सदा
... सब ठौर। तुलसी जानहि सुहृद जे ते अति मति
... ॥ अलङ्कार घटना कनक रूप नाम गण तीन।
तुलसी रामप्रसादने परमुहि परमप्रवीन॥ एक पदारथ

कहहिं सुमति सब कोय। सेवक पद सुखकर सदा दुखद सेव्य-पद जान। यथा विभीषण रावणहि तुलसी समुझ प्रमान॥ शीत उष्णकर दृगयुग निशिदिन कर करतार। तुलसी तिन-कहँ एक नहि निरखहु करि निरधार॥ नहि नैनन काहू लख्यो धरत नाम सब कोय। ताते साँचो है समुझ झूँठ कबहुँ नहिं होय॥ वेद कहत सब कोउ विदित तुलसी अमिय स्वभाव। करत पान अपि रुज हरत अविरल अमल प्रभाव॥ गन्ध शीत अपि उष्णता सबहि विदित जग जान। महिवन अनल सुश्रानि लग विन देखे परमान॥ इनमहँ चेतन अमलअल विलखत तुलसीदास। सो पद गुरुउपदेश सुनि सहज होत परकास॥ यहि विधिते वर बोध इह गुरु प्रसाद कोउ पाव। हैं ते अल तिहुँ कालमहँ तुलसी सहज प्रभाव॥ काकसुतासुत-वासुता मिलत जननि पितु धाय। आदि मध्य अवसान गत चेतन सहज सुभाय॥ समता स्वारथहीनते होत न विशद वि-वेक॥ तुलसी यह तिनहीं फबै जिनहि अनेक न एक॥ सब स्वा-रथ स्वारथ रटत तुलसी घटत न एक। ज्ञानरहित अज्ञानरत कठिन कुमनकर टेक॥ स्वारथ सो जानहु सदा जासों विपति नशाय। तुलसी गुरुउपदेश विन सो किमि जानी जाय॥ कारज स्वारथ हित करै कारण करै न होय। मनवा ऊषविशेषते तुलसी समझहु सोय ५० कारण कारज जानता सबकाहू पर-मान। तुलसी कारजकारजो सो तैं अपर न आन॥ विन करता कारज नहीं जानत हैं सब कोय। गुरुमुख श्रवण सुनत नहि प्राप्ति कवन विधि होय॥ करता कारण कारजहु तुलसी गुरु पर-मान। लोपत करता मोहवश ऐसो अबुध मलान॥ अनिल सलिल विधियोगते यथा वीचि बहु होय। करत करावत नहि कछुक करता कारण सोय॥ खेम धरण करतार कर तुलसी

—र्दशन गान। तुलसी ना लखि पाइ हो किये अमित अनुमान॥ अनुमान साचो रहित होत नहीं परमान। कह तुलसी दगन गो सो कहु अपरको आन॥ मिति कारण करता सहित कारज किये अनेक। जो करता जाने नहीं तौ कहु कवन विवेक॥ स्वर्णकार करता कनक कारण प्रकट लखाय। अलङ्कार कारज सुखद गुण शोभा सरसाय॥ चामीकर भूषण अमित करता कह तन भेद। तुलसी जे गुरु गमरहित ताहि लगत अति खेद॥ तन निमित्त जहँ जो भयो तहां सोइ परमान। जिन जाने माने तहां तुलसी कहहिं सुजान॥ मृण्मय भाजन विविध विधि करता मन भव रूप। तुलसी जानेते सुखद गुरु गम ज्ञान अनूप॥ सब देखत सुण भाज नहिं कोइ कोइ भाजन कुलाल। जाके मनके रूप बहु भाजन विलखु बिशाल॥ एक रूप कुलालको माटी एक अनूप। भाजन अमित विशाल लघु सो करता मन रूप॥ जहां रहत बरतत तहां तुलसी नित्य स्वरूप। भूत न भावी ताहि कह अतिशय अमल अनूप॥ श्याम समीर प्रत्यक्ष अप स्वच्छा दरश लखात। तुलसी गगनमाहिं बिन अविगति जानि न जात॥ तुलसी तल रहि जात है युग तन अचल उपाधि। यह गति तेहि लखि परत जेहि भई सुमति शुठि साधि॥ करता कारण कालके योग काम मन गान। पुनःकाल करता दुरत कारण रहत प्रमान॥

इति पञ्चमः सर्गः॥ ५॥

त्रिविध गुण संज्ञा अगम अपार। तुलसी सुगुरुप्रसादते पाये पद निरधार॥ गन्ध न मूल उपाधि बहु भूषण तन गण जान। शोभा गुण तुलसी कहहि समुझहिं सुमतिनिधान॥ जैसो जहां उपाधि तहँ घटित पदारथ रूप। तैसो तहां प्रभा समन गुणगण सुमति अनूप॥ जानु वस्तु अस्थिर सदा मिटत मिटाये नाहिं। रूप नाम प्रकटत दृग्त समुझि विलोकहु ताहि॥ पेष रूप संज्ञा कहव गुण सुविवेक विचार। इतनो-ई उपदेश वर तुलसी किये विचार॥ सदा सगुण सीता रमण सुखसागर वलधाम। जन तुलसी परखे परम पाये पद विश्राम॥ सगुण पदारथ एक नित निर्गुण अमित उपाधि। तुलसी कहहि विशेषते समुझ सुगति सुठि साधि॥ यथा एक-महँ देद गुण तामहँको कहु नाहि। तुलसी वर्त्तत सकल हैं समुझत कोउ कोउ ताहि॥ तुलसी जानत साधुजन उदय अस्तगत भेद। विन जाने कैसे मिटै विविध जनन जन खेद॥ संशय शोक समूल रुज देत अमित दुख ताहि। अहि अनुगत सपने विविध चाहि परायण जाहि॥ तुलसी सांचो श्राप है जव लगि खुलैं न नैन। सो तवलगि जवलगि नहीं सुनै सुगुरुवर वैन॥ पूरण परमारथ दरश परशत जौलगि आश। तौलगि खन उत्थान नद जवलगि जल न प्रकाश॥ तवलगि हमते सव वड़ो जवलगि है कछु चाह। चाहरहित कह को अधिक पाय परमपद थाह॥ कारण करता है अचल अपि अ-नादि अजरूप। ताते कारज विपुलतर तुलसी अमल अनूप॥ करता जानि न परत है विन गुरुवरपरसाद। तुलसी निज सुख विधि रहित केहि विधि मिटै विषाद॥ मृण्मय घट जानत जगत विन कुलाल नहिं होय। तिमि तुलसी करता रहित कर्म करै कहु कोय॥ ताते करता ज्ञान कर जाते

नि[illegible]रूपहि महाप्रबल पति सोइ। जो कोइ तेहि पाछे [illegible] सो पर पागि होइ॥ तुलसी होत नहीं कछुक रहित सुवन व्यवहार। तोहींते अपज भयो सब विधि तेहि परचार॥ सुवन देखि भने सकल भय अति परम अधीन। तुलसी जेहि समुझावतो सो मन करत मलीन॥ मानत सो साँचो हिये सुनत [illegible] नाहि॥ तुलसीते समुझत नहीं जो पद अमल [illegible]॥ जाहि कहत हैं सकल सो जेहि कह तव सो ऐन॥ [illegible] नाहिं समुझि हिये अगहु कछु चित चैन॥ तुलसी [illegible] कहँत आन सब काय। यहि विधि परम विड[illegible] कबहु न काहूँ होय॥ गुरु करिबो सिद्धान्त यह होय यथारथ बोध। अनुचित उचित लखाय उर तुलसी मिटै विरोध॥ गनगननिको फल यही संशय रहै न लेश। है अविचार गति चाल चित पावै पुनि न कलेश॥ जो मरबो पद भवन को यह लगि साध असाध। कवन हेतु उपदेश गुरु सन्तनदनि भव बाध। जो भाबो कछु है नहीं झूठो गुरु सतसंग। तृपि कुमति ते झूठ गुरु सन्तनको परसङ्ग॥ जौले लखि नाहीं पाप तुलसी परपद आप। तौलगि सौहि त्रिवश सकल, कहत पुत्रको बाप॥ जहँलगि संज्ञा वरण भो जासु कहिने होय। तो तुलसीसे है सबल आन कहा कछु होय॥ अपने नैनन देखि जे चलहिं सुमतिवर लोग। तिनहिं न बिदनि विषाद रुज तुलसी सुमति सुयोग॥ मृगा गगनचर ज्ञान बिन कछन नहीं पहिचान। परवश शठ हठ तजत सुख तुलसी फिरत भुलान॥ काह कहो तेहि तोहिके जेहि उपदेशेउ ज्ञान। तुलसी कहत सो दुख सहत समुझ रहित हित बान॥ बिन काटे तरुवर यथा मिटै कवन विधि छाँह। त्यों तुलसी उपदेश बिन निःसशय कोउ नाँह॥ अपनो कर-

जल थल तन गत है सदा ते तुलसी तिहुँकाल। जन्म मरण समुझे विना भाषत समन विशाल॥ तैं तुलसी करता सदा कारण शब्द न आन। कारण संज्ञा सुख दुखद बिन गुरु तेहि किमि जान॥ कारजरत करता समुझ दुख सुख भोगत सोय। तुलसी श्री गुरुदेव बिन दुखप्रद दूर न होय कारण शब्द स्वरूपमें संज्ञा गुण भव जान। करता सुरगुरुते सुखद तुलसी अपर न आन॥ गन्ध विभावरि नीर रस सलिल अनल गत ज्ञान। वायुवेगकहँ बिन लखे बुध जन कहहिं प्रमान॥ अनुस्वार अक्षर रहित जानत हैं सब कोय। कह तुलसी जहँलगि वरण तासु रहित नहिं होय॥ आदिहु अन्त-हु है सोई तुलसी और न आन। बिन देखे समुझे बिना किमि कोइ करै प्रमान॥ रहित विन्दु सब वरणते रेफ सहित सब जान। तुलसी स्वर संयोगते होत वरण पद मान॥ अनु-स्वार सूक्ष्म यथा तथा वरण अवस्थ। बो सूक्ष्म अस्थूल सो तुलसी कबहुँ न सूल॥ अनिल अनल पुनि सलिल रज तनगत तनवत होय। बहुरि सो रजगत जल अनल मरुत सहित रवि सोय॥ और भेद सिद्धान्त यह निरखु सुमति कर सोय। तुलसी सुत भव योग बिन पितु संज्ञा नहिं होय॥ संज्ञा कह तव गुण समुझ सुनव शब्द परमान। देखब रूप विशेष है तुलसी वेष बखान॥ होत पिताते पुत्र जिमि जानत को कहु नाहि। जबलगि सुत परसो नहीं पितु पद लहै न ताहि॥ तिमि वरणन संज्ञा करै वरण वरण संयोग। तुलसी होय न वरण कर जबलगि वरण वियोग॥ तुलसी देखहु सफलकहँ यहि विधि सुत आधीन। पितु पद परखि सुदृढ़ भयो कोउ कोउ परम प्रवीन॥ जहँ देखो- सुत पद सकल भयो पिता पद लोप। तुलसी सो जानै सुई जासु अमोलिक चोप॥ स्यात सुवन

जानो दर्सन आपहूँ भलो मन्द जेहि काल। तब जानव तुलसी भई अतिगत बुद्धि विसाल ॥ तुलसी जबलगि लखि परत देह प्राणको भेद। तबलगि केसेके मिटै करम जनित दुख खेद ॥ जोर देह सोइ प्राण है प्राण देह नहि दोय। तुलसी जो लगि पाय है सो निरदय नहि होय ॥ तुलसीते झंठो भयो करि झूठे रंग प्रीति। है साँचो हो साँच जब गहे रामको रीति ॥ झूठो रचना साँच है रचत नहीं अलसात। गजनद कागरत निरठि नेक न बूझत बात ॥ करम खगी कर मोह शर भ्रम चराचर जाल। हरत भरत भर हर गनत जगत जानयो काल ॥ कहत काल किल सकल बुध ताकर यह व्यवहार। उतपति थिति लय होत हे सकल तासु अनुहार ॥ अहङ्कार त्रिगताय दल विपुल शाखायुत वर मूल। फूलि फरत सब आतुरत तुलसी सकल सतूल ॥ कर्तब करतब सकल जेहि नाहि रहत नहि आन। जानत मानत आन विधि अनूसार अभिमान ॥ हानि लाभ जय विविध विजय ज्ञान दान सनमान। खान पान शुचि रुचि अशुचि तुलसी विदित विधान ॥ भावक पावक सम विषम रम भम गम गति ज्ञान। घट बट लट नट नाहि जट तुलसी रहित न जान ॥ कठिन काम करयो कवन करता कारक काम ॥ काय कष्ट कारण करन होत काल सम याम ॥ खबर आतमा बोध वर खर तिन कबहुँ न होय। तुलसी खसम विहीन जे ते खरतर नहि सोय ॥ नित रति विन व्यवहरित विधि अगम सुगम पथ नीच। धीर धरम धारण हरण तुलसी परत न बीच ॥ मन्द मन विचरत विगड़ तासु योग भव नाम। करता रूप यह जानि जेहि संज्ञा सब गुणधाम ॥ नाम जाति गुण देखि के भयो भ्रमत उर भर्म। तुलसी गुरुउपदेश विन जानि सके

तब आप लखि सुनि गुनि आप विचार। तौ ताहिकहँ दुख-दा महा सुखदा सुमति अधार॥ ब्राह्मण वर विद्या विनय सुरनि विवेकनिधान। पथ रति अनथ अतीत मति सहित दया [illegible] मान॥ विनयछत्र शिर जासुके प्रतिपद पर-उपकार। तुलसी सो चत्री सही रहित सकल व्यभिचार॥ वैश्य विनय मग पग धरै हरै कटुक घर बैन। सदय सदा शुचि सरलता होय अचल सुख ऐन॥ शूद्र चुद्र पथपरि हरै हृदय विप्रपद मान। तुलसी मन समता सुमति सकल जीव सम जान॥ हेतु वरण वर शुचि रहनि रसनि रास सुखसार। चाहन काम सुरा न रस तुलसी सुदृढ़ विचार॥ यथालाभ सन्तोषरत गृह मगवन सगरीत। सो तुलसी सुखमें सदा जिन तनु विभव विनीत॥ रहै जहां विचरैं तहां कमी कहूँ कछु नाहिं। तुलसी तहँ आनन्द सँग जात यथा सँग छाहिं॥ करत कर्म जेहिको सदा सो मन दुखदातार। तुलसी जो समुझे मनहिं तो तेहि तजे विचार॥ कहत सुनत समुझत लखत तेहिते विपति न जाय। तुलसी सबते विलग हैं जबते नहिं ठहराय॥ सुनत कोटि कोटिन कहत कौड़ी हाथ न एक। देखत सकल पुराण श्रुति तापर रहित विवेक॥ समुझत है सन्तोष धन याते अधिक न आन। गहत नहीं तुलसी कहत ताते अशुभ मलान॥ कहा होन देखे कहे सुनि समुझे सब रीति। तुलसी जबलागि होत नहिं सुखद रामपद प्रीति॥ कोटिन साधनके किये अन्तरमल नहिं जाय। तुलसी जौ लगि सकल गुण सहित न कर्म नशाय॥ चाह बनी जबलगि सकल तबलगि साधन सार। तामहँ अमित कलेशकर तुलसी देख विचार॥ चाह किये दुखिया सकल ब्रह्मादिक सब कोय। निश्चलता तुलसी कठिन राम कृपावश होय॥

[illegible] परे बातहि बात नसाय। बातहि पादिहि दीप भव [illegible] नसाय॥ बातहिते बनि आवई बातहिते बनि [illegible]। [illegible] मिलत बातहिते बोरात॥ बात बिना [illegible]। [illegible] बातहि ते हरषात। बनत बात बर बातते [illegible]॥ तुलसी जानु बात बिन बिगरत हर दुक [illegible]। [illegible] दुख बातके जानिपरत कुशलात॥ प्रेम वैर [illegible] अपयश जय हान। बात बीज इन सबनको [illegible] सुजान॥ सदा भजन गुरु साधु द्विज जीव दया [illegible]। सुखद सुने रत सत्यव्रत स्वर्ग सप्तसोपान॥ वञ्चक [illegible] त्रिविहिंसा अतिलीन। तुलसी जगमहँ [illegible] नरकनिशनी तीन॥ जे नर जग गुण दोषयुत तुलसी [illegible]। कबहुँ सुखी कबहूँ दुखित उदय अस्त व्यवहार॥ [illegible] यथानम काल अचल बलवान। त्रिविध विकल [illegible] तुलसी कहहिं प्रमान॥ अनुभव अमल अनूप गुरु [illegible] होय॥ बचे काल क्रम दोषते कहहिं सुबुध सब कोय॥ सब विधि पूरण धामबर राम अपर नहिं आन। ताको कृपाकटाक्षते होत हिये दृढ़ज्ञान॥ सो स्वामी सो तर सखा सो बर सुखदातार। तात मात आपदहरण सो आसमय अधार॥ सुखद दुखद कारज कठिन जानत को तेहि नाहि। जानैहुपर बिन गुरुकृपा करतब बनत न काहिं॥ तुलसी सकल प्रधान है बेद विदित सुखधाम। तामहँ समुझब कठिन अति युगलभेद गुणनाम॥ नाम कहत सुख होत है नाम कहत दुख जात। नाम कहत सुख जात दुरि नाम कहत दुख खात॥ नाम कहत बैकुण्ठसुख नाम कहत अघखान। तुलसी तोते [illegible] समुझि कहहु नाम पहिचान॥ चारों चौदह अष्टदश रस [illegible] भरिपूर। नामभेद समुझे बिना सकल समुझमहँ धूर

को मर्म॥ अपन कर्म वर मानिकै आप बँधो सब कोय। कार-जरत करता भयो आपन समुझत सोय॥ को करता कारण लखै कारज अगम प्रभाव। जो जहँ सो तहँ तर हरष तुलसी सहज सुभाव॥ तुलसी विन गुरुको लखै वर्त्तमान विधिरीत। कहु केहि कारणते भयो सूर उष्ण शशि शीत॥ करता कारण कर्मते पर पर आतमज्ञान॥ होन न विन उपदेश गुरु जो षट वेद पुरान॥ प्रथम ज्ञान समुझै नहीं विधि निषेध व्यवहार उचितानुचितहि हेरि धरि करतव करिय सँभार॥ जब मन-महँ ठहराय विधि श्रीगुरुवरपरसाद। इहि विधि परमातम लखै तुलसी मिटै विषाद॥ वरवस करत विरोध हठि होन चहत अकहीन। गहि गति वक्र वृक प्वान इव तुलसी परम प्रवीन॥ लाक कर्म भेषज विदित लखत नहीं मतिहीन। तुलसी शठ अकवश विहठि दिन दिन दीन मलीन॥ करता-होते कर्म गुण सो गुण दोष सरूप। करत भोग करतव यथा होय रङ्क किन भूप॥ वेद पुराणरुशास्त्र युत निज बुधिवल अनु-मान। निज निज करि करि है वहुरि कहु तुलसी परमान॥ विविध प्रकार कथन करै नाहि यथा भवमान। तुलसी सु-गुरुप्रसादवल कोउ कोउ कहत प्रमान॥ उर डर अतिलघु होनको भव लघु सुरति भुलान। स्वर्गलाह लखि परत नहि लखत लोहको हान॥ नैनदोष निज कहत नहि विविध वनावत वात। सहत जानि तुलसी विपति तदपि न नेक लजात॥ करत चातुरी मोहवश लखन न निज हित हान। शुक मरकट इव गहत हठ तुलसी परम सुजान॥ दुखिया सकल प्रकार शठ समुझि परतही नाहिं। लखत न कण्टक मीन जिमि अशन भषत भ्रम नाहिं॥ तुलसी निज मनकामना चहत सुन्यकहँ सेय। वचन गाय सबकै विविध कहहु पयस केहि देय॥ वातहि वात

मपयपरे सुपुरुष नरन लघुकरि गनिय न कोय। नायक पीपर बोजसम बनैतो नवतर होय॥ बड़े राम रत जगतमें के परहित निज जाहि॥ प्रेमपेग जिनको जिन्हे बड़े जो सबही चाहि॥ दुनो मन्तसते दूने सन्तान तहे निनार॥ तनधन बक्सन सबल जग रागुग परउपकार॥ कै गहि आपद निभय वर नीचहि दत न लाज॥ छानिजुकि छिजग जहँ नहिं नागागण कोय॥ बड़े रहहिं लघु के गुणहि वामो लघुहि न हेत। तुच्छते मुक्ताअरुण गुन्जा होत न पोत॥ होहिं बड़े लघु समय सह तो लघु सकहिं न काहि। चन्द्र दूबरो कूबरो तऊ नखनते बाहि॥ उरग तुरग नारी नृपति। नरनीचो हथियार। तुलसी परखब रहब निज इनहिं न पलटत बार॥ दुरजन आप समान करि को राखै हितलागि। नयादोय गहि जाहि पुनि पलटि बनावत आगि॥ मन्तनन्त-नन्तोंनिगा पुरुष अधम धन पाठ। पुनि गुण योगवियोगते तुरत जाहिं थैं गाठ॥ नोच निचाई नहिं तजे जो पावहि सतसङ्ग। तुलसी चन्दनविटप बसि विनविष भय न भुजङ्ग॥ दुरजन दरपनसम सदा करि देखो हिय ठोर॥ सनमुखकी गति और है विमुख भये कछु और॥ मित्र अवगुण मित्रको परपहँ भाषत नाहिं। ज्यों छांहिं गिमि आपनी राखत आपहि माहिं॥ तुलसी सो समरथ सुमति सुकृती साधु सुजान। जो विचारि व्यवहरत जग खरचलाभ अनुमान॥ सोम सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन साँच॥ सुनि करिये पुनि परिहरिय परमनरञ्जन साँच॥ पुटिहि निज रुचि काज करि रुटहिं काज बिगारि। तिया तनय सेवक सखा मनके कण्टक चारि॥ नारि नगर भोजन सचिव सेवक सखा अगार॥ सरस परिहरे रङ्गरस निरस विषादविकार॥ दोरव रोगी दारिदी कटुवच लोलुपलोग। तुलसी प्राप समानज्यों वरित त्यागिबे योग॥ धाय लगे लोहा ललकि

वार दिवस निशि मासमित असित वरष परमान। उत्तर दक्षिण आश रवि भेद सकलमहँ जान॥ कर्म शुभाशुभ मित्र अरि रोदन हँसन वखान॥ और भेद अति अमित है कहँ लगि कहिय प्रमान॥ जहँलगि जन देखव सुनव समुझव-कहव सुरीत। भेदरहित कछु है नहीं तुलसी वदहिं विनीत॥ भेद याहि विधि नाममहँ विनु गुरु जान न कोय॥ तुलसी कहहिं विनीत वर ज्यों विरञ्चि शिवहोय॥

इति षष्ठःसर्गः ६॥

तिनहिं पढ़े तिनहीं सुने तिनहिं सुमति परगास। जिन आशा पाछे करे गहे अ ज्ञख नौसास॥ तबलगि योगी जगतगुरु जबलगि रहे निरास। जब आशा मनमें जगी जग गुरु योगी दास॥ हित पुनीत स्वारथ सबहि अहित अशुचि विन-चाउ। निजमुख माणिक सम दशन भूमि परत भौहाउ॥ निज गुणघटत न नागनग हर्षि न पहिरत कोल। गुञ्जा प्रभुभूषण करे ताते बढ़े न मोल॥ देइ सुमन करि वास तिल परिहरि खरि रस-लेत। स्वारथहित भूतल भरे मनमेंचक तन सेत॥ अँसुवन पथिक निराशने तटभुइ सजल सरूप। तुलसी छिन वञ्चे नहीं इन सबथल केरूप॥ तुलसी मित्र महासुखद सबहि मित्रकी चाउ। निकट भये विलसत सुखप एक छुपाकर छाउ॥ मित्र कोप बरतर सुखद घनहित मृदु न कराल॥ द्रुमदल शिशिर सुखात सब सह निदाघ अति लाल॥ खल नेरे गुण मान नहिं मेटहि दाता वोप॥ जिमि-जल तुलसी देत रवि जलद करत तेहि लोप॥ वरषत हरषत लोगसब करषत लखत न कोय। तुलसी भूपति भानुसम प्रजा भागवश होय॥ माली भानु कृशानु सम नीतिनिपुण महिपाल। प्रजा भागवश होहिंगे कबहिं कबहिं कलिकाल॥

[illegible]। [illegible] रामभरोसो एक॥ तुलसी [illegible] धर्मविचार। सुजनशील स्वभावरिज [illegible]॥ [illegible] विवेकरति रीति जासु उरहोय। [illegible] पावइनाहिनकोय॥ विनप्रपञ्च खलभीख [illegible] कलेश। वामनवलिसों लीन्हिछलि दीन्ह [illegible]॥ [illegible] वामन वलिहि छलो भलो जिय- [illegible]। [illegible] मनहो गइनगलानि॥ बड़ेबड़े- [illegible]। तुलसी [illegible] वलि- [illegible]॥ [illegible] उपकार विकारफलतुलसीजानजहान [illegible] कथा सत्य उपखान॥ ज्यों मूरख [illegible]। दुर्योधन कहवोधकिन आयेश्याम [illegible]॥ [illegible] विरोध जब अनहितपर अपमान। राम- [illegible] अमान॥ साहसही सिख [illegible] परिपाक। शठ सङ्कटभाजन भये हठि [illegible]॥ [illegible] करि खोजलें करिमतसव विन- [illegible]। [illegible] विश्वास॥ रीक्ष आपनी [illegible] विचारविहीन। तेउपदेशन मानही मोह महोद [illegible]। [illegible] जागतहोरहसाय। उपदे- [illegible] तुलसी उचित न होय॥ परमारथ पथमत समु- [illegible] विषय लपटान। [illegible] चितात वाधजरी मानहुँ [illegible]॥ [illegible] अमिय उपदेशगरु भजत विषय विषखान। [illegible] पयस चाटत जिमि शठश्वान॥ सुरसदतन [illegible] निपट कुचालि कुसाज। मनहुं मवासे मारि कलि [illegible] समाज॥ चोर चतुर वटमार भट प्रभु प्रिय [illegible]। सब भक्षो परमारथो कलि सुपन्थ पाखण्ड॥ [illegible] महामहिपाल। साम न

खञ्चित लेइयनीच। समरथ पापीसों व.र तीन वेसाहो मीच॥ तुलसी स्वारथ मःसुहे परमारथ तन पीठि॥ अन्ध कहे दुख पावकहि डिठियारे हियडीठि। अनमसको ने शोचवर कवशि ससुझिये आप॥ तुलसी आपन समुझि बिन पलपलपर परि-ताप। डूत जन्हि मन्दिर जरत लावहिं धारि वबूर। वोये ला-चह समय बिन कुमतिशिरोनरि कूर। निडर अनय करि अन-कुशल वे सदाइ सम होय। गयो गयो कह सुमतिजन भयो कुनति कइ कोय॥ वहुसुत वहुरुचि वहुवचन बहु अचारव्यवहार इनको भलो मनाइवो यह अज्ञान अपार॥ अपयश योग कि जानकी मणिचोरी कि कान्ह। तुलसीलोग रिझाइवो कातिकातिवो नान्ह॥ मँगि मधुकरी खात जे सोवत पाँव पसारि। शापप्रतिष्ठ वड़ि परौ तुलसी वाढ़ीरारि॥ लही आँखिकवआँध-रहि वाँझ पूत कव जाय। कव कोढ़ी काया लही जगवहराइच-जाय॥ या जगकी विपरीति गति काहि कहो समुझाय। जल जलिगो साव वाधिगो जनतुलसी मुसुकाइ॥ के जूझिवो कि वूझिवो दान कि कायकलेश। चारिचारु परलोकपथ यथा योगउपदेश॥ वुध कि मान मरवेइवन मते खेत सव सोंच॥ तुलसी इमिगति जानिवो उत्तम मध्यम नीच॥ सहि कुवोल सासति असम पाय अनट अपमान। तुलसी धर्म न परिहरहि ते वर सन्त सुजान॥ अनहित ज्यों परहित किये आपनहित तमजान॥ तुलसी चारुविचारमति करिय काज समजान॥ मिथ्यामाहुर सजनकहँ खलहिं गरलसम साँच। तुलसी परसि परात जिमि पारद पावक आँच॥ तुलसी खलवाणी विमल सुनि समुझब हिय हेरि। रामराज वाधक भई मन्दमन्थरा चेरि दान दयादिक युद्धके वीरवीर नहिं आन। तुलसी कहहिं विनोद इति ते नरवर परमान॥ तुलसी साथी विपतिके विद्याविनय-

दाम न भेद कलि केवल दण्ड कराल॥ पाप पलीता कठिन गुरु गोला पुहमपाल॥ राग रोष गुण दोषको साक्षो हृदय-सरोज। तुलसी विकसत नित लखि सकुचत देखि मनोज॥ वयर सनेह सयानपहि तुलसी जो नहि जान। ते कि प्रेमपग मग धरत पशु विन पूछ वखान॥ रामदास यह जायके जो नर कथहि सयान। तुलसी अपने खाँड़में खाक मिलावत ज्ञान॥ त्रिविध एक विधि प्रभु अगण प्रजहिं सँवारहि राउ। कातै होत कृपाणको कठिन घोर घन घाउ॥ काल विलोकत ईशलख भानु काल अनुहार। रवि हि राहु राजहिं प्रजा, बुध व्यवहरहि विचार॥ यथा अमल पावन पवन पाप सुसङ्ग कुसङ्ग। कहिय सुवास कुवास तिमि काल महीश प्रसङ्ग॥ भलेउ चलत पथ शोच भय नृप नियोग नय नेम। कुतिय सुभूषण भूषियत लोह निवारित हेम॥ सुधा कुनाज सुनाज फल आम असनसम जान। सुप्रभु प्रजाहित लेहि कर सामादिक अनुमान॥ पाके पकए विटप दल उत्तम मध्यम नीच। फल नर लहहि नरेश तिमि करि विचार मन बीच॥ धरणि धेनु चरि धरम तन प्रजा सुवत्स पन्हाय। हाथ कछू नहि लागि है किये गोठकी गाय॥ टङ्क टङ्क ह्वै परत गिरि शाखा सहस खजूरि। गरहि कुनृप करि करि कुनय सो कुचाल श्रुति भूरि॥ भूमि रुचिर रावणसभा अङ्गदपद महिपाल। धर्म राम नय सोमबल अचल होत निहुँ-काल॥ प्रीति रामपद नीतिरत धर्म्म प्रतीय स्वभाव। प्रभुहि न प्रभुता परिहरै कबहुँ वचन मन काय॥ करके कर मनके मनहि वचन वचन जिय जानि। भूपति भलहि न परिहरहि विनय विभूति सयानि॥ गाज़ी वाण सुमत्त सुर समुझि उलटि गति देखु। उत्तम मध्यम नीच

· · नों नाना समाठ शरीर ॥ कौरव पाण्डव जानिबो क्रोध
— · मोर । जिनहि मारि नश सक सयो निपाते भीम ॥
· · · · ते मरि मारग देउ न नाउ । जग जिति हारे
· · · · हारि जितो रघुराउ ॥ क्रोध न रसना खोलिये बरु
· · · · · · । सुनत मधुर परिणाम हित बोलब वचन
· · · · तुलसी मीठो समयते माँगो मिलेउ मीच । सुधा
· · · · · · बिन कालकूटते नीच ॥ पाइौ खेतौ लगन
· · · · कुव्याज मग खेतु । बैर आपते बड़नते कियो पाँच
· · · ॥ शीश खीझ गुरु देत शिख शिषहि सुसाहब साध ।
· · · · फल होय भल तरु काटे अपराध ॥ चढ़ो बबूरहि
· · · · जाननै शोक समाज । करम धरम सुख सम्पदा
· · · · कुराज ॥ पेट न फूटत बिन कहे कहे न लागत
· · । · · वचन विचारयुत समुझि सफेर कुफेर ॥ प्रीति
· · · सकल विधि बनिज उपाय अनेक । कल बल छल कलि-
· · मलिन डहकत एकहि एक ॥ दम्भसहित कलि धर्म सब
· · · · व्यवहार । स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत
· · · ॥ धातु बचौ निरुपाधिवर सदगुरु लाभ सुभीत ।
· · · · कलिकालमहँ पोथिन सुनव सुनीत ॥ कायर कूर
· · · · कलि · · · · · उघार ॥ ज्यों जगदीशतो अति
· · · ज्यों महीशनो भार । जन्म जन्म तुलसी चहत राम-
चरण अनुराग ॥ का भाषाका संसकृत विभव चाहिये साँच
· · · · · कामरी का लै करिय कमाच ॥ वरण विशद
· · · · अर्थ सूत सम तूल । सतसैया जग वरविशद गुण
· · · · · ॥ वर माला बाला समति उर धारै यत नेह ।
· · शोभा सरसाय नित लहै रामपतिगेह ॥ भूप कइहिं
· · · · कहँ गुणी कहहि लघु भूप । महि गिरि गत दोउ

राज यमराज यम कहत सकोच न सोच॥ तुलसी देवल रामके लागे लाख करोर। काक अभागे हगि भरे महिमा भय-उ न थोर॥ भलो कइहि जाने विना कि अयवा अपवाद। तुलसी गाँड़र जानि जिय काहु न हरष विषाद॥ तन धन महिमा धर्म जेहि जाकहँ सह अभिमान। तुलसी जियत विडम्बना परिणामहु गति जान॥ वड़ो विबुध दरवारते भूमि भूप दरवार। जापक पूजक देखियत सहत निरादर भार॥ खग मृग मीन पुनीत किय वनहु राम नेपाल। कुनइ बाल रावण घरहि सुखद वन्धु किय काल॥ रामलषण विजयी भये सुनहु गरीवनिवाज। सुखर वालि रावण गये घरही सहित समाज॥ द्वारे टाट न दै सकहि तुलसी जे नर नीच। निदरहि वलि हरिचन्द्रकहँ किहका करन दधीच॥ तुलसी निज कीरति चहहि परकीरतिकहँ खोय। तिनके मुंह मसि लागि है मिटहि न मरिहैं धोय॥ नीच चङ्गसम जानिवो सुनि लखि तुलसीदास। ढील देत महि गिरि परत खैंचत चढ़त अकास॥ सहवासी कांचो भषे पुरजन पाक प्रवीन। कालक्षेप किहि विधि करै तुलसी खग मृग मीन॥ वड़े पाप वाढ़े किये छोटे करतल जात। तुलसी तापर सुख चहत विधिपर वहुत रिसात॥ सुमति निवारहि परिहरहि दल सुमनहु संग्राम। सकल गये तनविन भये साखी यादव काम॥ कलइ न जानवि छोट करि कठिन परम परिणाम। लगत अनल अ त नीच घर जरत धनिक धनधाम॥ जूभे तें भल बूझिवो भलो जीतते हारि। जहां जाइ जइ हाइवो भलो जा करिय विचारि॥ तुलसी तीन प्रकारते हित अनहित पहिचान। वरवस परे परासवश परे मामला जान॥ दुरजन वदन कमान

लखत जिमि तुलसी खरवस रूप॥ दोहा चारु विचारु चलु परिहरि वाद विवाद। सुकृत सीम स्वारथ अवधि परमारथ मरयाद॥

इति सप्तमः सर्गः॥

इति॥
